

# गुब्बार-ए-कैफ़ी

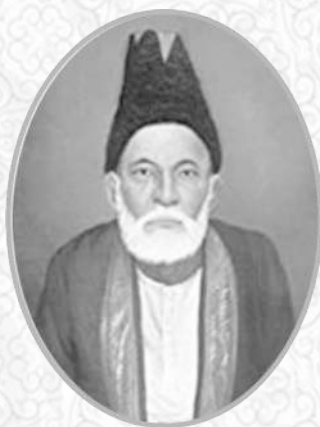
यह किताब कवि को भावनात्मक रूप से शान्ति प्रदान करती है  
शायद इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद आप को भी ऐसा ही अनुभव हो ।



9 788196 456412

एम० टी० कैफ़ी

अब के बरस सैलाब में घर हमारा नहीं टूटा,  
वो टूट चुका था पहले ही, सो दोबारा नहीं टूटा  
पुकारते-पुकारते मेरी दुआयों ने दम तोड़ दिया  
आसमां से, मेरे नाम का मगर सितारा नहीं टूटा



मिर्जा गालिब

इस साल बाढ़ में सिर्फ हमारा गाँव ही क्यों डूब गया  
पता करो पड़ोसी गाँव से वह क्यों-कर डूबने से बच गया  
पता चला मुद्दतों से माँगी उनकी दुआयें कुबूल हो गयीं  
इसलिए हवाएं, बादलों को उस रुख पर लेकर नहीं गयीं  
एम टी कैफी



जब विपक्ष में रहते तो सरकार के हर काम का, बाल की खाल निकाला करते हैं  
फिर जब खुद सत्ता में आते हैं तो, सिर के बाल ही मुंडवा लिया करते हैं  
अब विपक्ष चाहे कितनी भी कोशिश कर लें हमारे बाल खींचने की  
अब तो हम गंजे हैं, और रोज सिर पर तेल भी लगा लिया करते हैं

कवि के बारे में जानिए



मुहम्मद टी. कैफी

पिता का नाम  
स्वर्गीय सैय्यद मुहम्मद ज़हीर आलम

शैक्षिक योग्यता  
अभी भी सीखने की ललक में

जन्म तिथि  
19 नवंबर, ईश्वर की कृपा से आधी सदी से अधिक समय तक जीवित रहने वाले के  
लिए वर्ष महत्वहीन है।

ज्ञात भाषाएँ  
हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी और अरबी

निवास स्थान  
नई दिल्ली (भारत)

ई-मेल  
kaifi4u2002@yahoo.co.in  
www.kaifi.in

परोपकारी, उद्यमी, सामाजिक कार्यकर्ता, कवि और स्तंभकार

- ❖ किताब का नाम - गुबार-ए-कैफी
- ❖ सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को इसके संकलक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, जिसमें फोटोकॉपी या कोई सूचना भंडारण भी शामिल हैं, का पुनरुत्पादन नहीं किया जा सकता है।
- ❖ इस मामले में उत्पन्न होने वाला कोई भी विवाद केवल दिल्ली न्यायालय के क्षेत्राधिकार में होगा।
- ❖ कृपया अपनी टिप्पणियों को ई-मेल या डाक द्वारा इसके प्रकाशक तक पहुंचाकर इस कार्य का हिस्सा बनें।

अल्पसंख्यक विकास और संरक्षण फाउंडेशन

ई-33, पहली मंजिल, गली नं. 06, अबुल फज़ल एन्क्लेव-२  
शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 (भारत)

ई-मेल [mdpf2007@gmail.com](mailto:mdpf2007@gmail.com) / URL- [minoritydpf.org](http://minoritydpf.org)

- ❖ पेज - 220
- ❖ साल - 2023
- ❖ भाषा - हिंदी और उर्दू



नोट- इस संकलन का प्रकाशन, जिसकी लागत रु 1000/- है, लेकिन किसी भी राशि का एक हदिया (दान) स्वागत योग्य होगा, क्योंकि यह “अल्पसंख्यक विकास और संरक्षण फाउंडेशन (एमडीपीएफ)” के मौद्रिक संसाधनों में योगदान देगा। अल्पसंख्यकों के कमज़ोर वर्गों को विभिन्न तरीकों से मदद करना, खासकर फाउंडेशन के तत्वाधान में चल रहे शैक्षणिक संस्थानों के बुनियादी ढांचे को उसके बच्चों के लिए और अधिक प्रभावी बनाने में मदद करेगा।

**मुद्रक**

Wonders India Enterprises

2074, 2nd Floor, Nahar Khan Street

Kucha Chellan, Darya Ganj, New Delhi-110002

Mobile : 9811200621

## भूमिका

श्री एम० टी० कैफ़ी साहब के काव्य-संकलन से गुज़रते हुए, मैंने अनुभव किया है कि उनकी दृष्टि में इन्सानियत ही प्रत्येक नागरिक के जीवन का मूल्य, उसका लक्ष्य और धर्म होना चाहिए और बिना किसी भेदभाव के इंसान की सेवा करना ही उसका फर्ज़ होना चाहिए।

इस महान देश की सरज़मीं वास्तव में कितनी खुशनसीब और क़ाबिलेतारीफ़ है। यह वह सरज़मीं है जहाँ हमेशा इंसानियत की गज़लें गायी जाती रही हैं। महान व्यक्ति ही देश, मज़हब, जाति एवं भाषा की तंग सरहदों को तोड़कर सारे ज़माने के बन जाते हैं और अपनी रूहानी रोशनी से एक नया रास्ता पूरे संसार को दिखाते हैं।

श्री एम० टी० कैफ़ी साहब अपने इस काव्य संकलन "गुबार-ए-कैफ़ी" में संकलित कविताओं के माध्यम से प्रत्येक नागरिक के समस्त तंगदुखाली, धर्म या मज़हब, गाँव, जिला, प्रदेश एवं राष्ट्र की संकीर्ण सीमाबद्ध राहों से निकलकर उन्हें उस शिखर पर प्रतिष्ठित होते देखना चाहते हैं, जहाँ केवल इंसान और इंसानियत के दर्शन होते हैं। इस पवित्र शिखर पर धर्म, जाति सब गौण और मूल्यहीन हो जाते हैं।

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विडंबनाओं एवं सामाजिक बुराइयों पर भी क्रान्तिकारी कवि कबीर की भाँति सभी जाति एवं धर्मों के लोगों को समान रूप से फटकारते-समझाते हुए एक सच्चे अभिभावक की भाँति मार्ग-दर्शन करते प्रतीत होते हैं। अपनी जाति और धर्म से ऊपर उठकर अग्रसर होने को प्रेरित ही नहीं करते, बल्कि देश की "आन-बान और शान" की प्रतिष्ठा हेतु अपने प्राणों को न्योछावर कर देने की पवित्र सलाह भी देते हैं।

कवि का रोमांटिक अंदाज़ भी अनोखा है। कैफ़ी का प्रेम आत्मरति में रूपान्तरित हो जाने वाला प्रेम नहीं है। वह व्यापक जीवन-दृष्टि है जो देश-काल से बाहर जाकर मानवीय संवेदना को निरंतर संरक्षित और संवर्द्धित करने की शक्ति अर्जित कर लेती है।

इस काव्य संकलन में संकलित शीर्षक कविता "साँस थमने को है" की निम्न पंक्तियाँ उदाहरणार्थ द्रष्टव्य हैं-

“पास बैठो ज़रा, अब साँस थमने को है  
साँस थम जाए, फिर तुम किनारा करना”  
“मुँतज़िर रहूँगा मैं, तुम्हारे ख़ैरमकदम के लिए  
मेरे इंतेज़ार को तुम ज़्यादा तवील मत करना”

नाम और जाति से विजातीय होते हुए भी भारत के बिहार में जन्में श्री एम० टी० कैफ़ी का अन्तःकरण भारतीय संस्कृति के प्रेम से परिपूर्ण है न केवल भारत बल्कि समस्त संसार को एक आँख से देखने वाले श्री एम० टी० कैफ़ी का मन उज्ज्वल और भाव सरल है।

एक कवि के रूप में श्री एम० टी० कैफ़ी का कार्य बहुत कुछ मधुमक्खियों के कार्य से मिलता-जुलता भी नज़र आता है। मधुमक्खियाँ कोसों चक्कर काटकर मकरंद संग्रह के लिए बाग़ के भिन्न-भिन्न फूलों पर बैठकर उनका रस लेती हैं और अपने "मधुर-मधु" से दुनिया को मधुरता प्रदान करती हैं। ठीक उसी तरह श्री एम० टी० कैफ़ी न सिर्फ़ इस्लामिक धर्मग्रन्थों वरन हिन्दू धर्मग्रन्थों का भी खूब अध्ययन, चिन्तन एवं मनन किया। साथ ही अपने समय के समाज का सूक्ष्म अवलोकन किया, स्वतन्त्र भारत के शासनकाल के महत्वपूर्ण अंशों को अपनी आँखों से देखा-परखा एवं श्रुत अनुभवों को भी प्राप्त किया। तब जाकर कहीं हिन्दी कविताओं के माध्यम से अपने जीवनानुभवों को प्रत्यक्ष किया, अपनी वेदनाओं के गीतों को गाया।

वह विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। सदाशयता, सहृदयता और सहिष्णुता उनकी पहचान है। तभी तो वे भारत की सामासिक संस्कृति के प्रबल समर्थक के रूप में यथार्थ की मजबूत नींव पर अपने काव्य की इमारत खड़ी की है, इसीलिए तो मानव-मात्र के जीवन को मानवीय दृष्टि से सुन्दर, सार्थक और मनोहर बनाने के उद्देश्य से "जीवन-मर्म" की गंभीर बातें भी अत्यन्त सहज सरस और सरल भाषा में कही हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि इनका काव्य (यह पुस्तक) व्यापक जनहित से जुड़ेगा, क्योंकि इसमें व्यापक जनहित के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को हटाने-मिटाने का अपार साहस और दमखम है। यह निस्संदेह एक पठनीय काव्य-संकलन है।

हिन्दी भाषा में काव्य-संकलन "गुबार-ए-कैफ़ी" निकालने के लिए मैं श्री एम० टी० कैफ़ी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ और लोक में उनकी रचना की लोक-प्रियता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। आगे भी हिन्दी साहित्य की प्रेरणादायी कृतियों के प्रकाशित होने की अपेक्षा के साथ मेरी एक आकांक्षा भी -

“कि आपने कर दिया इस बज़्म को इतना रौशन  
कि आप सलामत रहें महफिल में चिराग़ों की तरह”

प्रो० अरविन्द कुमार, हिन्दी विभाग

निरसू नारायण कालेज

(बी० आर० ए० बी० यू०, मुज़फ़्फ़रपुर)

सिंघाडा, महुआ, जिला-वैशाली (बिहार)

मोबाइल न. 9546241187

क्रम संख्या	शीर्षक	पेज संख्या
01	रहते थे दो मिज़ाज	11
02	बनाई दुनिया जिस ईश्वर ने	12
03	राम और रहमान कहाँ खो गए	13
04	मस्जिद बनती है, मंदिर बनता है!	14
05	कलम में भी ताक़त हुआ करती थी	15
06	आज का मज नूँ	16
07	बलात्कारी घूमे सरेआम....	17
08	बोल नहीं पाता हूँ	18
09	तरबूजे और नारंगी में जंग	19
10	मेरा जुर्म बस इतना	20
11	उलझा दिया मुल्क के कौमी तराने में	21
12	तीन आने और एक जाने का सिलसिला	22
13	नये भारत की कल्पना	23
14	लगता है चुनाव आ गया	24
15	रहने भी दीजिये	25
16	सज धज कर तैयार बैठी हूँ	26
17	हुस्न और मुहब्बत	27
18	तुम बस सब्र कर लेना	28
19	परेशानी से क्यों डर जाते हो?	29
20	कर्ज क्या चीज है	30
21	मजबूरी से बड़ा दुश्मन नहीं दुनिया में	31
22	इज़्ज़त को दौलत से ना तौला करो	32
23	सोच से परेशान है इंसान	33
24	हम शराब की तौहीन समझते हैं	34
25	जीने की ख्वाहिश और पीने का शौक!	35

क्रम संख्या	शीर्षक	पेज संख्या
26	ज़रा सोच कर बताएँ	36
27	मेरे जज़्बात तुम्हारे ख्यालात	37
28	मिट्टी का मक़ाँ ही बेहतर है	38
29	बेईमान से बा-ईमान हो गया	39
30	अकेले ही लड़ना है!	40
31	मौत से डर जाता है दिल	41
32	बका-ए-ज़िन्दगी	42
33	20-40 और अस्पताल	43
34	इज़्ज़त आज नीलाम हो गई	44
35	महफिल में दिल अपना खोलते नहीं	45
36	वक्त का एहताराम किया	46
37	पहले दिमाग को समझाता हूँ	47
38	अजीब हो गया	48
39	प्रकृति के नियम	49
40	किरदार का सौदा	50
41	मर ही गया होगा डाकिया	51
42	सोई हुई है माँ	52
43	तड़पाती है रात भर	53
44	वक्त बदलने में और वक्त लगेगा	54
45	आने वाली प्रलय का ट्रेलर देखें	55
46	गुनाहों का हिसाब देने में लगा हूँ	56
47	हौसला संभाल कर रखिये	57
48	कश्तियां अब सेहरा में बहने लगी हैं	58
49	सच्चा मकान	59
50	उम्मीद का दामन न छोड़ना	60

क्रम संख्या	शीर्षक	पेज संख्या
51	तुमको ही खुश किया	61
52	न्यूज़ चैनल क्या दिखा रहें हैं	62
53	घर से अकेले न निकला करो	63
54	दो तरह की तवायफ	64
55	थक जाँएँ तो भी उम्मीद मत छोड़िए	65
56	नानी का घर	66
57	मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ	67
58	तलाश है एक कट्टर हिंदू और मुसलमान की	68
59	तेरी चाल अलग, तेरी ढाल अलग	69
60	मैं पैसा हूँ!	70
61	मैं पैसा हूँ!	71
62	हर हाल में शुक्र अदा करना	72
63	नेवला और साँप की राजनीति	73
64	वक्त से सवाल	74
65	चल सकोगे मेरे साथ?	75
66	न कमाल का, न हुस्नों जमाल का	76
67	अब्बा को भुलाऊँ कैसे?	77
68	धन्धे के उसूल	78
69	फूल और काँटे	79
70	कर्मों का फल	80
71	माँ। बता दे मुझे	81
72	मेरा भविष्य क्या होगा?	82
73	बेचा ईमान तब शानो शौकत आई	83
74	डर है कहीं बिक न जाए	84
75	साँस थमने को है	85

क्रम संख्या	शीर्षक	पेज संख्या
76	बेटी तू	86
77	चंद्रमुखी बनाम सूरजमुखी	87
78	आज और कल	88
79	सालगिरह की सच्चाई	89
80	कह दो चिलमन से...	90
81	आयशा तुमने अच्छा नहीं किया	91
82	आज की राजनीति	92
83	ग़म का साथी न तलाशें	93
84	इंसानियत हैसियत से नहीं चलती	94
85	ताजपोशी	95
86	क्यों मनाते हैं अंग्रेज़ी नया साल?	96
87	शाबाश गूगल	97
88	पुराना रिश्ता निभाना अब मुमकिन नहीं रहा	98
89	बचपन से बुढ़ापे का सफ़र	99
90	सफ़ेदपोश की कहानी	100
91	कागज़ को खुदा क्यों समझते हैं	101
92	बर्ख़ुरदार अच्छा है	102
93	सुनों! औरत की फज़ीलत	103
94	मेरी खुदारी	104
95	किसने जुबाँ सी डाली	105
96	धीरे चल ऐ खुशी	106
97	निगाहों ने हुस्न व जमाल देखा है	107
95	हालत—ए—सकरात	108
99	संघर्ष	109
100	आख़िरी वक़्त	110



## समर्पित



उनके लिए जिनके बिना, आज भी  
सूनी-सूनी आँखें हैं, लम्हा-लम्हा हैं सदियां

रहते थे दो मिजाज बरसों से साथ में  
एक बिछड़ गया, दूसरा जी रहा है यास<sup>1</sup> में  
मिजाज मुख्तलिफ़ था, पर मंज़िल तो एक थी  
न जाने किसकी नज़र मंज़िल पर लग गई

कैसे करूँ यकीन कि बिछड़ गए हैं आप  
है रहनुमाई आपकी हर पल ही मेरे साथ  
डाली थी आपने ही बुनियाद, इस मकान की  
मेरी बदनसीबी है, रुख़सत हुए अचानक जो आप

नज़रों से ओझल होकर, दिल में समां गये हैं  
ख़्वाहिश है, हम सबकी जो पूरी कर दें आप  
ख़्वाबों में मिलने आएँ फुर्सत हो, जब कभी भी  
कुछ लोग दूर रह के भी रहते हमेशा साथ

रहता है उनका आखिरी मस्कन<sup>2</sup> हमेशा याद  
सबकी दुआयें मग़फिरत हैं साथ आपके  
कैफ़ी को है उम्मीद कवी<sup>3</sup> होंगे आप शाद<sup>4</sup>  
होगा मकाम आप का बहिश्ते-बरी<sup>5</sup> में ख़ास ॥

अर्थ-

- 1- उम्मीद, 2- घर, 3-पुख़्ता  
4-ख़ुश 5- स्वर्ग में सबसे ऊँचा स्थान



## बनाई दुनिया जिस ईश्वर ने

बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है  
चाहे तू कितना छल कर ले मानव, निर्णय उसी का चला रहा है  
बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है

जिसने भेजा है इस जहाँ में, तय कर दिया था वापस भी जाना  
बुलाए जब हमको भेजने वाला, फिर तू क्यों आँसू बहा रहा है  
बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है

जिस मिट्टी से बन आये यहाँ हम, मिट्टी वही अब बुला रही है  
सच तो यही है इस जहाँ का, फिर क्यों मानव झुठला रहा है  
बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है

वहां जो बैठा पालनहारा, काबू में जिसके सारा जहाँ है  
फिर क्यों तू ऐ मानव, अपनी गलती दोहरा रहा है  
बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है

ईश्वर के बनाए नियम और कायदे, कहाँ है हिम्मत कोई बदल दे  
हमारी करनी को वो ही तौले, सुख-दुःख का निर्णय वही ले रहा है  
बनाई दुनिया, जिस ईश्वर ने, वही ये दुनिया चला रहा है ॥



<https://youtu.be/ivvJzcXUmMA>



## राम और रहमान कहाँ खो गए

रहते थे साथ-साथ जो, अब खो गए कहाँ  
बटता जहाँ था प्यार, है वह जगह अब कहाँ

बनवास से जब राम अयोध्या में आ गए  
दीदार को हम भी राम की नगरी में आ गए

जाकर वहाँ पर सबको किया हमने जब सलाम  
कहने लगे सभी कि क्या बोले? 'जय श्री राम'

बनवास से अब आ गए वापस हमारे राम  
अब बोलें, जय श्री राम जो करते रहे "सलाम"

आवाज एक आई कि न सिर्फ श्री राम  
कुछ कहते तुम्हें राम, कुछ कहते रहमान

कैसे मैं समझाऊँ तुझे ओ बड़े अनजान  
मंदिर में वही राम हैं, जो मस्जिद में रहमान

और कितने उदाहरण दूँ तुमको श्रीमान  
अब बातें कभी ऐसी न करना ओ नादान

एक बात सुनो कैफ़ी तुम मत हो परेशान  
है सबसे बड़ा वही जो है एक भला इंसान ॥



## मस्जिद बनती है, मंदिर बनता है !

कहीं मस्जिद बनती है, कहीं मंदिर बनता है  
मंदिर-मस्जिद के बाहर ठंड से इंसान ठिठुरता है  
मंदिर में प्रसाद और मज़ार पर तबरुक चढ़ता है  
वहीं बाहर इंसान भूख से दम तोड़ते दिखता है

धातु के ऊँचे-ऊँचे बुत बनते हैं, पर पुल कम ही बनते दिखता है  
दिखती हैं नावें डूबती हुई, क्योंकि गरीब इन पर सफर करता है  
बहन-बेटी की कलाई भले ही रह जाएँ ख़ाली  
पर भगवान पर कीमती ज़ेवर जरूर चढ़ता है

कोई धार्मिक ग्रंथ हमें नफरत नहीं सिखाता है  
फिर आपस में हमें क्यों और कौन लड़ाता है  
तुम मुस्लिम हो या फिर हिंदू, इस लड़ाई में  
कैफ़ी अब देख, सिर दोनों के कटते दिखता है



## कलम में भी ताक़त हुआ करती थी

सुना था कलम में भी ताक़त हुआ करती थी और इंसाफ पर सियासत नहीं हुआ करती थी इसलिए तो फैसले के बाद निब तोड़ दी जाती थी क्योंकि फैसले पर जमाने की रज़ामंदी हुआ करती थी

अब तो, इंसान मर भी रहा हो तो, अदलिया<sup>1</sup> का क्या हैवान खुलेआम घूम भी रहा हो, तो अदलिया का क्या इंसाफ के तराजू में तौलने को झूठे सबूत चाहिए साथ में काले कोट का बड़े से बड़ा झूठ चाहिए

फिर बरसों तारीख़ पर तारीख़ आपको मिटाती जाएगी सुनहरी उम्र जेल की कोठरी में सड़ाई जाएगी फिर एक दिन आपको ये बात बताई जाएगी सुबूत के अभाव में बाइज़्ज़त बरी की ख़बर सुनाई जाएगी

घर वापसी पर आप यकीनन बिखर चुके होंगे बीवी और बच्चों से लिपट कर जब रो चुके होंगे यह भी पता चलेगा कि माँ-बाप नहीं रहे देते दिलासा कैफ़ी को जो, वे भी चले गए।।

अर्थ-1- न्यायतंत्र



## आज का मजनू

मैं उनके प्यारको, सदियों से जानता हूँ  
उस प्यार की कीमत, अच्छे से पहचानता हूँ  
हम दोनों को मालूम है, अपने प्यार की हकीकत  
इस दौर का हूँ मजनूँ अपनी लैला को जानता हूँ

छुपाए अपने आँसू ज़ब्त छुपाने को  
उनसे मिले जहर को भी अमृत मैं मानता हूँ  
पढ़ा-लिखा न मैं हूँ, वो भी हैं मेरे जैसी  
फिर भी वो मेरे, मैं उनके एहसास जानता हूँ

एक दिन भटक गए हम दोनों कहीं वीरानियों में  
खुशबू की महक से फिर उनके साथ हो गया हूँ  
देखा जो मुजस्समा<sup>1</sup> लंदन के म्यूजियम में  
उस दिन से और ज़्यादा, परेशान हो गया हूँ

अल्लाह ने शायद कैफ़ी, मेरे प्यार को बुला लिया है  
इसलिए तो अब और ज़्यादा बेकरार हो गया हूँ

1-पुतला / मूर्ति



## बलात्कारी घूमे सरेआम....

बलात्कारी घूमे सरेआम और पीड़ित चक्कर काटे थाने का राम-कृष्ण को भी शर्मिंदा करता चलन कलयुगी ज़माने का तिहाड़ जेल आश्रय स्थल बना है, अब ढोंगी बाबाओं का पार्लियामेंट में भी दबदबा है, ऐसे ढोंगी-योगी नेताओं का

देश को ख़तरा, देश को ख़तरा, कब तक तुम चिल्लाओगे इस नारे में छुपा है मंत्र, देश में आग लगाने का सरहद पर जाकर देखो ज़ब्बा देश के रक्षक मतवालों का हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई पर ही टिका है भार सुरक्षा का

आग लगे गर देश में, या बढ़ जाये बेरोजगारी और महंगाई मरते हम सभी भाई - हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई अब भी अगर आखें न खुलीं, तो होंगे हम सब बर्बाद इस बर्बादी का आनेवाली नस्लों को, क्या देंगे जवाब

चुनाव से पहले हम सब सोचें अब की सौ-सौ बार किसको चुनें हम अपना नेता, चुनाव में अब की बार भ्रष्ट, अशिक्षित, बलात्कारी नेता को हम सब दें दुत्कार संसद के पवित्र मंदिर से कर दें बाहर, सब बदकार

फिर पाँच साल तक विपक्षी दल भी दोष मढ़ें हम जनता पर और हाकिम नेता करें हुकूमत प्रेम से अपनी भोली जनता पर।।



## बोल नहीं पाता हूँ

जुबान तो है, मगर बोल नहीं पाता हूँ  
आँखें भी हैं, मगर खोल नहीं पाता हूँ

सामने अगर दिखें दो टुकड़े मफ़ाद<sup>1</sup> के  
तो अपने समाज में भी ज़हर घोल देता हूँ

कौन कहता है कि ये हुनर सिर्फ़ उन ही में है  
मैं भी सूरज को कभी-कभार नमन कर देता हूँ

खून तो हम दोनों का ही है लाल  
जिस्मों पर दोनों के है एक-सी खाल

मरकर तुम तो जाओगे श्मशान में  
मर कर हम जाएँगे कब्रिस्तान में

चाँद-सूरज, ज़मीन और आसमान भी तो हम सबका है कैफ़ी  
फिर आपस में लड़कर मुल्क की मिट्टी को क्यों लाल कर देता हूँ

उम्मीद है कैफ़ी को अपने मालिक की रहमतों से  
हो जाएगी एक दिन मुल्क की मिट्टी पाक नफ़रतों से ॥

अर्थ- 1- फायदा



## तरबूजे और नारंगी में जंग

लगा कर आग घरों को, वो मदहोश हो गया  
कुछ देर में ही पूरा मुहल्ला खानाबदोश हो गया  
जब आया होश उसको तो फिर बेहोश हो गया  
क्योंकि उसमें उसका घर भी ज़द में आ गया

मुहल्ले वालों ने जब पूछा उस वहशी से, ये कैसे हो गया?  
उसने बताया, नारंगी ने कहा था तरबूजे का घर जलाने को  
मैंने भी हामी भर ली थी, तरबूजे को आज सबक सिखाने की  
पर पता नहीं रात में, ये घर कैसे तरबूजे से नारंगी हो गया

आज तो राजनीति का रंग भी कई रंगों में बट गया  
किसी ने अपनाया नारंगी, किसी ने हरा रंग चुन लिया  
ज़रा पता करें, कैफी के मुल्क को किसकी लगी नज़र  
ढूँढे कोई पंडित या मौलवी को, जो उतारे बुरी नज़र।।



[https://youtu.be/MliSKyD\\_mkE](https://youtu.be/MliSKyD_mkE)



## मेरा जुर्म बस इतना....

कभी उनको कहूँ अपना, कभी तुमको कहूँ अपना  
कभी दिन को समझा अपना, कभी रात को अपना  
कभी अकेले में रोना, कभी महफिल में हँसना  
मेरा जुर्म बस इतना, कि देखा क्यों ऐसा सपना

जिंदगी भी अपनी और जीना यहाँ पर अपना  
निगाहे भी हैं अपनी और निशाना भी अपना  
हकीकत से दूर रहकर सुनना फसाना अपना  
मेरा जुर्म बस इतना, कि देखा क्यों ऐसा सपना

ये दुनिया है सबके लिए, सिर्फ एक मुसाफिर खाना  
कभी देखा है तुमने बर्फ को कहीं पर रुक जाना  
चाहिए हमें भी तो था, अब तक संभल ही जाना  
मेरा जुर्म बस इतना, कि दुनिया को न पहचाना

शर्म—ओ—हया का किस्सा अब हो गया पुराना  
बेहयाई से ही रोशन होता है अब ज़माना  
कैफी न फिक्र उनको कि एक दिन है फना हो जाना  
और बातें तुम्हारी सबको अब लगती हैं अहमकाना

मेरा जुर्म बस इतना, कि देखा क्यों ऐसा सपना  
मेरा जुर्म बस इतना, कि मैंने दुनिया को न पहचाना



## उलझा दिया मुल्क के कौमी तराने में

हमें तो उलझा दिया मुल्क के कौमी तराने में  
और खुद लग गए मुल्क का ख़ज़ाना उड़ाने में

बस अब यही हो रहा है आजकल के ज़माने में  
वैसे अब बचा ही क्या है मुल्क के कारख़ाने में

पचहत्तर साल के भाईचारे की पक्की नींव को  
फक़त चंद साल लगे तुम्हें इसे हिलाने में

कौन लगाएगा ताक़त अब इस मुल्क को बचाने में  
तुम क्या जानो, हमें 75 बरस लगे थे इसे सजाने में

एक शोर एक मातम है, हम सबके ताजियाने<sup>1</sup> में  
वैसे तो था ही कुछ नहीं, मुफ़लिस<sup>2</sup> के काशाने<sup>3</sup> में

सिर्फ़ चैन की नींद और दो वक़्त की रोटी मिलती थी खाने में  
कैफ़ी कुछ कर, वर्ना कुछ न बच सकेगा इस आशियाने में ॥

अर्थ- 1-कोड़े, 2- गरीब, 3- घर



## तीन आने और एक जाने का सिलसिला

मैं मानता हूँ कि तारे नहीं चमकते, जब तक अंधेरा नहीं होता एक बन्दा जबतक नहीं मरता, तीन बन्दों का जन्म नहीं होता दिल की आग दिल में ही दबी रहे, तो बाहर कुछ नहीं होता नुकसान सिर्फ तुम्हारा ही होता है, उनका कुछ भी नहीं होता

माना कि अभी ठंड है, धुँध है और बादल भी लगा है पर उजाले की तलाश में हमेशा लगे रहना होगा धुँध-बादल का मौसम तो चंद्र दिनों का होता है यही सोचकर अपना रहे-अमल<sup>1</sup> तय करते रहना होगा

तुम कितनी भी मज़बूत दीवार बना लो अपने घर की कैफ़ी सिर्फ़ एक मिनट का ज़लज़ला, घर को मलवा बना कर रहेगा न हुआ अब तक कोई ललकारने वाला कुदरत के फैसलों को जो कोशिश करेगा इस दुनिया में, वह मिट कर ही रहेगा अर्थ-

1-जवाबी कार्यवाही



## नये भारत की कल्पना

सुना है चाँद को तुमने सूरज बना डाला  
चाँद की टंडक को भी तपिश<sup>1</sup> में बदल डाला  
ये दुनिया एक सूरज से ही परेशान थी  
तुमने दूसरा सूरज क्यों बना डाला

कहाँ जाएँगे अब बेचारे रात के चमकते तारें  
बताओ यह सब तुमने क्यों कर डाला  
पत्थर तराशों ने भगवान तो बना डाला  
और तुमने उनको ही भगवान से अलग कर डाला

ये कैसा मेरा देश महान तुम बना रहे हो  
जिसने हिंदू को हिंदू से अलग कर डाला  
हमारी एकता ही सदियों से हमारी मिसाल थी  
तुमने न जाने क्यों उसको कुचल डाला

अब ये जंग ईश्वर को चुनौती देने लगी है कैफ़ी  
शायद 'फिर' भगवान से भगवान को अलग कर डाला  
अर्थ-

1- गर्मी



## लगता है चुनाव आ गया

देश में मचा है कोरोना और बाढ़ से हाहाकार  
जनता में चारो ओर है अंधकार ही अंधकार  
हर पार्टी जनता को मूर्ख बनाने पर कर रही विचार  
लगता है चुनाव आ गया

पाँच साल बाद खादी कपड़ों का तेज़ हुआ व्यापार  
छोटभैये नेताओं के इस्त्री किये हुए कपड़े हो रहे तैयार  
साइकिल छोड़ अब स्कार्पियो पर नेताजी हैं सवार  
लगता है चुनाव आ गया

सत्ताधारी नेताओं में अब नहीं है वो अहंकार  
फिर भी वोटर्स कर रहे शिकायतों की बौछार  
सरकार की उपलब्धियों का पोस्टर भी हो रहा है बेकार  
लगता है चुनाव आ गया

अब देखिये जनता का नेताओं पर पलटवार  
कहीं फूलों का तो कहीं मिल रहा जूतों का हार  
दलित से महादलित के यहाँ नेताजी खा रहे हैं आहार  
लगता है चुनाव आ गया

हर पार्टी ऑफिस में लगी है टिकटार्थियों की लम्बी कतार  
जमा हो रहे हैं बायो-डाटा, कि हमने कितने किये हैं अत्याचार  
फिर देखिए पैसों का चमत्कार  
लगता है चुनाव आ गया

टिकट मिलते ही खिंचती हैं जाति-धर्म की दीवार  
पर्चा भरते ही सभी अपनी-अपनी जीत की भरते हैं हुंकार  
और जो जीते उनकी है फिर बहार ही बहार  
अब कैफ़ी फिर कीजिये अगले पांच साल का इंतजार ॥



## रहने भी दीजिये

कहने को कुछ बचा नहीं, रहने भी दीजिये  
दिल भूल चुका है जिसे, अब मत कुरेदिये

चेहरे पर आपके लगी दिखने, अब झुर्रियां  
मेरे बुढ़ापे का अब ज़रा इंतज़ार कीजिये  
हमने गुज़ारी ज़िन्दगी शीशे को देख कर  
कैसी कटी है आपकी, यह खुद से पूछिए

शिकवा शिकायत करने का भी मौका कम मिला  
किसकी थी कितनी गलती कोई सोच न सका  
फकत अम्मी को ही इसका इल्ज़ाम न दीजिये  
गलती थी हम दोनों ही की, बस मान लीजिये

सोचा था साथ मिलकर गुजारेंगे ज़िन्दगी  
माँ-बाप की लेंगे दुआएँ, संवारेंगे ज़िन्दगी  
किसकी लगी नज़र, या किसने दी बहुआ  
नज़दीक आते-आते कैफ़ी, क्यों हो गए जुदा ॥



## सज धज कर तैयार बैठी हूँ

सज धज कर दुल्हन की तरह, तैयार बैठी हूँ  
आकर मुझे सम्भालो, बाखुमार बैठी हूँ

बेहयाई से बचाने की, अब तुम्हीं आस हो  
इसलिए तो तुम्हारे इंतेजार में बैठी हूँ

इश्क-मुहब्बत तो नहीं तक़दीर में मेरी  
बन जाओ मेरी तक़दीर, फरियाद है मेरी

तुम्हारी तक़दीर बदल दे, शायद तक़दीर को मेरी  
इसीलिए तो तुमसे इसरार<sup>1</sup> कर रही हूँ

ये भी सच है, तुमसे नहीं मिला है धोखा कभी मुझे  
फिर भी दिल की बात कहने से कतराती रही हूँ मैं

यही बड़ी भूल थी जो हो गयी मुझसे  
अब कोशिशों से भूल वो, भुला रही हूँ मैं

कहते हैं दो दिलों का मेल ही होती है मुहब्बत  
पर दो दिलों के प्यार से घबरा रहीं हूँ मैं

बरसों पहले दिल तुमको दिया था कैफ़ी  
पर आज बिन तुम्हारे ही दिन काट रहीं हूँ मैं ॥

अर्थ- 1- विनती



## हुस्न और मुहब्बत

हुस्न और मुहब्बत दोनो में, हमेशा तकरार रहती है हुस्न ढल जाए फिर भी, मुहब्बत बरकरार रहती है जवानी भी क्या चीज़ है, आती है चली जाती है पर इंसान की ख्वाहिश हमेशा जवान ही रहती है

पीकर नशा तो उतर गया, मगर सुखर अभी बाकी है ज़हन में अभी भी गुज़रे दिनों के फितूर बाकी है वक़्त क्या ज़रूरत है तुम्हें, मेरे सुखर से उलझने की मेरे ज़ख़्मों पर काला नमक - मिर्च छिड़कने की

छोड़ दी है आदत मैंने, अब शराब पीने की ग़मों से आज़ाद हूँ, रात को फिक्र नहीं सोने की अब तो फिक्र रहती है सिर्फ उन्हीं को सुलाने की वर्ना फिर लत लग जाएगी शराब पीने की

अब आसान हो गया दोनों का दिन गुज़ारना कैफ़ी क्योंकि हुस्न और मुहब्बत की सूरत हो गई एक जैसी



## तुम बस सब्र कर लेना

गुब्बारे में हवा भरकर सैर करना, मुझे भी आता है  
मछली नहीं हूँ, फिर भी तैरना अच्छी तरह आता है

हैं दो पैर, फिर भी एक पैर पर ही चलना पड़ता है  
ये दस्तूरे दुनिया है, जो इंसान समझ नहीं पाता है  
समुंदर में नहाना सबके बस का कहाँ हो पाता है  
पर गाँव के कुएँ पर नहाना हम सभी को आता है

हो जाये तंगदस्ति, अगर जिंदगी के आखिरी पल में  
तो माज़ी का ख्याल करके दिल को तसल्ली दे देना  
तुम तो मेरे लिए वफा की मिसाल जानी जाती हो  
मगर कैफ़ी की जिंदगी पर कभी तरस मत खाना

मैं मर जाऊँ अगर तो, तुम बस सब्र ही कर लेना  
लोग पूछेंगे मेरे बारे में, किसी को कुछ मत बता देना  
वर्ना बेवफाई का मुजरिम, लोग तुम्हें ही ठहरा देंगे  
क्योंकि कमज़ोर को आसान है, मुजरिम ठहरा देना ॥



## परेशानी से क्यों डर जाते हो

पल भर की परेशानी से क्यों डर जाते हो  
इस शहर में आकर क्यों ठहर जाते हो

किरणों को कभी देखा है ठहरते हुए  
फिर रात के अंधेरे से क्यों डर जाते हो

सुबह हुई है तो शाम भी हो ही जाएगी  
परेशानी है तो, आसान भी हो ही जाएगी

रात के स्याह सायों से न घबराओ तुम  
सुबह की रोशनी इनको निगल ही जायेगी

उरूज<sup>1</sup> व ज़वाल<sup>2</sup> से ही चलती है जिन्दगानी  
हो उरूज व ज़वाल साकित<sup>3</sup> तो जिन्दगी भी साकित

ये सोच तुम क्यों नहीं रखते कैफ़ी  
रात के अंधेरे को 'सुबह' रोशन बनाएगी ॥

अर्थ-

उरूज-बुलंदी, जवाल-पतन, साकित -शांत-चुप



## कर्ज क्या चीज़ है

हराम की कमाई को क्या पता कर्ज क्या चीज़ है  
कर्ज लीजिए फिर ये देखिये जिन्दगी क्या चीज़ है

कर्ज हमने क्या लिया हो गए उनके गुलाम  
कर्ज देने वाले को हर वक़्त करते हैं सलाम

कर्ज चाहे बैंक का हो या लीजिये अपनों से आप  
बेज़मानत आज तो कुछ भी नहीं मिलता जनाब

कफन-दफन करने के लिए भी कर्ज पर लेते हैं लोग सूद  
पहले लीजिए कर्ज, फिर समझिये सूद क्या चीज़ है

कर्ज ने मुझको बताया, कैसे होता है इंसान हकीर<sup>1</sup>  
कर्ज अगर सूदखोरों से लिया, तो कैसे होता है ज़लील

ऐ खुदा! तू रहम कर, अब है मेरी यही दुआ  
कर्ज तो बस एक बला है, हम सबको इस से बचा

क्या बतायें तुमको कैफ़ी कैफ़ियत मकरूज़<sup>2</sup> की  
है बहुत मुश्किल समझना, हालत किसी मजबूर की  
कर्ज लीजिए फिर ये देखिये जिन्दगी क्या चीज़ है ?

अर्थ-

1 - मामूली, 2 - कर्जदार



## मजबूरी से बड़ा दुश्मन नहीं दुनिया में

कमज़ोर जिस्म में हर मर्ज़ अपना घर बनाना चाहता है  
तंगदस्ती में खासकर अपना भी साथ छुड़ाना चाहता है  
मजबूरी में बड़ा ही नहीं छोटा भी आँख दिखाना चाहता है  
और छोटा तो ताउम्र बड़ों पर अपना हक़ जमाना चाहता है

ग़रीबों की हर चीज़ पर ये अमीर लोग  
कम से कम कीमत लगाना चाहते हैं  
गरीब की हर चीज़ हो जाती है अल्पमूल्य  
अमीरों का कूड़ा भी बन जाता है बहुमूल्य

आज मक्कारी ही मक्कारी नज़र आती है हर तरफ  
इस माहौल में अगली नस्ल को कैसा बनाना चाहते हैं  
जहाँ खुला संरक्षण मिले भ्रष्ट और बलात्कारी सांसदों को  
कैसा समाज इस माहौल में हम बनाना चाहते हैं

कहने में लगे बरसों “सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा”  
उसे हम क्यों सारे जहाँ में बुरा बनाना चाहते हैं  
मजबूरी से बड़ा दुश्मन, कैफ़ी नहीं आजकल दुनिया में कोई  
मजबूरी में ही सब मजबूर से फायदा उठाना चाहते हैं ॥



## इज़्ज़त को दौलत से न तौला करो

इज़्ज़त को हरगिज़ दौलत से न तौला करो  
ज़िल्लत का तमाशा भी सरेराह मत किया करो  
इज़्ज़त का लिबास कभी दिख जाए मैला  
तो कसरत से इन्नालिल्लाह पढ़ा करो

इज़्ज़त की कोठरी में उजाला भले ही कम दिखे  
ज़िल्लत की चकाचौंध से बचकर हमेशा रहा करो  
दोनों में मर्ज़ी सिर्फ ऊपरवाले की ही चलती है  
तुम बेकार की गुलतफहमियाँ न पाला करो

माशाअल्लाह<sup>1</sup> सिर्फ अपनो के लिए नहीं है  
अल्हम्दुलिल्लाह<sup>2</sup> सबके लिए कहा करो  
इंशाअल्लाह<sup>3</sup> भी हम दोनों के लिए है  
अस्तगफिरुल्लाह<sup>4</sup> अपने लिए पढ़ा करो

तख़लीक-ए-काएनात<sup>5</sup> ने जो बताया है रास्ता 'कैफ़ी'  
मोमिन हो तुम, उस पर ही हमेशा अमल किया करो ॥

अर्थ-

- 1- बहुत खूब, 2- अल्लाह का शुक्र,
- 3- अगर अल्लाह ने चाहा,
- 4- अल्लाह से माफी 5- दुनिया को बनाने वाला



## सोच से परेशान है इंसान

अपनी - अपनी सोच से परेशान है हर इंसान  
ज़ालिम है दुनिया ज़िन्दगी जीना नहीं आसान  
ज़िन्दगी और मौत एक बार ही मिलती है  
आज मुझे तो कल तुम्हे भी आ ही जानी है

झूठ को सच बनाने का हुनर तुम्हें सिखाया किसने  
होशियार, ये एक बड़े तूफ़ान की निशानी है  
संभल जाओ खोखले इरादों के फरेब से तुम  
वर्ना सबकी जान मुश्किल में पड़ जानी है

इतना मगरूर होकर रहना अच्छा नहीं कैफ़ी  
खाकसार<sup>1</sup> हो कर रहने में क्या परेशानी है  
वो कल थे, तुम आज हो, कल नहीं रहोगे  
ये हम नहीं कहते, दुनिया की ये रीत पुरानी है

अर्थ-

1- तुच्छ, नाचीज़



## हम शराब की तौहीन समझते हैं

जिसकी वजह से छोड़ा मयखाना, उसे तुम शराब कहते हो  
चढ़ाकर उसका एक पैमाना, तुम लुढ़कते घर आते हो  
फिर बीवी को माँ और बाई को बीवी समझ लेते हो  
हम इसे मय-कशी नहीं, शराब की तौहीन समझते हैं

मय-कशी घर में ही करते थे, उन दिनों ऐ मेरे दोस्त  
अब तो फैशन है बाहर पीना, और नाले में गिर जाना  
सुबह दोस्तों को बताना, कि रात ज़्यादा चढ़ गयी थी  
हम इसे मय-कशी नहीं, शराब की तौहीन समझते हैं

पूछा जब शराब से फर्क, आज और कल के शराबी में  
वह बोली, शर्म आती है हुजूर सबके सामने बताने में  
मैंने भी सोचा क्या फायदा, बात को आगे बढ़ाने में  
फिर बोली, हालत देखें जमाने की, आकर मय-खाने में

कहानी सुनाएंगे शराबी, अपने - अपने फसाने की  
झूठ और दिखावे के गमों को शराब में डुबोने की  
कैफ़ी, हम इसे मय-कशी नहीं, शराब की तौहीन समझते हैं ॥



<https://youtu.be/L8nXeysuo7o>



## जीने की ख्वाहिश और पीने का शौक !

लुत्फे<sup>1</sup> दुनिया से हूँ मैं मामूर<sup>2</sup>  
जिसने डाल दिया मेरे गले में तौक<sup>3</sup>

जीने की है ख्वाहिश, पीने का भी है शौक  
दुनिया के जौक<sup>4</sup> में, जाने का भी नहीं है खौफ

तू ही बता ऐ साकी किस को चुनूँ मैं आज  
पीने के शौक को या जाने के खौफ को

आसाँ नहीं है चुनना, मयखाने की मेज पर  
होशो - हवास खोकर, बोतल की सेज पर

जीने की है ख्वाहिश, पर जी कर क्या करेंगे हम  
मर कर मिलेगी राहत, कट जायेंगे सारे गम

अब काम सारा होता है आन लाइन पर  
पीकर पड़े मिलेंगे हम भी कभी रेल लाइन पर

कैफी की फ़िक्र तो है, उस जहान की शराब<sup>5</sup> पर  
जिस शराब से रहेगा उसका दामन तर-बतर ॥

अर्थ -

1- आनंद 2- तर-बतर 3- लोहे का भारी  
घेरा



## ज़रा सोच कर बताएँ

जुर्म भी तुम ही करो और फैसला भी तुम ही सुनाओ  
फिर अदलिया की क्या जरूरत, ज़रा सोच कर बताओ

न तुम बोलो न हम बोलें, बस 'उसी' पर ही छोड़ दें  
तो मंदिर-मस्जिद क्या करें, ज़रा सोच कर बताओ

तुम सब्जियाँ खाना छोड़ दो, हम मांस खाना छोड़ दें  
फिर किसान बेचारा कहाँ जाए, ज़रा सोचकर बताओ

नंगापन औरतों में न तुम्हारे यहाँ है, न हमारे यहाँ  
तो पुराण और कुरान का क्या मतलब, ज़रा सोचकर बताओ

स्तम्भ चारों मिटते देखें, और हुकूमत ख़ामोश है  
तो आमजन क्या करें, ज़रा सोच कर बताओ

बहुत दिन हो चुके इनको जुल्मो-सितम करते-करते कैफ़ी  
क्या छोड़ दें इंसाफ, 'उसी' पर, ज़रा सोच कर बताओ।।



## मेरे जज़्बात और तुम्हारे ख़्यालात

मेरे जज़्बात तुम्हारे ख़्यालात से बहुत अलग हैं जैसे आँखों का पानी, पानी से बिल्कुल अलग है मैं जो देख रहा हूँ तुम्हारी आँखों से बहता दरिया ये होंठों के बयाँ जज़्बात से बिल्कुल अलग हैं

ये आँसू, जज़्बात कोई नई बात नहीं इस जहाँ में मगर तुम्हारा नज़रिया दूसरों से बिल्कुल अलग है तुम हो परवाना, जिसकी तकदीर में जलना ही लिखा है मेरी दीवानगी तुम्हारे दीवानेपन से बिल्कुल अलग है

काश ! समंदर भी नमकीन छोड़ मीठे हो जाते तुम्हारे ख़्यालात भी मेरे जज़्बात से मिल जाते शायद अल्लाह को भी तरस आ जाए हम पर कैफ़ी तुम जलने से बच जाते, मेरे ख़्यालात बदल जाते ॥



## मिट्टी का मकाँ ही बेहतर है

किसी का घर समंदर है, किसी का मकाँ शीशे का  
ख़तरे में रहते दोनो फिर भी मुस्कुराते हैं

इसकी वजह क्या है

एक तुम हो, जो आए और फिर जल्दी चले गए  
मिट्टी के मकान में रहकर भी रुलाते हो

इसकी वजह क्या है

दुनिया भी खुश होती है, मुस्कुराते हुए को देखकर  
नम होती नहीं 'उनकी' आँखे तुम्हारे गमों को देखकर  
अगर सामने हो तो सब याद कर लेंगे, वर्ना भुला देंगे  
तुम न हो, तो तुम्हारे ख़्वाबों को भी मिट्टी में मिला देंगे

हमने पूछा हँसी से तुम खुशी में ही क्यों आती हो  
जब गम मिले तो आकर ढाढ़ंस क्यों नहीं बँधाती हो  
जवाब दोनो का एक सा आया, ये हमसे क्यों पूछते हो?  
जिसने हम दोनों को बनाया उससे क्यों नहीं पूछते हो?

मँझधार को समंदर से, शीशे को पत्थर से डर लगता है  
उनके दिल में हमेशा घबराहट महसूस होती है  
फिर भी रोज़ का रहना उसी घर में है, क्या करें?  
सोचता है कैफ़ी, मिट्टी का मकाँ ही, अब बेहतर है ॥



## बेईमान से बा-ईमान हो गया

रगड़ते दुनिया<sup>1</sup> से वह अब बेज़ार हो गया  
बेईमान था जो कभी, वह बा-ईमान हो गया

चोला बदल-बदल कर वह परेशान हो गया  
अपनों के लिए भी वह अब अनजान हो गया

अच्छे जो पहले दिन थे, अब वह हो गए खराब  
लगता है फिर दुनिया में कोई फिरओन<sup>2</sup> आ गया

जीना हुआ हराम जो हम सबका आजकल  
आई सदा कहीं से शद्दाद<sup>3</sup> भी आ गया

खा-खा कर सबका माल, की ज़िन्दगी हराम  
हो जायेगा अब सब हलाल, वो वक़्त आ गया

माँगी दुआँ करम की मुश्किलों में जब  
हुई दुआँ कबूल तो सब कुछ आसान हो गया

पत्थर का हमने जब दिया फूल से जवाब  
हैवानियत वह छोड़ कर इंसान हो गया

अब उलझनें कैफ़ी की सब हो गईं तमाम  
जाने का उसका जब यहाँ से फरमान आ गया ॥

अर्थ-

- 1- दुनिया की चाहत
- 2- मिस्र का एक जालिम बादशाह
- 3- खुदाई का दावा करने वाला एक बादशाह



## अकेले ही लड़ना है !

खुश रहता हूँ मैं हमेशा जमाने के लिए  
वरना, दर्द बहुत है दिल में दिखाने के लिए

जमाने की रंगीनियों से रोशन है मेरा ज़ाहिर  
तुम क्या जानो, कितने अंधेरो से घिरा है बातिन<sup>1</sup>

कभी तो मेरे दिल में किसी ने झाँका होता  
कभी तो किसी ने मेरा ढाढस बंधाया होता

दुनिया मे चाहे तुम आये हो न अकेले  
पर जाना पड़ेगा यहाँ से तुमको भी अकेले

दुनिया मे जो भी बड़ा काम हुआ है  
अकेले ही किसी ने सरेअंजाम दिया है

अब तो तय करना है अकेले ही ज़िन्दगी का सफर तुमको  
चश्म नम न कर कैफ़ी, बहुत दूर जाना है अकेले तुमको ॥

अर्थ-

1- अंतरात्मा



## मौत से डर जाता है दिल

कौन कहता है कि मैं मौत से डर जाता हूँ  
ये तो कमबख्त बिमारी ही से डर जाता है दिल  
क्या ख़ूब बनाई मालिक ने एक अजु<sup>1</sup> जिस्म में  
जो बिन रुके धड़कता रहता है, वह है दिल

न कभी देखता है अमीरी न देखता है गरीबी  
सबके लिए बराबर धड़कता है, वह है दिल  
करता कभी न ये फर्क बच्चे, जवान और बूढ़े में  
बस एक फरमान से फ़ौरन बंद हो जाता है, वह है दिल

जब कभी भी चंद सेकंड के लिए आराम चाहता है, ये दिल  
तो हम फ़ौरन अस्पताल जाते हैं डाक्टर से मिल  
दवा या आपरेशन से इसे समझाने की कोशिश करते हैं  
हुक्म वह सिर्फ मालिक का मानता है, वह है दिल

जब कभी वाकई धड़कना बंद हो जाये वह जिस्म से  
तो उसका नाम जिंदा से मुर्दा बना देता है, वह है दिल  
डर से बचना कहाँ मुमकिन है, इस जहान में कैफ़ी  
एक दिन आख़िर, डर से मर ही जाता है, ये दिल ॥

अर्थ-

1- अंग



[https://youtu.be/5MC1Bf6Fv\\_Y](https://youtu.be/5MC1Bf6Fv_Y)



## बका-ए-ज़िन्दगी

एक नौजवान ने हमसे पूछा,  
क्या हाल है चचा आपके!  
हमने कहा, क्या पूछते हो बेटा!

हमारी रफ़्तार<sup>1</sup>

गुफ़्तार<sup>2</sup>

समाअत<sup>3</sup>

बसारत<sup>4</sup>

और ...

बसीरत<sup>5</sup>

सब जवाब दे चुके हैं !

बस...

बचा है सिर्फ़ एक ईमान

जो सिर्फ़ सवाल पूछता है, जवाब नहीं देता

आँधी और तूफ़ान से भी नहीं डरता

वो जवान ही रहता है, बूढ़ा नहीं होता

उसने खुदारी भर दी है कूट कर हम में

इसलिए अब किसी का ख़ौफ़ नहीं हम में

कैफ़ी ज़मीन चूमता है पांच वक़््त, तो आसमाँ से खुद जवाब आता है

दुनिया वालों को ईमानदार कहाँ भाता है ॥

अर्थ-

1- रफ़्तार (चलना फिरना), 2- गुफ़्तार (बोलचाल)

3- समाअत (सुनना) 4- बसारत (दिखाई देना)

5- बसीरत (समझ)



## 20-40 और अस्पताल

गुज़रे जो 20 साल ममता की छाँव में न खाने की फ़िक्र थी, न ज़िन्दगी थी कैद न पैसों की चाह थी न नींद में खलल वजह थी हर मामले में था माँ का दखल

40 साल से हैं अब बीवी के साये में हर वक़्त उलझे रहते हैं पैसों की हाय में बीवी से नोक-झोंक, खाने की मेज पर होती सुबह हमारी है पैसों की सोच पर कब्ज़ा हुआ जब दिल पर ज़्यादा कमाई का हम भूल गए फर्क हराम और हलाल का

कैफ़ी भटक गए पर सीधा था रास्ता जन्नत के देखे ख़्वाब, पर चुना जहन्नम का रास्ता बाकी की ज़िन्दगी पर न करना कोई सवाल कटती है डाक्टरों में, जाते है अस्पताल

हर बात पर मशवरा अब देता है डाक्टर हर नब्ज़, हर धड़कन का हिसाब लेता है डाक्टर खाने पर भी है बंधन और फ़िक्र है नींद की ज़िन्दगी की फ़िक्र है और पैसों की भी है फ़िक्र कैफ़ी उदास है कि किस से करे यह ज़िक्र ॥



<https://youtu.be/TaLpUKHt604>



## इज्जत आज नीलाम हो गई

बरसों में बनी इज्जत आज नीलाम हो गई  
कागज के चन्द टुकड़ों से सरेआम हो गई

उम्मीद थी कि वो रिश्ते आज किसी काम आएंगे  
जो बरसों से हमने बनाई थी, वो भी नाकाम हो गई

आज फिर हार गई हकीकत, रुसवा हो गए हम  
दुनिया की ये रीत अब भी आम रह गई

इतने भी गाफिल न हो दौलत-ऐ-दुनिया के नशे में  
ये न किसी की रही है न किसी की होगी कभी

इज्जत और ज़िल्लत का ऊपर से है नाता  
बंदे तू हमेशा खुश रह, तुझे है खुदा का वास्ता

कैफ़ी थे इस उम्मीद में कि होगा कोई नाज़िल<sup>1</sup> फरिश्ता  
कागज़ के इस टुकड़े को समझाएगा रिश्ता ॥

अर्थ-

1- प्रकट



## महफिल में दिल अपना खोलते नहीं

हँसते हुए, देखा है जिन्हें, लोगों ने दिन में  
ग़मो की स्याही वह धोते हैं तन्हाई की शब् में

जैसे ही लगी किरणों की आहट उनको  
चले जाते हैं बाज़ार अपने ग़मों को भुलाने

ग़म में भी मुस्कुराते हैं खुशी की उम्मीद में  
आँसू तो छुपाते इस तरह जैसे मोती सीप में



चेहरा तो आईना है, सिर्फ बोलता नहीं  
सच को हमेशा तराजू में तौलता नहीं  
चेहरे पर दिखे उनके कितनी भी उदासी  
महफिल में कैफ़ी दिल अपना कभी खोलते नहीं ॥



## वक्त का एहतराम किया

हमने हर वक्त का एहतराम किया है  
अच्छे बुरे हर वक्त को सलाम किया है

रुखी रोटी को भी अब खा लेता हूँ  
नाज़-नख़रों को भी समझा लेता हूँ

A.C. न भी मिले तो, नींद अब आ ही जाती है  
सिर्फ पंखों की हवा से काम चला लेता हूँ

महंगाई की मार से कार गैरज में लगा रखी है  
पब्लिक बस में भी कार का मजा ले लेता हूँ

एक वक्त था, महफिल का नूर समझा जाता था  
आज उसी महफिल में बेनूर सा खुद को बैठा पाता हूँ

आसाइशों<sup>1</sup> की आरजू<sup>2</sup> नहीं रही कैफ़ी तुमको  
फिर क्यों तुमसे वक्त को रूठा हुआ पाता हूँ

अर्थ-

1 - ऐशो आराम

2 - तमन्ना



## पहले दिमाग को समझाता हूँ

मुश्किल से मुश्किल वक्त में पहले दिमाग को समझाता हूँ  
फिर आकर दिले पस मुर्दे<sup>1</sup> को तफसील<sup>2</sup> बताता हूँ

कि मैं क्यों ज़िंदा रहना चाहता हूँ इस बेवफ़ा दुनिया के लिए  
कुछ दिन तो और निभा साथ मेरा इस ज़माने के लिए

क्योंकि उनका कुछ कर्ज़ बाकी है अब भी चुकाने के लिए  
इसलिए एहसानमंद हूँ मालिक का, मुझे ज़िंदा रखने के लिए

जब सम्भलता है ज़लज़ला दिल और दिमाग का कुछ देर के लिए  
फिर कोई न कोई तीर नया ज़ख्मे जिगर दे ही जाता है

जो भी मिलते हैं वह कहते हैं ये आज़माइश<sup>3</sup> है अल्लाह की आप पर  
यह समझते हुए भी हर कोई अपना हाथ बढ़ाने से क्यों कतराता है

कुरआन कहता है आज़माइश तो अल्लाह सिर्फ़ नेक बंदों की लेता है  
तो क्या नेक बंदों की कतार में वाकई तुम भी आ गए हो कैफ़ी

अर्थ-

1- मुर्झाया हुआ, 2- विस्तार, 3- परीक्षा



## अजीब हो गया

गरीबी में मालिक की कुरबत<sup>1</sup> मिली  
अमीरी मिली तो वो बखील<sup>2</sup> हो गया  
जब अपने परायों में भी ज़लील हो गया  
फिर मालिक के करम से अजीब हो गया !

प्यासा रहा वह, समुंदर के बीच में  
पीने के पानी को भी वह तरस गया  
मांगी दुआ जब रो-रोकर, उससे करम की  
हुई ऐसी बारिश कि तर-हलक हो गया

गलती पे नादिम<sup>3</sup> जब वह हो गए  
गुनाह पिछले थे वह सब माफ हो गए  
जुस्तजू<sup>4</sup> है कैफ़ी को वैसे ही करम की  
उठाएँ कभी न वह ज़िल्लत<sup>5</sup> दुनिया मे शर्म की

आया है अब दौर ऐसे चलन का  
बढ़ता है आगे, जो दादा हो दम का  
पहले तो होती थी ताकत उसी में  
धनी जो होता था, अपने कलम का ॥

अर्थ-

1- नज़दीकी, 2- कंजूस, 3- शर्मिंदा

4-खोज, तलाश, 5- अपमान



## प्रकृति के नियम

चाँद-तारें सोए दिन को, सूरज सोए रात में  
बर्फ की चादर ओढ़े पर्वत, डूबा है किस सोच में  
अथाह समंदर फैल रहा है धरती पर हर ओर  
फिर भी पीने के पानी को तरसे जनता चारों ओर

विज्ञान का डंका पीटें हम, दावा मनुष्य बनाने का  
विफल रहे हम, मिलता नहीं घूंट भर पानी पीने का  
लुप्त होते दिख रहे हैं पशु-पक्षी, अब जंगल से  
जंगल गुहार लगा रहा है, बचाओ हमें तस्करी के कारोबारी से

पेड़ करें हवा से बातें, और हँसें इंसानों पर  
हाल देख दुःखी हो पेड़, तअज्जुब करते नादानों पर  
पूछ रहा हवा से जंगल, इंसान इतना अज्ञानी क्यों  
जो दे उसको जीवन, उसी को आखिर उजाड़े क्यों

देख मतलब परस्त इंसानों को धरती ने बदली अपनी चाल  
कमजोर धुरी पर घूमती धरती, भूकंप से डोलती बारंबार  
ठण्ड में गर्मी, गर्मी में ठण्ड दिखाकर, मौसम करते गुस्से का इज़हार  
फिर भी इंसान बदलता नहीं अपना अमानवीय व्यवहार

अकूत धन लगाया जा रहा है गंगाजल साफ कराने में  
अरबों खर्च हो रहें पर्यावरण बचाओ अभियान चलाने में  
कैफ़ी तुम मान भी जाओ, ईश्वर ही बचा अब एक सहारा  
सच तो यह है, प्रलय से पहले का है ये भयंकर नजारा ॥



## किरदार का सौदा

ज़िक्र फिज़ूल है करना वहाँ इंसान का  
हो रहा हो जहाँ सौदा किरदार का

गुलाम हो गया अब हर शख्स इस दरबार का  
आ गया है वक़्त फिर लोभ से इनकार का

कैसे तुम्हें बताएँ किस्सा उस दीदार का  
जो हमने खुद देखा है सरहद पार का

खिंच चुकी हों जब लकीरें अपने ही घर में  
तो क्यों देते हैं हर बात पर इल्ज़ाम उस पार का

इंसानियत शर्मसार हो रही है दोनों तरफ  
कहीं है नाम 'राम' का तो कहीं 'रहमान' का

मरें चाहे हिंदू, मुस्लिम या फिर ईसाई  
नाम क्यों बदनाम हो किसी एक समाज का

आँच आए न हरगिज़ कुर्सी पर अपनी कैफ़ी  
बस सहारा लेते रहो इन मीडिया दलाल का ॥



## मर ही गया होगा डाकिया

एक दिन यूँही आया ख्याल मुझको  
तलाशूँ दुनिया में एक ईमानदार को

लिखा फिर एक खत मैंने श्रीमान को  
पता था उनका श्रीमान ईमानदार साहब

अब तक न लौटा डाकिया तलाशकर उन श्रीमान को  
शायद मर ही गया होगा वह ढूँढ कर उस ईमानदार को

जारी है ढूँढना, ठिकाना एक ईमानदार साहब का  
भ्रम है ठिकाना ढूँढना, कहता था वो बेचारा डाकिया

अब तो धर्म और जात पर ही होती है वार्ता  
इसीलिए श्रीमान ईमानदार अब तक है लापता

कैफ़ी, जारी रहेगी ये तलाश, ताउम्र  
जब तक मिल न जाये मंज़िल का पता ॥



## सोई हुई है माँ

जब चला तू पहला कदम, खुशियों से रोती है तेरी माँ  
गिरता कभी जो तू ज़मीन पर, तेरी चोट पर रोती है तेरी माँ  
इंतजार उसको रहता है कब पुकारेगा कह कर माँ  
फूले नहीं समाती जब पहली बार, तू बोलता है उसको माँ

गीले बिस्तर पर सोकर भी, देती तुमको आराम तेरी माँ  
खुद भूखे रहकर भी, पिलाती है दूध तुमको तेरी माँ  
लोरी सुना-सुना कर तुमको, सुलाती है तेरी माँ  
रातों का बचा खाना तो अक्सर ही खाती है तेरी माँ

दूल्हे की शक्ल में देख तुमको, क्यों रोती है तेरी माँ  
दुल्हन का नाज़ो-नख़रा भी सहती है तेरी माँ  
तेरे बच्चे में भी उनको तेरी झलक देती है दिखाई  
इसलिए तेरी हर उम्र को बचपन समझती है तेरी माँ

ममता से भरा आँचल तूने क्या और कहीं है पाया  
खतरे में डाल खुद को, तेरे जन्म को है अपनाया

पैरों तले है जन्नत जिसके, फिर भी नहीं गुमान  
मुश्किल घड़ी में बार-बार, आती है माँ ही काम  
लेता रहा जो माँ की दुआ वह खुशनसीब है  
बदनसीब है वो जिससे खफा रहती है उसकी माँ

खत पढ़कर लगा कि शायद बीमार है मेरी माँ  
मैं सोचकर जी रहा था कि सोई हुई है माँ  
माँ की कमी का एहसास तब हुआ कैफ़ी  
जब सुनने को ये मिला कि अब न रही मेरी माँ



## तड़पाती है रात भर

तड़पाती है रात भर, पर आती नहीं है वो  
तड़पते जिस्म पर भी तरस खाती नहीं वो  
दिन के उजाले में गर आ जाए कभी तरस  
ख्वाबों की तरह आकर, चली जाती है वो

हमने कहा कभी कभार तो आ जाओ रात में  
कहने लगी निकलने में घबराती हूँ, अब रात में  
बच्चे - जवान सब मुझको अब बुलाते हैं रात में  
पर मैंने तुमको भी देखा है, जगते ही रात में

मैंने कहा, बेवफा तुम अब इतनी क्यों हो गई  
गुजारी जो रातें साथ-साथ वह कैसे भूल गई  
उसने कहाँ इल्जाम बेवफाई का हमको न दीजिए  
कुदरत के निज़ाम से अब आप समझौता कीजिए

बचपन से जवानी तक दिया साथ तुम्हारा  
क्यों भूल गए वह वक्त जो हमने साथ गुजारा  
फिक्रों में धिरे हो अगर तो, वो भी करे किनारा  
फिर एक गोली ही बने उसको बुलाने का सहारा

बाकी की बची जो रातें हैं आपकी कैफ़ी, वह बोली  
तुम्हारे पास आऊँगी, जब खाओगे एक गोली



## वक्त बदलने में और वक्त लगेगा

अंधेरो से निकलने में अभी वक्त लगेगा  
वक्त को कटने में अभी वक्त लगेगा  
अभी जुल्म का उबाल देखा कहाँ तुमने  
ठंडे पानी को तलाशने में भी वक्त लगेगा

एक झूठ को छुपाने में जो १०० झूठ होता है  
१०० झूठ बोलने से वह सच नहीं हो जाता है  
जब 'मज़लूम' की फरियाद को इंसाफ ना मिले  
उस इंसाफ को पाने में बेशक वक्त तो लगेगा

जो होंठ सिल चुके हैं किसी मजबूरी में  
उनकी खामोशी खुलने में वक्त तो लगेगा  
ऐ वक्त! तू इतना कैसे मजबूर हो गया  
घाव को भरने में इतना वक्त लगेगा

सब्र का पैमाना भी बड़ी मुश्किल से है मिलता  
जुल्मों सितम का दौर ज्यादा नहीं है टिकता  
जुल्म और सब्र की लड़ाई अक्सर ही होती है  
जीत सब्र की होती है, मगर वक्त तो लगेगा

झाँसे में आकर तुम भूल गए अपने अच्छे दिन  
वह दिन वापस आने में ६-७ साल तो लगेगा  
कैफ़ी तुम न रूको और उनको भी न रोको  
वर्ना दौर को बदलने में १०० साल और लगेगा

अर्थ- जुल्म का शिकार



## आने वाली प्रलय का ट्रेलर देखें

दीये का तेल महँगा है, पर बिजली तो फ्री है  
आक्सीजन की कमी है, पर पानी तो फ्री है  
अस्पताल में नहीं डाक्टर, श्मशान में नहीं लकड़ी  
जीवन बचाने के लिए अब मिलती नहीं ककड़ी

पहले किसी के मरने पर होता था शहर बंद  
अब अपने आप को बचाने खुद हो जाते हैं नज़रबंद  
एहतियात नहीं किया तो एतेराज हो गया  
एहतियात पर कुम्भ और चुनाव का प्रहार हो गया

प्रलय के आने का भी मंजर तो ज़रा देखें  
सड़ती हुई लाशों को गिद्धों की तरह देखें  
डर गए कुदरत की तिरछी नज़र से सब  
कैफ़ी कमरे में हुए बंद कि न आये कोई अब ॥



## गुनाहों का हिसाब देने में लगा हूँ

गुनाहों का हिसाब अपनी जिंदगी में ही देने लगा हूँ  
मौत क्यों है जिंदगी से बेहतर, ये अब अच्छे से समझने लगा हूँ

किसको है आज फुरसत, कि कोई अपनों से मिलने जाए  
वक्त की अहमियत, अब मैं बखूबी समझने लगा हूँ

अबकी ईद में जब गया था, रिश्तेदारों से अपने मिलने  
सेवैयों की प्लेट में छुपी अपनी अहमियत, समझने लगा हूँ

जमाना वही, इंसान वही, इंसानियत कहाँ चली गई  
इसकी वजह, इतिहास के पन्नो में ढूँढने लगा हूँ

क्यों तकलीफ दें, दूसरों को अपनी गलतियाँ ढूँढने में  
अपनी गलतियों को ढूँढने में मैं खुद ही लगा हूँ

आज क्यों हो गए कमज़ोर जो थे कभी ताकतवर  
इसी मुअम्मे<sup>1</sup> को सुलझाने में आज भी लगा हूँ

सिर्फ माँ की दुआओं का असर बचा है कैफ़ी  
इसीलिए जिंदगी को अपनी बचाने में लगा हूँ ॥

अर्थ-  
पहेली



## हौसला सँभाल कर रखो

निकलोगे अगर धूप में तो पसीना निकलना लाज़िम है  
चलोगे अगर भीड़ में तो टकराना भी ज़ाहिर है

न धूप कम होगी देखकर तुम्हारा पसीना  
न भीड़ कम होगी देखकर तुम्हारा टकराना

यहाँ अब कोई किसी को छाँव नहीं देता  
यहाँ अब कोई किसी को सहारा भी नहीं देता

ज़माना खुश होता है किसी को परेशान देखकर  
ज़माना हँसता है किसी को रुसवा देखकर

हौसला हो इंसान में तो ज़माना झुक ही जाता है  
नहीं हो हौसला इंसान में तो फिर मिट भी जाता है

हौसला अच्छी तरह सँभाल कर रखो कैफ़ी  
वर्ना झुकाने से कम वक़्त मिटाने में लगता है ॥



## कश्तियाँ अब सेहरा में बहने लगी हैं

सुना है कश्तियाँ अब सेहरा<sup>1</sup> में चलने लगी हैं  
चिंगारियाँ भी अब समुंदर से उठने लगी हैं  
मंदिर में नमाज़ और मस्जिद में पूजा होने लगी हैं  
निशानियाँ क्यामत की अब ज़ाहिर होने लगी हैं

कोई गंगा नहाकर, कोई छूकर हरमैन<sup>2</sup>  
इंसानियत को सरेआम मिटाने में लगा है  
न मौजूद हैं अब श्रीराम, और न कोई नबी  
फिर अंधभक्तों को कौन समझाने में लगा है

तिलक और टोपी में कैफ़ी कुछ नहीं रखा है  
इससे दोनों की रूहें ही शर्मसार होने लगी हैं  
जिनके नामों की कसमें हम लोग रोज़ खाते हैं  
उन नामों की भी तौहीन<sup>3</sup> अब रोज़ होने लगी है ॥

अर्थ-

1- रेगिस्तान 2- मक्का मदीना 3- बेइज्जती



## सच्चा मकान

खुराक—ए—दवा ही अब गिज़ा हो गई है मेरी  
फिर भी लोग, लम्बी उम्र की दुआएं क्यों देते हैं  
न मालूम अब क्या रखा है मेरी जिंदगी में  
कि जन्नत छोड़ लोग जहन्नुम की दुआ देते हैं

मैं तो रहता हूँ आज भी, किराए के मकान में  
पता नहीं लोग अपना मकान क्यों ख़रीद लेते हैं  
शायद सस्ता मकान है, इस जहाँ का उस जहान से  
क्योंकि महँगा मकान सब कहाँ ख़रीद पाते हैं

पत्थरों के मकानों से बेहतर हैं मिट्टी के मकान  
जो जन्नत के मकानों की तरह ठंडक का मज़ा देते हैं  
ऐ खुदा! उनको भी दिखला दें, जन्नत की झलक  
जो इस जहाँ में अपना मकान ख़रीद लेते हैं

कैफ़ी की इल्तिजा है तुझसे ऐ अर्ज़—ए—पाक!  
मिले ईमान की दौलत, तो जन्नत ख़रीद लेते हैं



## उम्मीद का दामन ना छोड़ना

आसान है बहुत ही रिश्तों को तोड़ना  
मुश्किल बहुत होता है, रिश्तों को जोड़ना  
अच्छे दिनों में माँगूँ तुम से तुम्हारा साथ  
माँगूँगा मुश्किलों में ना तुम से तुम्हारा हाथ

लैला ने जख्म झेलें हैं मजनुँ के प्यार में  
बन जाए जख्म फूल जो मिल जाए प्यार में  
हो जाए हर ख्वाहिश मेरी उस घड़ी तमाम  
मिल जाए प्यार का मुझे जिस घड़ी पैगाम

जीना नहीं है आसान ये सच है, आजकल  
फिर भी उम्मीद का दामन, ना छोड़ना  
है शुक्रगुज़ार 'कैफी', हर हाल में तुम्हारा  
दामन वफा का तुम, आगे भी न छोड़ना ॥



## तुमको ही खुश किया

अपनी खुशी को मारकर तुमको ही खुश किया  
तेरी खुशी की खातिर गलत को सही कहा  
पेवंद लगी कमीज, सवारी थी मेरी साइकिल  
तुमको दी नई शर्ट और मोटर साइकिल

रिश्ते में हो दरारें, फिर भी मैं रहूँगा तेरा भाई  
किस-किस को तू बताएगा आपस की ये लड़ाई  
साथ लिए कर्ज का तुम्हें कभी ताअना नहीं दिया  
अल्लाह जानता है वह हमने कैसे अदा किया

माना की मेरी ज़िन्दगी, अब बेबस सी दिख रही  
फिर भी करम है उस मालिक का, बेफिक्र दिख रही  
झूठा गुरुर कब तक दिखाते रहोगे तुम  
हराम की कमाई पर इतराते रहोगे तुम

हमने खिलाएं थे किस तरह तमन्ना के फूल को  
तुमने दिया क्या इसका सिला, दुनिया से पूछ लो  
अब भी डरो उस जहान से, जाना जहां है अनकरीब  
सिकंदर भी खाली हाथ गया और उसके रकीब<sup>1</sup>

अपने किये पर फिर भी कैफ़ी को नहीं मलाल<sup>2</sup>  
इतिहास से ही अब करता है एक सवाल  
क्यों कर दिखाए तुमने हसीन हसरतों के सपने  
दिखते तो दूर-दूर नहीं जिनको कहूं मैं अपने ॥

अर्थ- 1- प्रतिद्वंद्वी, 2- अफसोस



## न्यूज चैनल क्या दिखा रहे हैं ?

अच्छाई ही अच्छाई की ख़बर आजकल हर न्यूज चैनल दिखा रहा है पर हमें तो अच्छा कम, बुरा ज़्यादा नजर आ रहा है

आ जाओ मेरे गाँव एक बार, अगर सच्चाई देखनी हो तो जो तू सीवर के पानी को भी पीने का पानी बता रहा है

पैदा किया किसानों ने अनाज, पसीना बहा-बहा कर उस अनाज को तू, अड़ानी-अम्बानी का क्यों बता रहा है

रोज़ चैनल पर एक जाहिल मुल्ला और पंडित को बिठाकर उनकी बहस से जनता में नफरत का जहर क्यों फैला रहा है

बुलेट ट्रेन से कहीं बेहतर थी हमारी बैलगाड़ी चलती थी धीरे-धीरे, पर सुरक्षित थी हर सवारी

कैफ़ी की है यह विनती, जनता का है यह आग्रह अच्छे दिनों को छोड़, मान लो हमारे पुराने दिनों की ही अर्ज़ी ॥



## घर से अकेले न निकला करो

सुनो! अब घर से अकेले न निकला करो  
न रहूँ जब मैं, तो दरवाज़े भी बंद रखा करो

सुना है दिन में भी अब घूमते हैं, हवस के दरिंदे  
अब न रहा कोई मुहाफिज़<sup>1</sup>, बन गए सब दरिंदे

वह सोचते हैं, तुम खुली तिजोरी हो उनके लिए  
आधे कपड़ों में रहती, तुम नेअमत<sup>2</sup> हो उनके लिए

चाहो अगर तुम, उनसे अपनी हिफाज़त  
करो तुम, कम बाहर निकलने की हाज़त<sup>3</sup>

मजबूरी में निकलना जो बाहर हो जरूरी  
तो जिस्म पर पर्दा ही दे तुम्हें सुरक्षा पूरी

सुनो बात मेरी यह कहता है कैफ़ी  
इलाजों से बेहतर हिफाज़त है बेटी ॥

अर्थ-

1- संरक्षक , 2- तोहफा, 3- जरूरत



## दो तरह की तवायफ

कोठों पर जिस्म का धंधा, तवायफी कहलाता है घर में यही धंधा लिव-इन रिलेशनशिप कहलाता है फर्क इन दोनों धंधों में बस इतना सा ही देखा जाता है कोठों के सैकड़ों का सौदा, होटलों में लाखों का हो जाता है

कोठों पर धंधे की उम्र बस 20-25 होती है होटल में यह धंधा इस उम्र में शुरू होता है कोठे पर धंधे करने वाली तवायफ कहलाती हैं उसी का रुतबा होटलों में सिलेब्रिटी हो जाता है

कोठे की तवायफ का भी, चलता है खूब धंधा पर कच्ची उम्र ही में, यह पड़ जाता है मंदा गलियों की तवायफ के माँ बाप को, जाने न हर कोई पर पाँच सितारा तवायफ के, माँ बाप को जाने हर कोई

पाँच सितारा तवायफ बेटी पर, माँ बाप गर्व करते हैं गलियों की तवायफ की बेटी से, वो मुँह मोड़ लेते हैं अच्छा हुआ ये कैफ़ी, न जलेंगी अब बेटियाँ कर देंगी फ़िक्र सारी ख़त्म, अब ये ही बेटियाँ ॥



## थक जाएँ तो भी उम्मीद मत छोड़िए

ज़िंदगी एक भोर है, सूरज का इंतेज़ार कीजिए  
थक जायें कभी ज़िंदगी से, तो भी उम्मीद मत छोड़िए  
उठा कर गिराना, गिरा कर उठाना वही कर सकता है  
वही अगला सवेरा लाकर आपकी किस्मत को जगा सकता है

रात के अँधेरे से किसको डर नहीं लगता  
सुबह होते ही, किसका हौसला नहीं बढ़ता  
एक बेचारे परवाने की किस्मत तो देखिए  
जिसे रात में आकर रात में ही जल जाना पड़ता है

हर ख़ौफ़ के आगे कोई बेख़ौफ़ भी तो है  
हर जुल्म के पीछे कोई ज़ालिम ही तो है  
ये ख़ौफ़ और जुल्म की दुनिया, ज़्यादा नहीं टिकती  
ये हमारे पूर्वजों की कुर्बानी है, जो मिटाने से नहीं मिटती

‘आह’ दिल की गहराइयों से, बुलन्दी तक पहुँचनी चाहिए ‘कैफ़ी’  
फिर ज़रूरत है एक नये गांधी की, उनको जल्द आना चाहिए ॥



## नानी का घर

रूठे को मनाने का भी एक वक़्त हुआ करता था  
रिश्तों को निभाने का भी एक वक़्त हुआ करता था  
किसी रोते को हँसाना, मुझे अब्बा ने सिखाया था  
जब रोता था कोई घर में, तो अब्बा को बताता था  
वह वक़्त कहाँ चला गया आजकल

मिट्टी का ही सही, पर वह घर हुआ करता था  
हालाँकि बारिश का पानी छप्पर से टपका करता था  
इधर से उधर खाटों को रात भर करना पड़ता था  
फिर भी फ्लैटों से वह घर अच्छा हुआ करता था  
जानें वह बूँदें कहा खो गयीं आजकल

गर्मियों में नानी के घर हर साल जाया करता था  
आम और लीची ख़ूब मज़े में खाया करता था  
मामा मामी के दिलों का प्यार भी पाया करता था  
कभी-कभी तो नाना की डाँट भी सुना करता था  
जाने कहाँ गर्मियों के वो दिन चले गए आजकल

सफ़र तो बैलगाड़ी और बग्गी से ही हुआ करता था  
न टायर फटने की फ़िक्र, न हादसे का डर हुआ करता था  
वक़्त तो लगता था, पर सफ़र अच्छा ही हुआ करता था  
नानी का दिया एक रुपया दादी के घर तक संभाल कर रखता था  
बोलो कैफ़ी कहाँ वह सफ़र चला गया आजकल ॥



<https://youtu.be/4x4tM0vs2Ak>



## मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ

ज़हरीले माहौल में आजकल जीता हूँ, फिर भी डरता नहीं हूँ  
खाने को नहीं रोटी, पीने को नहीं पानी, फिर भी मरता नहीं हूँ  
सोता हूँ बरसात के पानी के साथ, लेकिन जिस्म को धोता नहीं हूँ  
क्योंकि मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ

होता है जहां नापसंदीदा माहौल में वहाँ जाता नहीं हूँ  
कोई मुझे कुछ खाने को दे, यह मैं चाहता नहीं हूँ  
हलाल व हराम की फ़िक्र रहती है हर गिज़ा में  
क्योंकि मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ

इल्म का समुंदर है मुझमें, पर जाहिल से कभी टकराता नहीं हूँ  
खुदा को जो नहीं समझ पाया, उसको कभी समझाता नहीं हूँ  
कुआँ घर के बाहर है, इसलिए समुंदर में नहाता नहीं हूँ  
क्योंकि मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ

अपने बड़े बुजुर्गों से कभी आखें मिलाता नहीं हूँ  
मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी  
खुदा के सिवा किसी और से कुछ माँगता नहीं हूँ  
क्योंकि मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ

सुबह जिंदा उठने का यकीन नहीं कैफ़ी, फिर भी घबराता नहीं हूँ  
इंसान हूँ, इसलिए मौत से डरने का, दिखावा करता नहीं हूँ  
क्योंकि मैं बड़ा अजीब आदमी हूँ ॥



<https://youtu.be/v8TxAT4Ljas>



तलाश है एक कट्टर हिंदू और मुसलमान की

जमी को आसमाँ कहने से कुछ नहीं होगा  
सूरज को चाँद समझने से कुछ नहीं होगा  
डर के बिल्ली से आँख मूंद, चूहा नहीं बचता  
सच ज़्यादा देर अंधेरे में टिक नहीं सकता

बूंद-बूंद से समंदर भरे कहावत है, कहावत रह गई  
इंसान करे इंसान की मदद, मिसाल थी, मिसाल रह गई  
अब तो सिर पे सजता है उनके ही ताज  
जो करें इंसानियत का कल्ल और करें राज

ना इल्म है कुरान का, ना ज्ञान है वेद व पुराण का  
बस नाम लेते हैं 'अल्लाह हू अकबर' और 'श्री राम' का  
कैफ़ी को तलाश है एक कट्टर हिंदू और मुसलमान की  
जिसमें नज़र आए नेक दिली एक सच्चे इंसान की ॥



<https://youtu.be/ItWg5aP3X8>



## तेरी चाल अलग, तेरी ढाल अलग

तेरा गम अलग, तेरी खुशी अलग  
तेरी हस्ती अलग, तेरी मस्ती अलग  
तेरी चाल अलग तेरी ढाल अलग  
तेरे हाथ मिलाने का अन्दाज अलग

तेरा खुदा अलग तेरी इबादत अलग  
न सूरज अलग न चंदा अलग  
न रात अलग न दिन ही अलग  
न तू खाए सोना, ना चाँदी पिये

तेरा बंगला अलग तेरी गाड़ी अलग  
'ओल्ड एज होम' में रहते तेरे माँ-बाप अलग  
तेरी बीवी अलग तेरे बच्चे अलग  
कभी सोचा है तूने ये क्यों हैं अलग

तेरी गरीबी में थे तेरे माँ बाप साथ  
चंद सिक्कों की खातिर, तू हो गया अनाथ  
तू दवाओं का लेगा, कितने दिन साथ  
तेरे मरने पर तो लगेंगे 4 कंघे और हाथ

न तकदीर से ज़्यादा तू कुछ पायेगा कैफ़ी  
फिर क्यों इतराता है चंद सिक्कों के लिए ॥

रवि टंडन - एम टी कैफ़ी



<https://youtu.be/4loNlfDofb4>



## मैं पैसा हूँ!

मंदिर में दिया जाये दान तो	(चढ़ावा कहलाता हूँ)
स्कूल को दिया जाये तो	(फीस कहलाता हूँ)
शादी में दूल्हे को दिया जाये तो	(दहेज कहलाता हूँ)
महिला को तलाक देने पर	(गुजारा भत्ता कहलाता हूँ)
सरकार को पैसा जमा करूँ तो	(टैक्स कहलाता हूँ)
सेवानिवृत्त होने पर मिला पैसा	(पेंशन कहलाता हूँ)
अपहरणकर्ता को पैसा देने पर	(फिरौती कहलाता हूँ)
होटल में वेटर को देने को पर	(टिप कहलाता हूँ)
बैंक से उधार पैसा लें तो	(ऋण कहलाता हूँ)
दैनिक-कर्मियों के लिए	(मजदूरी कहलाता हूँ)
अवैध रूप से कमाया गया तो	(रिश्वत कहलाता हूँ)
पर राजनीतिज्ञों को दिया तो	(गिफ्ट कहलाऊंगा)



<https://youtu.be/1AbvmLEKaol>



## मैं पैसा हूँ

मुझे तुम मरने के बाद अपने साथ नहीं ले जा सकते  
मगर जीते जी मैं तुमको बहुत ऊपर ले जा सकता हूँ।  
मैं पैसा हूँ!

मुझे पसंद करो सिर्फ इतना कि लोग तुमको नापसन्द न करने लगे।  
मैं पैसा हूँ!

लेकिन मैं ईश्वर/अल्लाह नहीं फिर भी लोग मुझे उनसे कम नहीं मानते।  
मैं पैसा हूँ!

नमक की तरह हूँ, जो जरूरी तो है, मगर जरूरत से ज्यादा हो तो  
जिंदगी का टेस्ट बिगाड़ देता है।  
मैं पैसा हूँ!

इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जिनके पास मैं बेशुमार था  
मगर फिर भी वो मरे और उनके लिए रोने वाला कोई नहीं था।  
मैं पैसा हूँ!

कुछ भी नहीं हूँ मगर मैं फैसला करता हूँ कि लोग तुमको कितनी इज्जत देते है।  
मैं पैसा हूँ!

आपके पास हुआ तो सब आपके हैं!  
आपके पास नहीं हुआ तो कोई आपका नहीं है!  
मगर मैं आपके पास होकर भी आपका नहीं।  
मैं पैसा हूँ!

मैं नई-नई रिश्तेदारियाँ बनाता हूँ  
और हकीकी<sup>1</sup> रिश्तेदारियाँ खत्म भी कर देता हूँ।  
मैं पैसा हूँ!

मैं सारे फसादात<sup>2</sup> और उलझनों की जड़ हूँ  
पर फिर भी न जाने क्यों इंसान मेरे लिए पागल रहते हैं?  
वाह मैं कैसा पैसा हूँ !  
जो तुमने मेरे इतने नाम दिए हैं?

अर्थ-

1- असली 2. झगड़ा



## हर हाल में शुक्र अदा करना

खुशी के पल अगर मिले हैं तो इतना भी न इतराओ  
गम के पल बस चार दिन के हैं, इनसे भी न घबराओ

ये दोनों पल इंसान की तकदीर में वही 'रब' लिखता है  
इसलिए दोनों जब भी मिलें, शुक्र के साथ इन्हें गले लगाओ

“चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात” कहावत तो सुनी है आपने  
क्या दिन में कभी चाँद और रात में सूरज निकलते देखा है आपने

फिर क्यों परेशान हो जाते हो मौसम का बदलाव देखकर  
पशु और पक्षियों से सबक लेना नहीं सीखा है आपने?

सितम भी चार दिन के होते हैं, कैफ़ी न घबराओ तुम  
जो हो रहा है, उसे किस्मत समझकर सह जाओ तुम



## नेवला और साँप की राजनीति

हमारे शौक तुम्हारे शौक से काफी मिलते हैं  
हमारे खौफ भी तुम्हारे खौफ से बहुत मिलते हैं  
तुम साँप से डरते हो, हम उसके ज़हर से  
पाला है नेवला हमने भी, साँप के डर से

कर देता हूँ साँप आगे, उसे डराने के लिए मैं  
जब साँप से खतरा हो, नेवले को आगे करता हूँ मैं  
दोनों की लड़ाई का मज़ा लेते हैं हम सभी  
और कारोबार ज़हर का चलाते हैं सिर्फ वही

आजकल की राजनीति यही देती है सीख कैफ़ी  
तभी तो साँप-नेवला दोनों पाले जाते हैं पार्टियों में  
कब किसकी ज़रूरत पड़ जाए राजनीति में  
दोनों ही काम आते हैं, इलेक्शन के ज़माने में ॥



## वक्त से सवाल

आओ वक्त से पूछें क्यों गरीबी से ही टकराते हो गरीब की जिंदगी में ही क्यों ठहराव ज़्यादा लाते हो वक्त मुस्कुराया और बोला, ये खेल हमारा नहीं होता तुम अमीरी ऊपरवाले से क्यों नहीं लिखाकर आते हो?

कागज के टुकड़े हो साथ तो वक्त भी रंगीन होता है सिक्के जब बच जाएँ तो समझें वक्त संगीन<sup>1</sup> होता है जब पूछा जाकर उन रंगीनियों से, वक्त कैसे कट रहा है उसने कहा “कागज़ के टुकड़ों से सिक्का बेहतर होता है”

फिर सोचा आज सिक्का उछाल ही लेता हूँ कैफ़ी गरीबी को मिटाकर अमीरी लिखवा ही लेता हूँ



अमीरी-गरीबी सिक्के पर नहीं, किस्मत में लिखी होती है हाथों की लकीरों की तरह कहीं छोटी कहीं बड़ी होती है तू सिक्का न उछाल मेरे यार, ये धूप-छाँव चलती रहती है बस हिम्मत न हार रवि, किस्मत दरवाजे पर खड़ी होती है

- रवि टंडन

अर्थ- 1- गंभीर



## चल सकोगे मेरे साथ?

चल सकोगे मेरे साथ इस जहां में, जहाँ डर ही डर महसूस हो निभा पाओगे मेरा साथ, जहाँ अकसरियत<sup>1</sup> में नफरत ही नफरत हो क्या दे सकोगे मेरा साथ, गर सिर्फ हार ही हारें मिले तो फिर करो हिम्मत, चलो डर और नफरत से जा मिलें

अपनी तारीख़ को इतनी जल्दी तुम क्यों भूल जाते हो कुछ देर की ठंडी हवा को जन्नत की क्यों समझ लेते हो उठो गफलत<sup>2</sup> से अब, पानी सिर से ऊपर आने वाला है खुद के साथ - साथ तुम्हारी नस्लों को भी डुबोने वाला है

वो उस पार बैठे हैं, तुम इस पार बैठे हो, तो बात कैसे बने वो सियासत करते हैं, तुम बगावत करते हो, तो बात कैसे बने निडर, मुहब्बत और जीत का दावा तो दोनों करते हैं मगर उनको अमली-जामा<sup>3</sup> पहनाने से दोनों क्यों डरते हैं

जो कमजोर हों उनको “सुलह हुदैबिया”<sup>4</sup> से सबक लेना चाहिए कैफ़ी फिर से 800 साल पुरानी हुकूमत आनी चाहिए ॥

अर्थ-

1- अधिकतर , 2- असावधानी,

3- कार्यान्वयन, 4- हुदैबिया की संधि



## न कमाल का, न हुस्नों जमाल का

न आशिक हूँ मैं कमाल का  
न मिसाल हुस्नों जमाल<sup>1</sup> का  
मैं तो हूँ दरिया एक बहता हुआ  
जिसे डर है अब तो ज़वाल<sup>2</sup> का

मैं भटक गया था तेरी राह से  
फिर बुला ले तू उसी राह पर  
मेरी राहें अब तू आसान कर  
मेरे गुनाहों को अब माफ़ कर

तेरा बन्दा हूँ, गुनहगार भी हूँ  
तुझसे माफ़ी का तलबगार<sup>3</sup> हूँ  
तूने वादा किया है माफ़ी का  
तू रास्ता निकाल मेरे हाल का

मुझे माँगना भी तो आता नहीं  
पर क्या, तू हाले दिल जानता नहीं  
मैं हकीर<sup>4</sup> था और अब भी हकीर हूँ  
पर तुझ रफीक<sup>5</sup> का ही बदनसीब हूँ

मेरी जिंदगी उदास है, पर बेईमानी से पाक है  
तेरे करम की एक बूँद, मेरी जिंदगी सँवार दे  
तुझे अपने हबीब<sup>6</sup> का वास्ता, दिखा दे 'कैफ़ी' को सही रास्ता

अर्थ-

- 1- खूबसूरती, 2- पतन, 3- माँगनेवाला,  
4- तुच्छ, 5- मित्र, 6- महबूब



## अब्बा को भुलाऊँ कैसे

हाँ, माँ के ही कदमों में बच्चों की जन्मत होती है और बाप उस जन्मत का दरवाजा बनकर रहता है जैसे माँ के कर्जे को उतार नहीं सकता है कोई बाप का पसीना भी सुखा नहीं सकता है कोई

अब्बा, जब से जुदा हुए आप हम सबसे सभी ने रुख है बदला अपना, हम सभी से रहे न चाचा, मामू और ना ही रहे फूफा अम्मा को अपना ये हाल हम बताएँ कैसे

कब्रिस्तान जाकर मैं इसलिए मुतमईन होता हूँ कि अब्बा को वहाँ पर चैन से सोया पाता हूँ गर अब्बा किसी रोज़ नींद से जाग जाएँगे उनको अपना हाल-ए-दिल रोकर हम सुनाएँगे

पूछते हैं बच्चे जब हमसे अब्बा के बारे में बता नहीं सकता वह सच जो है उनके बारे में गहरी नींद सोयें हैं वह, उठा नहीं सकता हूँ मैं बस, यही कहकर बच्चों को बहला देता हूँ मैं

आवाज उनकी आज भी गूँज रही है कानों में उस आवाज को दिल से मैं भुलाऊँ अब कैसे अब्बा की याद में आज भी रुकते नहीं हैं आँसू अम्मा! छुपाएँ बच्चों से, बहते आँसू अब कैसे

जब भी धूप-बारिश में निकलता था कभी मैं दिलाते थे याद छतरी की, गर भूल जाऊँ मैं अब किसको फिक्र मेरी जाने के बाद उनके रखी हुई है जो सिर पर मेरे, गमों की गठरी

मेरी यह नसीहत अब सुन लें सभी लोग माँ-बाप का साया ही मिटाता है सभी रोग चेहरे पर हँसी देख कैफी के, अंदाजा मत लगाइए कोई तरकीब अब्बा को भुलाने की हो, तो बताइए ॥



## धंधे के उसूल

धंधे के फायदे का मज़ा अक्सर कोई और ले जाता है  
वहीं नुक़सान की सज़ा इंसान खुद ही पाता है  
तजुर्बा कहता है, धंधा भी एक नाव की तरह होता है  
डूबने से पहले, उस पर सवार पहले भागने लगता है

जब वही धंधा फिर फ़ायदे देने लगता है  
वही भागने वाला दोबारा, बिल से निकल आता है  
उस वक्त सही फ़ेसला सिर्फ़ मालिक को ही लेना चाहिए  
कि वह किस को दोबारा धंधे में जगह देना चाहता है

इसलिए धंधे का लेन-देन, कभी किसी और पर मत छोड़ो कैफ़ी  
वर्ना धंधे का लेन कम और देन ज़्यादा बढ़ ही जाता है



## फूल और काँटें

वह हमारे नाम से आज भी क्यों ख़फ़ा रहते हैं  
हम तो सिर्फ़ गुस्से में उन्हें ज़ालिम कहा करते हैं  
वह तो हमें सोते-जागते रुसवा किया करते हैं  
हमतो उनके लिए हमेशा सलामती की दुआ करते हैं

उनको भी चाहिए कि अब रुसवा न हम को करें  
इस से बेहतर है कि अपनी कमियों को दफ़ा करें  
चमन फूलों का गुलदस्ता हो तो अच्छा लगता है  
बिन काँटों का गुलाब भी कहाँ अच्छा लगता है

जानता हूँ, एक दिन गुलाब भी मुरझा जाएँगे कैफ़ी  
माली से सिवा<sup>1</sup> काँटों को मुरझाने का ग़म होगा

1. साथ



## कर्मों का फल

अच्छे कर्मों का फल इंसान को अच्छा ही मिलता है  
देर हो सकती है पर फल ज़रूर मिलता है  
कुकर्मों का फल भी ईश्वर, दे ही देता है  
फिर कुकर्मों के फल पर ईश्वर को क्यों दोष देता है

समुंदर में चीनी डालने से पानी मीठा नहीं होता है  
उसी तरह सिर्फ जाप करने से कुछ नहीं होता है  
कर मानवता की सेवा, शायद वह मान जाए  
वर्ना तो सिर्फ नर्क का दरवाज़ा ही खुला होता है

सिर्फ तक़दीर पर भरोसा कर के ही मत बैठ कैफ़ी  
कर्मों से तक़दीर में भी उलट फेर होता रहता है



## माँ ! बता दे मुझे

माँ तूने जन्म तो दिया, पर तक्दीर क्यों नहीं लिखी मेरी, बता दे मुझे मैं तुम्हारे लिए तो कुछ कर न सका, तो जन्म क्यों दिया, बता दे मुझे बचपन में देकर आँचल अपना, बुढ़ापा किस पर छोड़ दिया, बता दे मुझे माँ, मैं तो तेरा बेटा हूँ, पर मेरा कोई बेटा नहीं, जाऊँ कहाँ, बता दे मुझे

माँ तेरी गोद तक ही बेहतर था मैं, तूने बड़ा क्यों किया, बता दे मुझे तेरा दूध पीने तक ही क्यों न ज़िंदा रहा, बता दे मुझे मेरा बचपन ही बेहतर था, फिर तूने बड़ा क्यों किया, बता दे मुझे मैं तो मुश्किल में हूँ, पर तू क्यों है परेशान, बता दे मुझे

ये दुनिया जालिमों की बस्ती है, जाऊँ कहाँ अब मैं, बता दे मुझे तेरी हर बात मेरे सिर आखों पर थी, वह हालात कैसे फिर लाऊँ, बता दे मुझे थका दिया है तुझको सवाल करते-करते, अब किस से करूँ सवाल, बता दे मुझे रुलाया तुझको ज़्यादा हँसाने के बदले, अब जन्नत मिलेगी कैसे, बता दे मुझे

मैं हकदार जन्नत का हूँ तो नहीं, फिर भी पैरवी किससे कराऊँ, बता दे मुझे सब रिश्ते अब बोझिल लगे, तेरी याद आए तो भुलाऊँ कैसे, बता दे मुझे तुझसे बड़ा न कोई अब रह गया जहाँ मैं, आकर फिर बहला दे मुझे कैफ़ी को तेरे पास आने से पहले, कोई अच्छा सा रास्ता बता दे मुझे

बचपन में मरा होता तो क्या जन्नत मिलती, ये बात सही है? बता दे मुझे अब्बा की खैरियत भी जानता नहीं, उनकी भी कोई ख़बर ख़्वाबों में, बता दे मुझे ॥



## मेरा भविष्य क्या होगा?

मैं दूध पीता बच्चा हूँ जी, दूध पीता हूँ जो मिलता ज़हरीला थोड़ा बड़ा हुआ तो खाना खाया, वो भी मिलता ज़हरीला आटा, चावल और दालों में भी मिला केमिकल ज़हरीला जब स्कूल गया, टीचर की बातों को भी सुनना लगता ज़हरीला मैं बच्चा हूँ मेरा भविष्य क्या होगा !

तूने माँ के दूध का भी नहीं रखा कोई सम्मान नाम 'मदर डेरी' रख कर किया माँ का घोर अपमान तुम खाते हो आर्गेनिक सब्जियाँ, हम क्या खाएँ श्रीमान स्कूल बंद कर, पढ़ाई की आनलाइन और मोबाइल कर दिया सरेआम मैं बच्चा हूँ मेरा भविष्य क्या होगा!

तुमने एक नया कानून बनाया, जिसे कहते "लिव-इन-रिलेशन" बाप का नाम माँ भी न जाने, कैसे हो मेरा स्कूल सलेक्शन ज़रा तुम ही बताओ किस स्कूल में जाएँ, जहाँ हो जाए एडमिशन बाप के नाम का कालम ही न हो ऐसा हो फार्म ऐप्लिकेशन मैं बच्चा हूँ, मेरा भविष्य क्या होगा !

सरकारी नौकरी मिलती नहीं, निजी में तनखाह अच्छी नहीं नेता अभी तक बने नहीं, इसलिए चोरी डकैती आती नहीं फ्री राशन करदो बेरोज़गारी तक, क्योंकि चोरी डकैती मेरे बस की नहीं बैंक लोन देता नहीं, क्योंकि गिरवी को कुछ बचा नहीं मैं बेरोजगार हूँ, मेरा भविष्य क्या होगा !

अब ये भी बताते चलो कैफ़ी, नौजवान शादी करे या नहीं कितने ही नेतागण अब बिन शादी के देश की सेवा करते हैं शादी करके देश की आबादी, बढ़ाएँ या नहीं हमसे अगर आबादी बढ़ जाए तो दोगे कोई सजा तो नहीं मैं जवान हूँ, बताओ मेरा भविष्य क्या होगा ॥



## बेचा ईमान तब शानो शौकत आई

बेचा जब अपना ईमान, तब घर में शानो शौकत आई है  
शानो-शौकत अपने साथ कई रिश्तेदारों को भी लाई है

जिंदगी की खुशियाँ बेच कर, खरीदी हमनें तन्हाई है  
तन्हाई में जीकर अपनी पुरसुकून जिंदगी हमनें गवाई है

पुरसुकून न रहने पर शुगर-बीपी ने अपनी जगह बनाई है  
चीनी-नमक भी रूठकर अब घर में गोली की शकल में आई है

पंखे की बजाय आज A. C. में नींद आई है  
मच्छर के डर से मच्छरदानी नहीं, गुड नाइट जलाई है

फिर भी जब नींद न आई तो 2 पेग सोम रस चढ़ाई है  
तब जाकर कहीं 4-6 घंटे की नींद कल रात आई है

जबसे बीघों का मकान छोड़, बहुएँ शहरों के फ्लैटों में आई है  
उसी दिन से जिंदगी की मिठास, कड़वाहट में बदल गई है

आज फिर पापा-मम्मी की बचपन की नसीहत याद आई है  
उनके पास, हमारी हाज़िरी ही उनके लिए एक खुशी लाई है

लगता है अब, दुनिया से पापा की विदाई होने वाली है  
इसलिए जायदाद के लालचियों ने घर पर भीड़ लगाई है

यही जिंदगी की हकीकत है, जो अपने दिल को समझानी है  
ईमान मत बेचो अपना कैफ़ी इसी में तुम्हारी भलाई है ॥



## डर है कहीं बिक न जाए

पानी बेचा जा रहा है बरसों से, डर है कहीं हवा भी बिक न जाए, मुफ्त अनाज, बिजली पाकर, डर है कहीं जनता काहिल<sup>1</sup> न हो जाए, पढ़ाई आनलाइन हो गई, डर है कहीं सभी स्कूल बंद न हो जाए, हर चीज़ में केमिकल है, डर है कहीं मरने की रफ़्तार बढ़ न जाए,

नेता सब्ज़ियों की तरह बिक रहे हैं, डर है हिटलर फिर न आ जाए, चुनाव आयोग पर नेताओं का दबाव है, डर है कहीं चुनाव होना बंद न हो जाए, बिक रही है सदियों से ज़मीनें, डर है आसमान भी बिकने न लग जाए, चाँद पर भी होने लगा सौदा, डर है कहीं सितारों की बारी न आ जाए,

जंगल तो सारे कट रहे हैं, डर है कहीं सारे पशु-पक्षी मर न जाए, मज़हब के ठेकेदारों की हरकतों से, डर है कहीं मज़हब ही मिट न जाए, पैसे में दूल्हा बिकता है, डर है कहीं दुल्हन भी बिक न जाए, बिना शादी के ही माँ-बाप बन रहे हैं, डर है शादी का रिवाज ही ख़त्म न हो जाए,

शहर की लड़कियाँ कपड़े कम पहनती हैं, डर है ये चलन गाँव में न आ जाए, हमारे चारों स्तम्भ गिरने लगे हैं, डर है कहीं गृह-युद्ध न हो जाए, हर तरफ रिश्वतख़ोरी और अधर्मी है, डर है कहीं देश श्रीलंका न बन जाए, देश का हर आदमी कर्ज़दार है, डर है कहीं खुदकशी की रफ़्तार और न बढ़ जाए,

जब बिकने लगे सांसद और विधायक, डर है कहीं संसद न बिक जाए, अब इसलिए, खुली रखता है मुर्दा आँखे कैफ़ी, डर है उसका कहीं कफ़न भी बिक न जाए,

अर्थ-

1- सुस्त, आलसी।



## साँस थमने को है

पास बैठो ज़रा, अब साँस थमने को है  
साँस थम जाए, फिर तुम किनारा करना

दिल का रंग भी, अब स्याह पड़ने को है  
उस दिल को बदलने की कोशिश न करना

ज़िंदगी की उलझने भी अब सिमटने को है  
इसके बाद ही मेहँदी का रंग तुम स्याह करना

जिस्म तैयार है मेरा, अब कहने को अलविदा  
है तो मुश्किल, पर चेहरे को तुम उदास मत करना

गुनहगार हूँ, पर रहमत का तलबगार<sup>1</sup> भी हूँ  
तुम भी मेरे वास्ते, मग़फ़िरत<sup>2</sup> की दुआ किया करना

मेरे चंद सवालों के जवाब, जो अधूरे रह गए हैं  
उन का जवाब तुम किसी और से तलब न करना

दुनिया की मुहब्बत और वफा, दोनो ने देख ली कैफ़ी  
इसलिए तुम भी अब सिर्फ़ उस जहाँ की फ़िक्र ही करना

मुंतज़िर<sup>3</sup> रहूँगा मैं, तुम्हारे ख़ैरमक़दम<sup>4</sup> के लिए  
मेरे इंतज़ार को तुम ज़्यादा तवील<sup>5</sup> मत करना

अर्थ-

1- माँगनेवाला, 2- मोक्ष, 3- प्रतीक्षा करनेवाला

4- स्वागत 5- लम्बा



## बेटी तू

जब आयी बाप के घर, खुशियों का अंबार लाई थी तू  
जब गई ससुराल, तो गमों का पहाड़ छोड़ गई तू

बाप के काँधे पर सुकून की नींद सोती थी तू  
बाप को घोड़ा बनाकर खिलखिलाती थी तू

माँ से ज़िद करने पर, जब मार खाती थी तू  
बाप के बाहों में आकर चुप हो जाती थी तू

माँ ने पैदा किया, मैंने नाज़ों-नखरों से पाला तुझे  
यादों में अपनी मैंने, हमेशा बसाया तुझे

मैं मजबूर था, तुझे नए बंधन से बांधने के लिए  
माफ करना मुझे इस रस्म को निभाने के लिए

फख्र है मुझको कि, तेरी डोली उठी मेरे हाथों से  
है मुझको कि, तेरी डोली उठी मेरे हाथों से  
गम होगा, जब देखेगी मेरा जनाज़ा अपनी आँखों से

बाप-बेटी का रिश्ता तो खुदा ने जन्नत तक का दिया  
इसलिए बाप के लिए, जन्नत का दरवाजा बेटी को खोलने को कहा

मैं अब आखिरी साँसें ले रहा हूँ कैफ़ी, अपनी ज़िंदगी की  
आकर चूम लेना जब उठने लगे मय्यत तेरे बाप की



## चंद्रमुखी बनाम सूर्यमुखी

तुमको रखा था हमेशा मैंने, चंद्रमुखी की तरह  
ये क्या हो गया जो लगने लगी सूर्यमुखी की तरह  
मुझको तुम आ गयी थी नज़र, अमावस्या की रात में भी  
दिन में तुम किसकी तलाश में हो, अजनबी की तरह

अब तो एहसास हो रहा होगा अपनी मुहब्बत का  
मेरा समझाना भी याद आ रहा होगा अच्छी तरह  
काश सिर्फ एक जिद पर नहीं अड़ती उस दिन  
तो आज भी तुम दिखती चंद्रमुखी की तरह

दिमाग से सोचा नहीं उस दिन तुमने, जज़्बात में बहकर  
दिल को समझाओ, एक बार फिर पहले की तरह  
दोनों मासूम इंतेज़ार में हैं, कब होगी हमारी सुलह  
जल्दी आ जाओ सूर्यमुखी, बनकर चंद्रमुखी की तरह

वक्त गुज़रा नहीं अब भी, समझौते की है गुंजाइश  
दोनों बच्चे अब भी मिलते हैं, कोर्ट में पहले की तरह  
कोर्ट के चक्कर में किसका भला हुआ है कैफ़ी  
क्यों न सुलह कर रहने लगे हम दोनो पहले की तरह ।।



## आज और कल

ज़िंदगी गुज़ार दी मैंने, मयख़ाने में बैठकर  
अब वह कह रहे हैं, ज़रा पीकर तो देख लो

सब कुछ दिखा दिया दुनिया के आशिकों ने  
अब वह कह रहे हैं, ज़रा आशिकी कर के देख लो

गाँव में अगर नंगापन है तो गरीब कहलाएँगे  
अमीरों का नंगा फैशन, शहर में जाकर तो देख लो

जिस्म पर सिला कपड़ा न आने में न जाने में  
फिर भी यहाँ अमीरी-ग़रीबी का फ़र्क देख लो

माँ की फ़िक्र तब तक है, जब तक हैं कुँवारे  
शादी के बाद माँ को अनाथालय में देख लो

कल भूख से वह मर गया सड़क किनारे रात में  
सुबह लोग कहने लगे, ज़रा पीने का अंजाम तो देख लो

अब दुनिया को देखना कितना आसान हो गया  
अपने मोबाइल पर ही सारा जहान देख लो

बच्चों को बहलाने का भी क्या अन्दाज़ आ गया  
कार्टून लगाकर दे दो, फिर माँ-बाप का सुकून देख लो

गाँव की रसोई घर में, और टायलेट बाहर हुआ करते थे  
शहर में आकर, रसोई और टायलेट एक साथ देख लो

अपनों की फ़िक्र में ही कैफ़ी ने पूरी ज़िंदगी गुज़ार दी  
अपनों ने ही आज उसको छोड़ा, जाकर अपनी आँखों से



## सालगिरह की सच्चाई

उम्र कम होने का भी जश्न मनाते हैं लोग खुद को परवाने की तरह हर साल जलाते हैं लोग शुक्र है ऊपरवाले का, कि हम में से ज़्यादातर भूखे-नंगे हैं वर्ना इस चलन से देश की आबादी को ही ख़तरे में डाल देते लोग

केक काटते हैं और मोमबत्ती भी बुझाते हैं लोग फिर सालगिरह का ज़ोर-ज़ोर से गाना गाते हैं लोग मेहमान केक खाते हैं, खाना खाते हैं, फिर चले जाते हैं मेहमान का गिफ्ट देखकर उनकी हैसियत को समझ जाते हैं लोग

इत्तिफाक देखिए इस साल कितनी जल्दी फिर वही तारीख़ आ गई पर खुशियों की जगह, इस साल उनकी बरसी मना रहे हैं लोग न केक, न मोमबत्ती, सिर्फ़ फोटो पर माला चढ़ा रहे हैं लोग इंतेज़ार में बैठे गरीबों को आज बुलाकर खाना खिला रहे हैं लोग

इस जिंदगी के कड़वी हकीकत को, क्यों नहीं मानते कैफ़ी लोग? इस व्यर्थ के चलन को क्यों नहीं ख़त्म कर डालते हैं लोग।



## कह दो चिलमन से

कह दो चिलमन से कुछ दिन और इज़्जत को सम्भालें लोग बैठे हैं इसी इंतजार में कि चिलमन को गिरा डालें अभी तो मेरी साँस चल रही, और उम्मीद भी है जिंदा वर्ना किस-किस को बताएगा रुसवाई का सबब, ये बन्दा

चिलमन ने कहा...



”साँस भी तेरी चलेगी, उम्मीद भी बढ़ेगी यकीन रख, कभी न होने देंगे रुसवाई बस इंतजार कर रात ढलने का ऐ कैफ़ी! वो मिट जाएँगे देख कर सूरज की रहनुमाई



## ‘आयशा’ तुमने अच्छा नहीं किया

हसीन लम्हे-ज़िंदगी ख़त्म कर ली, थोड़े से बोझ से ऊब कर  
खुदकुशी कर गई एक मज़लूम बेचारी, नदी में डूब कर

अंदर से वह डरी लग रही थी, पर चेहरे पर मुस्कान थी  
लग रही थी फ़ैसला से पहले, जैसे कली कोई कुम्हलाई थी

कल तक वह बेफ़िक्र थी, पर आज कैसे मौन हो गई  
जानते हैं, उसकी ख़ामोशी की वजह क्या हो गई

वीडियो में दिख रही थी वह किसी ज़ुबात में  
पता चला, रहता था एक भेड़िया उसके साथ में

पानी भी पिया, चीख़ भी निकली होगी और जान आख़िर निकल गई  
लाश उस बेचारी की नदी की धारा में दूर कहीं बह गई

ये भी अजीब है, कितने बेख़बर थे उसके घरवाले  
देख लाश सुबह, दंग रह गए उसके घरवाले

जो भी किया ज़ुबात में आकर, ‘आयशा’ तुमने अच्छा नहीं किया  
ऐसी मौत तो हराम है कैफ़ी, ज़न्नत छोड़ जहन्नुम को क्यों अपनाया



## आज की राजनीति

मस्जिद तो बनादी शब' भर में, ईमान की हरारत' वालों ने  
मन अपना पुराना पापी है, बरसों में नमाज़ी बन न सका  
अल्लामा इक़बाल

अब मंदिर बना लिया शब भर में, बेइमां इबादत वालों ने  
पर हम तो वो ही मुस्लिम हैं, जो न बदले 1500 सालों में

मस्जिद में आते नंदन, तो पाते हैं सत्कार  
पर मंदिर में पानी पीने पर, जुम्नन खाए मार

बोलो मर्यादा पुरुषोत्तम राम! ये कैसा भक्ति फेर?  
तुमने भी तो भक्तन "शबरी" के खाए झूठे बैर

गाँव-गाँव में है पाठशाला, पर शिक्षक कहाँ से लाओगे?  
बच्चों को 'तारण' का अर्थ, क्या अब शिक्षा बतलाओगे?

बच्चे न अब अंतर समझें, पाठशाला और मधुशाला में  
अपनी संस्कृति के लहू में क्या यूरोप का लहू मिलाओगे?

लाखों की बनाली है रसोई, पर अन्न कहाँ से लाओगे?  
अन्नदाता तो लगते हैं नाराज़, कैसे उसे मनाओगे?

फिर एक बार क्या कैफ़ी तुम, राम-रहीम को लड़ाओगे?  
आपस में तनातनी रहे, क्या ऐसा ही रामराज्य बनाओगे?

अर्थ— 1—रात 2—गर्मी



## गम का साथी न तलाशें ...

लोग मेरी बात अक्सर करते हैं, मगर अपनी खुशी के लिए पर बेचारा गम मिटता नहीं कभी इन खुशियों से!

अपने ग़म को बताने का कोई साथी न तलाशें बेहतर है इसे अपने दिल में ही छुपाये रखें तुम्हारा ग़म आज उनको खुशी तो दे रहा है उसी खुशी को आज अपनी खुशी ही समझें

सुना है मैंने, आजकल नींद नहीं आती उनको मेरे सारे ग़म, शायद मेरे चेहरे ने बता दिए उनको इसलिए मेरा ग़म देखकर अब ज़्यादा परेशान दिखती हैं वह रात में तो दवा खाकर जल्दी सो जाती हैं वह

मैं जो मिलता हूँ उनसे, सिर्फ़ उनकी खुशी की खातिर लेकिन वह परेशान रहती हैं, मुझे समझाने के लिए मैं तो जागता हूँ रात भर, सिर्फ़ उनकी पहरेदारी में एक दिन दोनों सो जाएँगे और खाक हो जाएँगे ज़माने के लिए

फिर ज़माना कुछ दिन तक तुम्हें याद रखेगा कैफ़ी और कुछ दिन बाद तलाश कर ही लेगा कोई नया कैफ़ी



## इंसानियत हैसियत से नहीं चलती

बहुत घर आज भी ऐसे हैं जहाँ इज़्जत मिलती है वहाँ तुम्हारी जेब की चिल्लर मायने नहीं रखती है इंसानियत में पहिये लगे हैं, जो सिर्फ हैसियत से नहीं चलते ये ऐसी गाड़ी है जो सभी को साथ लेकर चलती है

दुनिया इंसानियत की पटरी है और मासूमियत एक स्टेशन है डिब्बा छोटा है, सीट सबको न मिले, फिर भी ग़नीमत है धड़कती आग लिए अपने सीने में, ये दौड़ता इंजन तुम गले लग कर तो देखो, भूल जाओगे सब प्राब्लम

न-बुलाया अगर पड़ोसी ने, तो क्यों देना उनको इतना भाव? जितना ज़्यादा लगाव रखोगे, उतना गहरा मिलेगा घाव उसके नसीब में नहीं थी कैफ़ी, अबकि रमज़ान की इफ्तारी वह क्या ज़कात देगा, जो खुद बनता है भिखारी



## ताजपोशी

ताजपोशी गर बदले भी, तो हमारा हाल न बदलेगा  
शिकारी गर बदल भी गया, तो शिकार न बदलेगा  
वही कातिल वही मुंसिफ, तो इंसाफ क्या खाक बदलेगा  
ऊपरवाला ही सिर्फ जाने, कब हमारा हाल बदलेगा

हालात फिर पहले जैसे होंगे ऐसी उम्मीद न थी  
गुरबत इस कदर बढ़ेगी, इसकी भी उम्मीद न थी  
बेरोज़गार जलाएँगे पुतले नेताओं की, उम्मीद न थी  
देश को अब जज ही चलाएँगे ऐसी भी उम्मीद न थी

अब तो आम पब्लिक का कहना है:

हमें तो लूट लिया इन सब ताजदारों ने  
झूँटे-झूँटे वादों ने, पाँच किलो राशन ने  
किया वादा फिर बिजली-पानी फ्री देने का  
हमें झाँसा दे दिया इलेक्शन लड़ने वालों ने

हमें यकीन था हमारे नेता रहेगें साथ हर दुःख सुख में  
हमें क्या पता था, ये भी वही करेंगे अगले पाँच सालों में  
अगली बार हम सबका ये ही नारा होगा उनके लिए  
हमें फिर लूट लिया वादा करनेवाले नेताओं ने

अब मुमकिन नहीं हम आएँ, झाँसा देने वालों के फंदे में  
इस बार तो कैफ़ी होंगें, NOTA का बटन दबाने वालों में



## क्यों मनाते हैं अंग्रेज़ी नया साल?

राम-रहीम के देश में  
अंग्रेजों की जनवरी में  
मनाते क्यों हैं नया साल

31 दिसम्बर की रात में ही, होता है क्यों धमाल?

शुभकामनाएं देते सबको, पंडित और मौलवी के लाल  
और हमारा चैत्र - मुहर्रम, हो जाता है भूतकाल

जब गुलामी के समय के हमने बदले अनेकों नाम  
फिर क्यों नए साल को बदलने में हो गए हम नाकाम?

वक्त अभी है संभल जाओ, इस नाच-गाने में कुछ नहीं रखा  
फिर गुलाम हो जाओगे, अगर ये चलन नहीं सुधरा

कहीं ऐसा ना हो जाए कैफ़ी, हम करते रहे भगवा और हरा  
और उन्नति का हमारा सपना, बस यूं ही रह जाए धरा का धरा



## शबाश गूगल

पता नहीं क्यों आजकल मैं हर बात भूलने लगा हूँ  
इसलिए हर नई सोच को कागज पर लिखने लगा हूँ

न-मालूम किसने बुलाया मुझको इस महफ़िल में  
जब से आया हूँ यहाँ, उनको ढूँढने में लगा हूँ

शुक्र है गूगल का, जो सब कुछ बता देता है मुझको  
उससे पूछ-पूछ कर, ये नज़्म आपको सुनाने लगा हूँ

गूगल के सर्च में कल वह मोहतरमा मिल गई  
जिनकी तलाश में, मैं बरसों से भटकता रहा हूँ

आप मेरी इस नज़्म को दाद दें या फिर खाज  
कुछ देर के लिए मैं सब नज़र-अंदाज़ करने में लगा हूँ

अगर आप दाद देंगे तो मेरा फोन-नंबर गूगल से मिल जाएगा  
वर्ना खाज में तो मैं, गूगल से भी पहचान अपनी मिटाने में लगा हूँ

उम्मीद है कि लोग अब दाद ही दाद देंगे कैफ़ी  
मैं तो पहले के खाज की ही दुश्वारी कम करने में लगा हूँ



## पुराना रिश्ता निभाना अब मुमकिन नहीं

पुराना वह रिश्ता निभाना अब मुमकिन नहीं रह गया नया यह रिश्ता भी निभाना, अब नामुमकिन सा हो गया मेरी ख़्वाहिश थी कि न मुमकिन होता न नामुमकिन होता तो इंसान को जिंदगी भर, न खुशी होती न गम होता

चलो पहले मुमकिन और नामुमकिन को ढूँढ निकालें फिर कोशिश कर, दोनों का मिलन करा दें जब कभी भी दोनों फिर मिल जाएँ, आपस में फिर फायदा और नुकसान का एहसास दिला दें

कौन कहता है कि कुछ भी नामुमकिन नहीं इस जहाँ में अगर मुमकिन सब होता तो नामुमकिन कहा जाता नामुमकिन और मुमकिन, इंसान के हाथ में नहीं कैफ़ी अल्लाह का फज़ल है -‘मुमकिन व नामुमकिन’



## बचपन से बुढ़ापे का सफ़र

बचपन से बुढ़ापे में सिर्फ बदलाव ही तो आया है  
मैंने तो बचपन ही से, बुढ़ापे को गले लगाया है  
बचपन की सारी ज़िद को सभी करते थे फौरन पूरी  
बुढ़ापे में अगर ज़िद हो तो सभी बना लेते हैं दूरी

जिसने भी बनाई थी दूरी वह भी अब बूढ़े हो गए  
हालत मेरे जैसी देख अपनी, आँसू निकल गए  
जब चिड़िया चुग गई सब दाना और रात हो गई  
फिर माफ़ी की होड़ में सारे घर वाले इकट्ठा हो गये

ये बुढ़ापा तो ख़ैर कैफ़ी, हो जाएगा ख़त्म जल्दी  
पल भर की जिंदगी को लोग क्यों अटल समझ गए



## सफेदपोश की कहानी

फटी बनियान को कमीज़ से छुपाए हुआ हूँ  
अपने कटे हाथों को भी चादर में समाये हुआ हूँ  
परछाई तक से अपनी असलियत छुपाए हुआ हूँ  
अपने चेहरे को भी कसम देकर समझाए हुआ हूँ

अपने बालों को भी खिज़ाब से सजाए हुआ हूँ  
और अपनी बीनाई को भी ऐनक से बचाए हुआ हूँ  
दिल के ज़ख्मों को दवाओं से पटाए हुआ हूँ  
दिमाग सुस्त हो चला, पर पुरानी यादें बचाए हुआ हूँ

गम है बिछड़ने का, पर यादें, दिल में सँजोए हुआ हूँ  
अपनी परेशानी को, अपने ही दिल में बसाए हुआ हूँ  
न एहसास हो उनको, इसलिए गर्दन भी झुकाए हुआ हूँ  
ऊपर से नीचे गिरा हूँ, दर्द है, उसको भी छुपाए हुआ हूँ

अँधेरे में बस एक दीया, तेल का जलाए हुआ हूँ  
फिर भी अल्लाह से करम की उम्मीद लगाए हुआ हूँ  
ग़म मत करना कभी मेरी उदासी देखकर कैफ़ी  
जो असलियत है उसे अब तुमको बताने लगा



## कागज़ को खुदा क्यों समझते हैं

गर्मी की तपिश ठंड आकर तोड़ देती है  
झमझम बारिश धूप को निचोड़ देती है  
तब जाकर मिलता है दाना-पानी हम सबको  
फिर भी दुनिया हमेशा शिकायत करती रहती है

लोग क्यों नहीं समझ पाते कुदरत की ताकत को  
बना कर रोबोट, अब इंसान बनाने पर तुले हैं  
क्यों कुछ लोग खुदाई का दावा करते दिखते हैं  
जो दुनिया के ये कवाएफ़-व-हालात<sup>1</sup> दिखते हैं

मैं जानता हूँ अपनी हैसियत इस जहान में कैफ़ी  
इसलिए अपना ज़मीर हमेशा ख़ामोश रहता है  
'वह' याद दिलाता है अपना करिश्मा हर बार हमें  
फिर भी इंसान काग़ज़ को ही खुदा क्यों समझता है



## बरखुरदार अच्छा है

इल्म अच्छा है, अमल अच्छा है, न किरदार अच्छा नहीं  
आज के भाव में लड़कों का बाज़ार अच्छा है  
जाते हैं मयख़ाने पीते हैं पिलाते हैं  
ये तो महफ़िल का तकाज़ा है, पर घर बार अच्छा है  
इज़ज़त है, शोहरत है गाड़ी भी है और बंग्ला भी  
क्या करते हैं क्या नहीं, पर कारोबार अच्छा है  
बेटे हैं शैख़ के और सालाना नमाज़ी भी  
ख़बर अच्छी नहीं तो क्या कमी है, अख़बार अच्छा है  
वह जो बैठें हैं सामने बनकर मियाँ मिठ्ठू से  
राज करेगी बिटिया उनपर ये आसार अच्छा है  
फहरिस्त में तुम भी हो कैफ़ी पर नंबर मिलेगा आख़िरी  
दौरे-हाज़िर के असबाब नहीं सिर्फ़ बरख़ुरदार अच्छा है।



## सुनों! औरत की फज़ीलत

जिसके नाम से घर में रहती हैर हमत, वह ज़ात है औरत  
तू जिस माँ का बेटा है, वह ज़ात है औरत  
जिसके क़दमों तले है जन्नत, वह ज़ात है औरत  
तू जिस बहन का भाई है, वह ज़ात है औरत  
जो दुनिया में तेरा आधा ईमान है, वह ज़ात है औरत  
तू जहान में बाप बनेगा जिससे, वह ज़ात है औरत  
तू जिसे बेटी कहेगा, वह ज़ात भी है औरत  
कुछ तो एहताराम करो कैफ़ी, जिसका नाम अल्लाह ने रखा है औरत



## मेरी खुदारी

अब जब कभी मैं आपकी दावत पर आऊँगा तो नमकीन नहीं सिर्फ मीठा-मीठा ही खाऊँगा वापसी पर मिठास आपके ही पास छोड़ आऊँगा मैं खुद्वार हूँ, इसलिए नमक को बदनाम नहीं कर पाऊँगा

इल्तिजा है दावत में नमकीन न पेश किया जाए मेरी खुद्वारी को अपनी ही खुद्वारी समझी जाए जब मैं कभी अपनी खुद्वारी को बेच आऊँगा तो आपको दावत पर अपने घर जरूर बुलाऊँगा

फिर जब हम दोनों एक सफ में खड़े होंगे कैफी तो नमक क्या, हराम व हलाल सब भूल जाऊँगा



## किसने जुबाँ सी डाली ?

जुबाँ तो दी है 'उसने', पर उसने उसे सी डाली है बुलाकर अपने घर पर उसने, दरवाज़ा बंद कर डाला है वो अब कहता है, उसको हमारी कोई ज़रूरत नहीं है फिर भी हमने उसके लिए कसीदा लिख डाला है

कोई कह दे उससे, हमारी ज़रूरत सबको होती आई है नमक की तरह हमने, हर सालन में जगह पाई है कम होने पर भी हमने हमेशा बड़ी चर्चा पाई है और ज़्यादा होने पर तो दुनिया हमारी शैदाई है

आज उनके सिर पर ताज की वजह भी हम ही तो हैं और आज अपनी ज़िल्लत की वजह भी हम ही तो हैं हम गर अपनी बातें अपनों में अब भी, उर्दू में ही करेंगे तो अपनी नस्लों की बर्बादी का सबब भी हम ही बनेंगे

अगली नस्लें जब भी तारीख़ हमारी पढ़ेंगी कैफ़ी कैसे फिर माफ़ी के तलबगार हम उनसे होंगे



## धीरे चल ऐ खुशी !

धीरे चल ऐ खुशी, अभी कई राज़ बताना बाकी है  
किसी का कर्ज़ तो किसी का दर्द सुनाना बाकी है  
रफ़्तार में अगर तू चलने लगी, फिर कई लोग रुठ जाएँगे  
ग़म को छुपाना बाकी है रुठो को मनाना बाकी है  
धीरे चल ऐ खुशी, अभी कई राज़ बताना बाकी है

इतनी जल्दी न कर, बड़ी मुश्किल से तू आयी है  
अभी तो दहलीज़ ही पार की है, आंगन तक आना बाकी है  
मेरा मुक़द्दर उस फटे हुए बादल जैसा है  
बिजली ही चमकती है बस, बरसात आना बाकी है  
धीरे चल ऐ खुशी, अभी कई राज़ बताना बाकी है

कुछ हसरतों की चाह में, कुछ काम अभी बाकी है  
ज़िंदगी क्यों है एक पहेली, ये पूछना बाकी है  
तू क्यों नाराज़ हुई, फिर क्यों तू मान गई  
दुआओं में असर कितना पाया, बच्चों को बताना बाकी है  
धीरे चल ऐ खुशी, अभी कई राज़ बताना बाकी है

औरों के ग़म को भी तो कैफ़ी, खुशी में बदलना बाकी है  
थोड़ी साँसे और दे दे, "उनकी खुशी" देखना बाकी है  
धीरे चल ऐ खुशी, अभी कई राज़ बताना बाकी है



## निगाहों ने हुस्नों जमाल देखा

निगाहों ने देखा था कभी हुस्नों जमाल उनका  
बालों में लगा मोगरा और चाल में ऐतमाद<sup>1</sup> देखा है

झुकी हुई नज़रें और ख़ामोश जुबान थी रहती  
बुरी नज़र से बचने के लिए, रुख़सार<sup>2</sup> पर तिल भी देखा है

आखों से झड़ते मोती जुल्फों से आती खुशबू  
लगता था ज़िंदगी ने एक सच्चा ख़्वाब देखा है

ज़िंदा तो अभी वो हैं, पर दिखती हैं बहुत गुमसुम  
लगता है आज उन्होंने ज़िंदगी का ज़वाल<sup>3</sup> देखा है

कभी समझाया था उन्हें, के संभल-संभल कर चलना  
मानी न बात मेरी, उसी का शायद आज अंजाम देखा है

न जाने किसने उन्हें दे दिया दगा, ऐ कैफ़ी!  
हमने तो आज उनको मानिंद-ए-लाश<sup>4</sup> देखा है

1-आत्मविश्वास, 2-गाल 3-पतन, 4-लाश की तरह



## हालत-ए- सकरात

जख़्म बहुत गहरा है और सांसें भी मध्यम हैं फिर भी ठीक हो जाएगा कहने की रस्म जारी है मेरे जाने के बाद आप मुझे बहुत याद करेंगे क्योंकि एक तवील उम्र हमने साथ गुज़ारी है

रात हो चली कोई चादर तो बदल दे मेरी दिन की चादर तो अब मैली नज़र आती है क्यों कहकहे बंद हैं, और आंखों में हैं आंसू क्या अब भी मुझमें कोई बुराई नज़र आती है

लोग देख कर परेशान क्यों हैं कैफ़ी, हालते सकरात क्या मेरी आज की कैफ़ियत उनके कल की याद-देहानी है?



## संघर्ष

संघर्ष ज़रूरी है, सफलता के लिए  
सफलता ज़रूरी नहीं हर संघर्ष के बाद  
सपना कुछ और देखते हैं, हौसले भी बढ़ते हैं  
ज़रूरी नहीं वह सच हों, आँख खुल जाने के बाद  
लगन और विश्वास हो, दुआएं तेरे साथ हो  
किनारे मिल ही जाते हैं, कितने तूफानों के बाद  
बादल गरजेंगे, बिजली भी चमकेगी  
ज़रूरी नहीं बारिश हो, घटा छा जाने के बाद  
एक दिन लोग आएंगे, माला चढ़ाएंगे  
सिर्फ अच्छाई गिनाएंगे, तुम्हारे जाने के बाद  
अंहकार में रावण मरा, और मरा वो कंस रवि  
कृष्ण फिर भी जिंदा है कैफ़ी, इतने षडयंत्रों के बाद



## आखिरी वक्त

जिस्म की जान पैरों से निकलती देख रहा हूँ  
दूसरे को क्या एहसास जो मैं अभी सोच रहा हूँ

अब फ़क़त इतेजार है लोगों को मेरी आँखें खुली रहने का  
लोगों ने शुरू कर दिया है कुरआन ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने का

मेरे कानों में भी आने लगी है आवाज़ सूरा-यासीन<sup>1</sup> की  
लगता है शुरुआत हो गई है रुह कब्ज़ होने की

माँ की चीख़ भी अब थोड़ी-थोड़ी सुनाई देने लगी है  
बीवी की बेवगी<sup>2</sup> में भी कुछ वक्त अभी बाकी है

रुह जाती हुई जब खुली आँखों ने भी देख लिया  
तो किसी ने मेरी आँखों को जल्दी से बंद कर दिया

फिर जल्द से जल्द नहलाकर नए कपड़ों में सजाकर  
आखिरी मंजिल तक मुझे लोगों ने पहुँचा ही दिया

वहाँ तो तुम अकेले होंगे कैफ़ी कब्र में सवालियों के साथ  
जन्नत नसीब हो तुम्हें गुनाहों की माफी के साथ

अर्थ-

1- कुरान का एक अध्याय 2. विधवा



## آخری وقت

جسم کی جان پیروں سے نکلتے دیکھ رہا ہوں  
دوسروں کو کیا احساس جو میں ابھی سوچ رہا ہوں

اب فقط انتظار ہے لوگوں کو میری آنکھیں کھلی رہنے کا  
کچھ لوگوں نے شروع کر دیا ہے قرآن زور سے پڑھنے کا

میرے کانوں میں آنے لگی ہے آواز سورہ یٰسین کی  
لگتا ہے ابتدا ہو گئی ہے میری روح قبض ہونے کی

ماں کی چیخ بھی اب تھوڑی-تھوڑی سنائی دینے لگی ہے  
بیوی کی بیوگی میں بھی کچھ وقت ابھی باقی ہے

روح جاتی ہوئی جب کھلی آنکھوں نے بھی دیکھ لیا  
تو کسی نے میری آنکھوں کو جلدی سے بند کر دیا

پھر جلد سے جلد نہلا کر نئے کپڑوں میں سجا کر  
آخری منزل تک مجھے لوگوں نے پہنچا ہی دیا

وہاں تو تم اکیلے ہو گے کیفی قبر میں سوالوں کے ساتھ  
جنت نصیب ہو تمہیں گناہوں کی معافی کے ساتھ



## کیوں نہ قہر آجائے

جب کردار ہی ہمارا بے ایمان ہو جائے  
ہر در پر جھکانا سر اب شان ہو جائے

جب جھوٹ کے لئے سچ کی قسم عام ہو جائے  
اور طاقوں پر سجانے کے لئے قرآن ہو جائے

میرے رزق کی برکت جائے تو چلی جائے  
پر گھر میں کسی مہمان کی آمد نہ ہو جائے

فرمانِ خدا سے کنارہ کشی جب عام ہو جائے  
پھر اُس قوم کی رسوائی کیوں نہ سر عام ہو جائے

جب اپنی خلافت بھی غیروں کو چلی جائے  
تو بجائے مٹی-کفن بھی کیوں نہ راکھ ہو جائے!

وَتُعْزَمُ مِّنْ نَّشْءٍ وَتُذَلُّ مِّنْ نَّشْءٍ کہتا ہے یہ قرآن  
پھر بھی نہ سمجھے کیسی، تو قیامت کیوں نہ آجائے



## دھیرے چل اے خوشی!

دھیرے چل اے خوشی، ابھی تجھے راز بتانا باقی ہے  
کسی کا قرض تو کسی کا درد سنانا باقی ہے  
رفقار میں اگر تو چلنے لگی، پھر کئی لوگ روٹھ جائیں گے  
غم کو چھپانا باقی ہے، روٹھو کو منانا باقی ہے  
دھیرے چل اے خوشی، ابھی تجھے راز بتانا باقی ہے

اتنی جلدی نہ کر، بڑی مشکل سے تو آئی ہے  
ابھی تو دہلیز ہی پار کی ہے، آنگن تک آنا باقی ہے  
میرا مقدر اس پھٹے ہوئے بادل جیسا ہے  
بجلی ہی چمکتی ہے بس، برسات آنا باقی ہے  
دھیرے چل اے خوشی، ابھی تجھے راز بتانا باقی ہے

کچھ حسرتوں کی چاہ میں، کچھ کام ابھی باقی ہے  
زندگی کیوں ہے پھیلی، یہ پوچھنا باقی ہے  
تو کیوں ناراض ہوئی، پھر کیوں تو مان گئی  
دعاؤں میں اثر کتنا پایا، یہ بچوں کو بتانا باقی ہے  
دھیرے چل اے خوشی، ابھی کئی راز بتانا باقی ہے

اوروں کے غم کو بھی تو کینی، خوشی میں بدلنا باقی ہے  
تھوڑی سانسیں اور دے دے، ان کی خوشی دیکھنا باقی ہے  
دھیرے چل اے خوشی، ابھی کئی راز بتانا باقی ہے



## میرا جرم بس اتنا

کبھی اُن کو کہوں اپنا، کبھی تم کو کہوں اپنا  
کبھی دن کو سمجھوں اپنا، کبھی رات کو اپنا  
کبھی اکیلے میں رونا، کبھی محفل میں ہنسنا  
میرا جرم بس اتنا، کہ دیکھا کیوں ایسا سپنا

زندگی بھی اپنی اور جینا یہاں پر اپنا  
نگاہیں بھی ہیں اپنی اور نشانہ بھی اپنا  
حقیقت سے دور رہ کر سننا فسانہ اپنا  
میرا جرم بس اتنا، کہ دیکھا کیوں ایسا سپنا

یہ دنیا ہے سب کے لئے، صرف ایک مسافر خانہ  
کبھی دیکھا ہے تم نے برف کو کہیں پر رک جانا  
چاہئے ہمیں بھی تو تھا، اب تک سنبھل ہی جانا  
میرا جرم بس اتنا، کہ دیکھا کیوں ایسا سپنا

شرم و حیا کا قصہ اب ہو گیا پرانا  
بے حیائی سے ہی روشن ہوتا ہے اب زمانہ  
کیسے نہ فکر ان کو کہ ایک دن ہے فنا ہو جانا  
اور باتیں تمہاری سب کو اب لگتی ہیں احمقانہ

میرا جرم بس اتنا، کہ دیکھا کیوں ایسا سپنا  
میرا جرم بس اتنا، کہ میں نے دنیا کو نہ پہچانا



## نام کے مسلمان؟

زبان رکتی نہیں، نظریں جھکتی نہیں  
سلام کریں تو، جواب بھی ملنے نہیں  
پانچ وقت کی نماز بھی روز پڑھتے نہیں  
لطفِ دنیا میں آخرت کی فکر نہیں

## اب ذرا بتاؤ؟

آجکل حلال سے زیادہ حرام پر نظر ہے کہ نہیں؟  
مرد سے زیادہ عورت کی فضیلت اسلام میں ہے کہ نہیں؟  
اور تم آدھے کپڑوں میں عورت کو رکھتے ہو کہ نہیں؟  
اس کرنی کی وجہ سے ہی اسلام بدنام ہے کہ نہیں؟

بسم اللہ سے حرام کو حلال بناتے ہو کہ نہیں؟  
شراب۔ کباب کو زندگی کا حصہ بناتے ہو کہ نہیں  
لطفِ دنیا میں رہ کر عذابِ قبر بھولے ہو کہ نہیں؟  
پھر بھی اللہ سے ہی شکایت کرتے ہو کہ ہماری سنتے نہیں؟

اللہ سے ڈر نہیں، محمدؐ سے محبت نہیں  
پر خواہش ذرا پوچھ لیجئے میاں جی سے  
تو جنت سے کم کی بات کبھی کرتے نہیں  
جو آسانی سے کئی کسی کو ملتی نہیں



## کس نے زباں کو سی ڈالا

زباں تو دی ہے اس نے،، پر اس نے اس کو سی ڈالا  
بلا کر اپنے گھر پر اس نے، دروازہ بند کر ڈالا  
وہ اب کہتا ہے، اس کو ہماری کوئی ضرورت نہیں ہے  
پھر بھی ہم نے اس کے لئے قصیدہ لکھ ڈالا

کوئی کہہ دے اس سے، ہماری ضرورت سب کو ہوتی آئی ہے  
نمک کی طرح ہم نے، ہر سالن میں جگہ پائی ہے  
کم ہونے پر بھی ہم نے ہمیشہ بڑی چرچہ پائی ہے  
اور زیادہ ہونے پر تو دنیا ہماری شیدائی ہے

آج ان کے سر پر تاج کی وجہ بھی ہم ہی تو ہیں  
اور آج اپنی ذلت کی وجہ بھی ہم ہی تو ہیں  
ہم گراپنی باتیں اپنوں میں اب بھی اُردو میں ہی کریں گے  
تو اپنی نسلوں کی بربادی کا سبب بھی ہم ہی بنیں گے

اگلی نسلیں جب بھی تاریخ ہماری پڑھیں گی کیسی  
کیسے پھر معافی کے طلب ہم ان سے کریں گے



## جزا اور سزا

دنیا اسی کی اور اسی سے بغاوت  
آخرت بھی اسی کی اور اسی سے عداوت  
کسی کا اَلْغَفَّارُ وَالْقَهَّارُ وہ کبھی  
کسی کا اَلْمُعِزُّ وَالْمُدِیْتُ وہ کبھی  
کسی کا اَلْمُحِیُّ وَالْمُحِیْتُ وہ کبھی  
کسی کا اَلرَّافِعُ وَالْخَافِضُ وہ کبھی  
کسی کا اَلْمُقَدِّمُ وَالْمُؤَخِّرُ وہ کبھی  
کسی کا اَلْعَفُوُّ وَالْمُنْتَقِمُ وہ کبھی  
حکم و عدل سے جہاں پر ملتی ہے جزا  
قہر و تباہی کی ملتی ہے وہاں پر سزا  
باطن اگر محفوظ ہو تو ظاہر بھی محفوظ  
کیا چنوں گے کیفی؟ باطن یا منزل مقصود

اَلْقَهَّارُ - ہمیشہ غالب رہنے والا  
اَلْمُدِیْتُ - ذلت دینے والا  
اَلْمُحِیْتُ - موت دینے والا  
اَلْخَافِضُ - پست کرنے والا  
اَلْمُؤَخِّرُ - پیچھے رکھنے والا  
اَلْمُنْتَقِمُ - بدلہ دینے والا

اَلْغَفَّارُ - زیادہ بخشنے والا  
اَلْمُعِزُّ - عزت دینے والا  
اَلْمُحِیُّ - زندہ کرنے والا  
اَلرَّافِعُ - بلند کرنے والا  
اَلْمُقَدِّمُ - آگے کرنے والا  
اَلْعَفُوُّ - معاف کرنے والا



## کاغذ کو خدا کیوں سمجھتے ہو

گرمی کی تپش ٹھنڈا کر توڑ دیتی ہے

جھم جھم بارش دھوپ کو نچوڑ دیتی ہے

تب جا کر ملتا ہے دانا پانی ہم سب کو

پھر بھی دنیا ہمیشہ شکایت کرتی رہتی ہے

لوگ کیوں نہیں سمجھ پاتے قدرت کی طاقت کو

بنا کر روبوٹ، اب انسان بنانے پر تلے ہیں

کیوں کچھ لوگ خدائی کا دعویٰ کرتے دکھتے ہیں

جو دنیا کے یہ کوائف و حالات دکھتے ہیں

میں جانتا ہوں اپنی حیثیت اس جہاں میں کیفی

اسلئے اپنا ضمیر ہمیشہ خاموش رہتا ہے

وہ یاد دلاتا ہے اپنا معجزہ ہر بار ہمیں

پھر بھی انسان کاغذ کو ہی اپنا خدا کیوں سمجھتا ہے



## تاج پوشی

تاج پوشی گر بدلے بھی تو ہمارا حال نہ بدلے گا  
شکارتی گر بدل بھی گیا تو شکار نہ بدلے گا  
وہی قاتل وہی منصف تو انصاف کیا خاک بدلے گا  
صرف خدا ہی جانے کب ہمارا حال بدلے گا  
حالات پھر پہلے جیسے ہوں گے ایسی امید نہ تھی  
غربت اس قدر بڑھے گی اسکی بھی امید نہ تھی  
بے روزگار جلائیں گے پتلے نیتاؤں کے اسکی بھی امید نہ تھی  
ملک کو اب بچ ہی چلائیں گے اس کی بھی امید نہ تھی  
اب تو عوام کا کہنا ہے۔

ہمیں تو لوٹ لیا ان سب تاجداروں نے  
جھوٹے جھوٹے وعدوں نے پانچ کلوراشن نے  
کیا وعدہ پھر بجلی پانی مفت دینے کا ہمیں  
جھانسا دے دیا الیکشن لڑنے والوں نے  
ہمیں یقین تھا ہمارے نیتا رہیں گے ساتھ ہر دکھ سکھ میں  
ہمیں کیا پتہ تھا یہ بھی وہی کریں گے اگلے پانچ سالوں میں  
اگلی بار ہم سب کا یہی نعرہ ہوگا انکے لئے  
ہمیں پھر لوٹ لیا وعدہ کرنے والے نیتاؤں نے  
اب ممکن نہیں ہم آئیں جھانسا دینے والوں کے جھانسنے میں  
اس بار تو کہنی ہوں گے، NOTA کا بٹن دبانے والوں میں



## محبت بدنام ہوتی ہے

نہ بھیجو نفرت کا پیغام، محبت بدنام ہوتی ہے  
گنا اور نیم کے بیچ الگ، پر مٹی تو سماں ہوتی ہے  
فطرت کو سنبھالو تم اپنی قسمت بدل جائے گی  
قسمت کے بدلنے سے تمہاری ہمت بھی خود بڑھ جائے گی

کیوں کہ ہمت ہمیشہ ہی نفرت پر بھاری پڑتی ہے  
پیغام بھیجنے سے پہلے اکثر نفرت پالا بدل لیتی ہے  
ہم نے نفرت اور محبت کو بہت قریب سے دیکھا ہے  
ہم جب لڑاتے ہیں انہیں، تب ہی انہیں لڑتے دیکھا ہے

یہ بھی عجیب ہے دنیا کا دستور، جو صدیوں سے دیکھا ہے  
ہار کر بھی نفرت کا بول بالا کچھ دن ضرور ہوتا ہے  
ہمیشہ نفرت پال کر جیا نہیں جا سکتا کینی  
پیار محبت میں جینے کا مزا کچھ اور ہی ہوتا ہے



## بچپن سے بڑھاپے کا سفر

بچپن سے بڑھاپے میں صرف بدلاؤ ہی تو آیا ہے  
سو میں نے بچپن ہی سے، بڑھاپے کو گلے لگایا ہے

بچپن کی ساری ضد کو سبھی کرتے تھے فوراً پوری  
بڑھاپے میں اگر ضد ہو تو سبھی بنا لیتے ہیں دوری

جس نے بھی بنائی تھی دوری، وہ بھی اب بوڑھے ہو گئے  
حالات میرے جیسے دیکھ ان کی آنکھوں سے آنسو نکل گئے

جب چڑیا چگ گئی سب دانہ اور رات ہو گئی  
پھر معافی کی ہوڑ میں سارے گھر والے جمع ہو گئے

یہ بڑھاپا تو خیر کیفی ہو جائے گا ختم جلدی  
پل بھر کی زندگی کو لوگ کیوں اٹل سمجھ گئے



## شباباش گوگل

پتہ نہیں کیوں آج کل میں ہر بات بھولنے لگا ہوں  
میں اسلئے ہر نئی سوچ کو کاغذ پر لکھنے لگا ہوں

نہ معلوم کس نے بلایا مجھ کو اس محفل میں  
جب سے آیا ہوں یہاں، انکو تلاشنے میں لگا ہوں

شکر ہے گوگل کا، جو سب کچھ بتا دیتا ہے مجھ کو  
اس سے پوچھ پوچھ کر، یہ نظم آپکو سنانے لگا ہوں

گوگل کے سرچ میں کل وہ محترمہ مل گئی  
جتکی تلاش میں، میں برسوں سے بھٹکتا رہا ہوں

آپ میری اس نظم کو داد دیں یا پھر کھاج  
کچھ دیر کے لئے میں سب نظر انداز کرنے لگا ہوں

اگر آپ داد دینگے تو میرا فون نمبر گوگل سے مل جائے گا  
ورنہ کھاج میں تو میں، گوگل سے پہچان اپنی مٹانے لگا ہوں

امید ہے کہ لوگ اب داد ہی دیں گے کیفی مجھ کو  
میں تو پہلے کے کھاج کی ہی دشواری زیر کرنے میں لگا ہوں



## غم کا ساتھی نہ تلاشیں....

لوگ میری بات اکثر کیا کرتے ہیں، مگر اپنی خوشی کے لئے  
پر بے چارا غم مٹاتا نہیں کبھی ان خوشیوں سے

اپنے غم کو بتانے کا کوئی ساتھی نہ تلاشیں  
بہتر ہے اسے اپنے دل میں ہی چھپائے رکھیں  
تمہارا غم آج انکو خوشی تو دے رہا ہے  
اس خوشی کو آج اپنی خوشی ہی سمجھیں

سنا ہے میں نے، آجکل نیند نہیں آتی ان کو  
میرے سارے غم، شاید میرے چہرہ نے بتا دیئے ان کو  
اسلئے میرا غم دیکھ کر اب زیادہ پریشان دکھتی ہیں وہ  
رات میں تو دوا کھا کر جلدی سو جاتی ہیں وہ

میں جو ملتا ہوں ان سے، صرف ان کی خوشی کی خاطر  
لیکن وہ پریشان رہتی ہیں، مجھے سمجھانے کے لئے  
میں تو جاگتا ہوں رات بھر، صرف انکی پہرے داری میں  
ایک دن دونوں سو جائیں گے، اور خاک ہو جائیں گے زمانے کے لئے

پھر زمانہ کچھ دن تک تمہیں یاد رکھے گا کہتی  
اور کچھ دن بعد تلاش کر لے گا ایک نیا کہنی



## کوئی روکے ذرا

دکھنے میں تو نظر آتے ہیں کروڑوں مسلمان  
مسجد کو جو آباد رکھیں، ایسے مسلمان ڈھونڈیں ذرا

دنیا میں تو کفر کا بول بالا صاف دکھتا ہے  
پر خود کے کفر پر بھی ہم کبھی سوچیں ذرا

ہم ان کو کہیں کافر، وہ ہم کو کہیں کافر  
آپس میں جاری فتوؤں کو بھی، ہم سب مل کر روکیں ذرا

ہم بتلا ہیں کہیں زیادہ ان سے، روز کے کفر میں  
پھر کافر صرف ان کو ہی کہیں، اس پر بھی سوچیں ذرا

پاجامہ ٹخنوں سے اوپر، سر پر ٹوپی اور پیشانی پر زیبہ  
اور دل میں بغض، اس کا انجام بھی قرآن سے سمجھیں ذرا

میلاد النبی منانے پر آخر ہر سال جنگ کیوں ہوتی ہے؟  
دونوں ساتھ بیٹھیں، اس کا بھی تو کوئی حل نکالیں ذرا

یہ سب حالات اشارہ کرتے ہیں قیامت کی نشانی کیفی  
ان سب حالات کو فکر مند نظریہ سے ہم سبھی دیکھیں ذرا



## عائشہ تم نے اچھا نہیں کیا

حسین لمحہ زندگی ختم کر لی، تھوڑے سے بوجھ سے اوب کر  
خودکشی کر گئی ایک مظلوم بیچاری، ندی میں ڈوب کر

اندر سے وہ خوف زدہ لگ رہی تھی، پر چہرے پر مسکان تھی  
لگ رہی تھی فیصلے سے پہلے، جیسے کلی کوئی مرجھائی تھی

کل تک وہ بے فکر تھی، پر آج کیسے وہ خاموش ہو گئی  
جاننے ہیں، اس کی خاموشی کی وجہ کیا ہو گئی

ویڈیو میں دکھ رہی تھی، وہ کسی جذبات میں  
پتہ چلا، رہتا تھا ایک بھیڑیا اس کے ساتھ میں

پانی بھی پیا، چیخ بھی نکلی ہو گی اور جان آخر نکل گئی  
لاش اس بے چاری کی ندی کی دھارا میں دور کہیں بہہ گئی

یہ بھی عجیب ہے، کتنے بے خبر تھے اس کے گھر والے  
دیکھ لاش صبح، دنگ رہ گئے اس کے گھر والے

جو بھی کیا جذبات میں آکر عائشہ تم نے اچھا نہیں کیا  
ایسی موت تو حرام ہے کیفی، جنت چھوڑ کر جہنم کو کیوں اپنایا



## سنو! عورت کی فضیلت

جس کے نام سے گھر میں رہتی ہے رحمت، وہ ذات ہے عورت  
تو جس ماں کا بیٹا ہے، وہ ذات ہے عورت  
جس کے قدموں تلے ہے جنت، وہ ذات ہے عورت  
تو جس بہن کا ہے بھائی، وہ ذات ہے عورت  
جو دنیا میں تیرا نصف ایمان ہے، وہ ذات ہے عورت  
تو جہاں میں باپ بنے گا جس سے، وہ ذات ہے عورت  
تو جسے بیٹی کہے گا، وہ ذات ہے عورت  
کچھ تو احترام کرو کیٹی، جس کا نام اللہ نے خود رکھا ہے عورت



## نیولا اور سانپ کی سیاست

ہمارے شوق تمہارے شوق سے کافی ملتے ہیں  
ہمارے خوف بھی تمہارے خوف سے بہت ملتے ہیں  
تم سانپ سے ڈرتے ہو، ہم اسکے زہر سے  
پالا ہے نیولا ہم نے بھی، سانپ کے ڈر سے

کر دیتا ہوں سانپ آگے، اسے ڈرانے کے لئے میں  
جب سانپ سے خطرہ ہو، نیولے کو آگے کرتا ہوں میں  
دونوں کی لڑائی کا مزہ لیتے ہیں ہم سبھی  
اور کاروبار زہر کا چلاتے ہیں صرف وہی

آج کل کی سیاست یہی دیتی ہے درس کیفی  
تبھی تو سانپ نیولا، دونوں پالے جاتے ہیں پارٹیوں میں  
کب کس کی ضرورت پڑ جائے سیاست میں  
دونوں ہی کام آتے ہیں، الیکشن کے زمانے میں



## کہہ دو چلمن سے....

کہہ دو چلمن سے کچھ دن اور عزت کو سنبھالے  
لوگ بیٹھے ہیں اسی انتظار میں کی چلمن کو گرا ڈالے  
ابھی تو میری سانس چل رہی ہے، اُمید بھی ہے زندہ  
ورنہ کس - کس کو بتائے گا رسوائی کا سبب، یہ بندہ

## چلمن نے کہا....

سانس بھی چلے گی، اُمید بھی بڑھے گی  
یقین رکھ، کبھی نہ ہونے دینگے رسوائی  
بس انتظار کر رات ڈھلنے کا اے کیفی!  
وہ مٹ جائیں گے دیکھ کر سورج کی رہنمائی



## سالگرہ کی حقیقت

عمر کم ہونے کا بھی جشن مناتے ہیں لوگ  
خود کو پروانے کی طرح ہر سال جلاتے ہیں لوگ  
شکر ہے خدا کا، کہ ہم میں سے زیادہ تر بھوکے - ننگے ہیں  
ورنہ اس چلن سے ملک کی آبادی کو ہی خطرہ میں ڈال دیتے لوگ

کیک کاٹتے ہیں اور موم بتی بھی بجھاتے ہیں لوگ  
پھر سالگرہ مبارک کا زور زور سے گانا گاتے ہیں لوگ  
مہمان کیک کھاتے ہیں، کھانا کھاتے ہیں، پھر چلے جاتے ہیں  
مہمان کا تحفہ دیکھ کر انکی حیثیت کو سمجھ جاتے ہیں لوگ

اتفاق دیکھیں اس سال کتنی جلدی پھر وہی تاریخ آگئی  
لیکن خوشی کی جگہ، اس سال ان کی برسی منا رہے ہیں لوگ  
نہ کیک، نہ موم بتی، صرف تصویر پر مالا چڑھا رہے ہیں لوگ  
انتظار میں بیٹھے غریبوں کو آج بلا کر کھانا کھلا رہے ہیں لوگ

زندگی کی تلخ حقیقت کو، کیوں نہیں مانتے کینی لوگ؟  
اس بے معنی چلن کو کیوں نہیں ختم کر ڈالتے ہیں لوگ؟



## آج اور کل

زندگی گزار دی میں نے، مے خانے میں بیٹھ کر  
اب وہ کہہ رہے ہیں، ذرا پی کر تو دیکھ لو  
سب کچھ دکھا دیا دنیا کے عاشقوں نے  
اب وہ کہہ رہے ہیں، ذرا عاشقی کر کے دیکھ لو

گاؤں میں اگر ننگا پن ہے تو غریب کہلائیں گے  
امیروں کا ننگا فیشن، شہر میں جا کر دیکھ لو  
جسم پر سلا کپڑا، نہ آنے میں نہ جانے میں  
پھر بھی یہاں امیری غریبی کا فرق دیکھ لو

ماں کی فکر تب تک ہے، جب تک ہیں کنوارے  
شادی کے بعد ماں کو یتیم خانے میں دیکھ لو  
کل بھوک سے وہ مر گیا سڑک کنارے، رات میں  
صبح لوگ کہنے لگے، پینے کا انجام تو دیکھ لو

اب دنیا کو دیکھنا کتنا آسان ہو گیا  
اپنے موبائل پر ہی، سارا جہان دیکھ لو  
بچوں کو بہلانے کا بھی کیا نیا انداز آ گیا  
کارٹون لگا کر دے دو، پھر والدین کا سکون دیکھ لو

گاؤں کی رسوائی گھر میں، اور بیت الخلاء باہر ہوا کرتے تھے  
شہر میں آکر، رسوائی اور بیت الخلاء کو ایک ساتھ دیکھ لو  
اپنوں کی فکر میں ہی کیفی نے پوری زندگی گزار دی  
اپنوں نے ہی آج اس کو چھوڑا، جا کر اپنی آنکھوں سے دیکھ لو



## چندر مکھی بنام سورج مکھی

تم کو رکھا تھا ہمیشہ میں نے، چندر مکھی کی طرح  
یہ کیا ہو گیا جو لگنے لگی سورج مکھی کی طرح  
مجھ کو تم آگئی تھی نظر اماوس کی رات میں  
دن میں تم کس کی تلاش میں ہو اجنبی کی طرح

اب تو احساس ہو رہا ہوگا اپنی محبت کا  
میرا سمجھانا بھی یاد آرہا ہوگا اچھی طرح  
کاش صرف ایک ضد پر نہیں اڑتی اس دن  
تو آج بھی تم دکھتی چندر مکھی کی طرح

دماغ سے سوچا نہیں اس دن تم نے، جذبات میں بہہ کر  
دل کو سمجھاؤ، ایک بار پھر پہلے کی طرح  
دونوں معصوم انتظار میں ہیں، کب ہوگی ہماری صلح  
جلدی آجاؤ سورج مکھی، بن کر چندر مکھی کی طرح

وقت گزرا نہیں اب بھی، سمجھوتے کی ہے گنجائش  
دونوں بچے اب بھی ملتے ہیں عدالت میں پہلے کی طرح  
عدالت کے چکر میں کس کا بھلا ہوا ہے کیفی  
کیوں نہ صلح کر، رہنے لگیں ہم دونوں پہلے کی طرح



## بیٹی تو۔۔۔

جب آئی باپ کے گھر، خوشیوں کا انبار لائی تھی تو  
جب گئی سسرال، تو غموں کا پہاڑ چھوڑ گئی تو  
باپ کے کاندھے پر سکون کی نیند سوتی تھی تو  
باپ کو گھوڑا بنا کر کھل کھلاتی تھی تو  
ماں سے ضد کرنے پر، جب مار کھاتی تھی تو  
باپ کی بانہوں میں آکر خاموش ہو جاتی تھی تو  
ماں نے پیدا کیا، میں نے ناز و نخروں سے پالا تجھے  
یادوں میں اپنی میں نے، ہمیشہ بسایا تجھے  
میں مجبور تھا، تجھے نئے بندھن سے باندھنے کے لئے  
معاف کرنا مجھے، اس رسم کو نبھانے کے لئے  
تجھے مبارک ہو نیا گھر، باپ کی دعا ہے میری بیٹی  
تم دونوں ہمیشہ سلامت رہو، یہی دعا ہے، میری بیٹی  
فخر ہے مجھ کو کہ، تیری ڈولی اٹھی میرے ہاتھوں سے  
غم ہوگا، جب دیکھے گی میرا جنازہ اپنی آنکھوں سے  
باپ۔ بیٹی کا رشتہ تو خدا نے جنت تک کا دیا  
اسلئے باپ کے لئے جنت کا دروازہ بیٹی کو کھولنے کو کہا  
میں اب آخری سانس لے رہا ہوں کیٹی، اپنی زندگی کی  
آکر چوم لینا جب اٹھنے لگے میت تیرے باپ کی



## ڈر ہے کہیں بک نہ جائے

پانی بچا جا رہا ہے برسوں سے، ڈر ہے کہیں ہوا بھی بک نہ جائے  
مفت اناج، بجلی پاکر، ڈر ہے کہیں عوام کاہل نہ ہو جائے  
تعلیم آن لائن ہو گئی ہے، ڈر ہے کہیں اسکول بند نہ ہو جائے  
ہر چیز میں کیمیکل ہے، ڈر ہے کہیں مرنے کی رفتار نہ بڑھ جائے  
سیاستدان سبزیوں کی طرح بک رہے ہیں، ڈر ہے ہٹلر پھر نہ آجائے  
ایکشن کمیشن پر لیڈروں کا دباؤ ہے، ڈر ہے کہیں ایکشن ہونا بند نہ ہو جائے  
بک رہی ہیں صدیوں سے زمین، ڈر ہے آسمان بھی بکنے نہ لگ جائے  
چاند پر بھی ہونے لگا سودا، ڈر ہے کہیں ستاروں کی باری نہ آجائے  
جنگل تو سارے کٹ رہے ہیں، ڈر ہے کہیں تمام چرند و پرند مرنے جائیں  
مذہب کے قائدین کی حرکتوں سے، ڈر ہے کہیں مذہب ہی مٹ نہ جائے  
پیسوں میں دولہا بکتا ہے، ڈر ہے کہیں دلہن بھی بک نہ جائے  
بغیر شادی کے ہی ماں-باپ بن رہے ہیں، ڈر ہے شادی کا رواج ہی ختم نہ ہو جائے  
شہر کی لڑکیاں کپڑے کم پہنتی ہیں، ڈر ہے یہ چلن گاؤں میں نہ آجائے  
ہمارے چاروں ستون گرنے پر لگے ہیں، ڈر ہے کہیں خانہ جنگی نہ ہو جائے  
ہر طرف رشوت خوری ہے، ڈر ہے کہیں ملک سری لنکا نہ بن جائے  
ملک کا ہر فرد مقروض ہے، ڈر ہے کہیں خودکشی کی رفتار نہ بڑھ جائے  
جب بکنے لگے "ایم پی" اور "ایم ایل اے"، ڈر ہے کہیں پارلیمنٹ نہ بک جائے  
اب اسی لیے کھلی رکھتا ہے مردہ آنکھیں کیفی، ڈر ہے اس کو کہیں کفن بھی بک نہ جائے



## سانس تھمنے کو ہے۔۔۔

پاس بیٹھو ذرا، اب سانس تھمنے کو ہے  
سانس تھم جائے، پھر تم کنارہ کرنا

جس دل کا رنگ بھی، اب سیاہ پڑنے کو ہے  
اس دل کو، بدلنے کی کوشش نہ کرنا

زندگی کی الجھنیں بھی، اب سمٹنے کو ہیں  
اس کے بعد ہی مہندی کا رنگ، تم سیاہ کرنا

جسم تیار ہے میرا، اب کہنے کو الوداع  
ہے تو مشکل، پر چہرے کو تم اداس مت کرنا

گنہگار ہوں، رحمت کا طلبگار بھی ہوں  
تم بھی میرے واسطہ مغفرت کی دعاء کیا کرنا

میرے چند سوالوں کے جواب، جو ادھورے رہ گئے ہیں  
ان کا جواب تم کسی اور سے طلب نہ کرنا

دنیا کی محبت اور وفا، دونوں نے دیکھ لی کینی  
اس لئے تم بھی اب صرف اُس جہان کی فکر ہی کرنا

منتظر رہوں گا میں، تمہارے خیر مقدم کے لئے  
میرے انتظار کو تم مزید طویل مت کرنا



## بیچا ایمان تب شان و شوکت آئی

بیچا جب اپنا ایمان، تب گھر میں شان و شوکت آئی ہے  
شان و شوکت اپنے ساتھ کئی رشتہ داروں کو بھی لائی ہے

زندگی کی خوشیاں بیچ کر، خریدی ہم نے تنہائی ہے  
تنہائی میں جی کر اپنی پرسکون زندگی ہم نے گنوائی ہے

پرسکون نہ رہنے پر Sugar اور B.P. نے اپنی جگہ بنائی ہے  
شکر نمک بھی روٹھ کر اب گھر میں، گولی کی شکل میں آئی ہے

پنکھے میں بھی کل نیند نہ آئی تو آج A.C. لگوائی ہے  
مجھ کے ڈر سے مجھردانی نہیں، گڈ نائٹ جلائی ہے

پھر بھی جب نیند نہ آئی تو دو پیگ شراب چڑھائی ہے  
تب جا کر کہیں ۴-۶ گھنٹے کی نیند کل رات آئی ہے

جب سے بیگھوں کا مکان چھوڑ، بہوشہر کے فلیٹ میں آئی ہے  
اسی دن سے زندگی کی مٹھاس، تلخی میں بدل آئی ہے

آج پھر ابا اماں کی بچپن کی نصیحت یاد آئی ہے  
انکے پاس، ہماری حاضری ہی انکے لئے ایک خوشی لائی ہے

لگتا ہے اب، دنیا سے ابا کی رخصتی ہونے والی ہے  
اسلئے، جائیداد کے لالچوں نے گھر پر بھیڑ لگائی ہے

یہی زندگی کی حقیقت ہے، جو اپنے دل کو سمجھانی ہے  
ایمان مت بیچو اپنا کیسے اسی میں بھلائی ہے



## پڑوسی کا ایک لاکھ کا بکرا

پڑوسی ہو گئے خوش کہ پڑوس میں ایک لاکھ کا بکرا آیا ہے  
ابا بھی ہوئے خوش کہ بیٹا حملہ میں نام کر آیا ہے  
انتظار میں ہیں پڑوسی کہ اس سال کلو میں گوشت آئے گا  
پتہ نہیں ہے انکو کہ گوشت سارا انکے فرنیج میں ہی سما جائے گا

کوئی ذرا پوچھے ان سے، تم قربانی کس کے لئے کرو گے  
اللہ کی راہ میں یا حملہ میں حیثیت دکھانے کو کرو گے  
قربانی اللہ کے لئے اور نہ گوشت حقداروں کے لئے ہو  
یہ کیسی قربانی جو ثواب کے بجائے عذاب کے لئے ہو

حیثیت میں بھی رکھتا ہوں، دو لاکھ کا بکرا خریدنے کی  
پر کل رات میرے پڑوسی کو، دل کا دورہ پڑ گیا  
مجبوری دیکھ پڑوسی کو علاج کے لئے ڈیڑھ لاکھ دے آیا  
اور بچے پچاس ہزار کا ہی بکرا، میں گھر لے آیا

کیا کینی کو لے جاتا جنت میں دو لاکھ کا بکرا  
اور پچاس ہزار والے نے پیدا کر دیا کوئی خطرہ  
اللہ کو نہیں چاہیے مہنگا قربانی کا بکرا  
وہ تو دیکھتا ہے بندوں میں قربانی کا جذبہ

لاکھوں کے بکرے سے پل صراط تو کیا، دنیا کا کوئی پل بھی پار نہیں کر سکتے  
ہزار کے بکرے اگر اللہ کی قبولیت پا جائیں، تو انسان پل صراط تو کیا جنت بھی پا جائیں



## بتادے مجھے

ماں تو نے جنم تو دیا، پر تقدیر کیوں نہیں لکھی میری، بتادے مجھے  
میں تمہارے لئے تو کچھ کر نہ سکا، تو نے جنم کیوں دیا، بتادے مجھے  
بچپن میں دیکر آنچل اپنا، بڑھاپا کس پر چھوڑ دیا، بتادے مجھے  
ماں میں تو تیرا بیٹا ہوں، پر میرا کوئی بیٹا نہیں، جاؤں کہاں، بتادے مجھے

ماں تیری گود تک ہی بہتر تھا میں، تو نے بڑا کیوں کیا، بتادے مجھے  
تیرا دودھ پینے تک ہی کیوں نہ زندہ رہا، بتادے مجھے  
میرا بچپن ہی بہتر تھا، پھر تو نے بڑا کیوں کیا، بتادے مجھے  
میں ہوں مشکل میں، پر تو اب بھی ہے کیوں پریشان، بتادے مجھے

یہ دنیا ظالموں کی بستی ہے، کہاں جاؤں اب میں، بتادے مجھے  
تیری ہر بات میرے سر آنکھوں پر تھی، وہ حالات کیسے لاؤں، بتادے مجھے  
تھکا دیا ہے تجھ کو سوال کرتے کرتے، اب کس سے کروں سوال، بتادے مجھے  
ر لایا تجھ کو ہنسانے سے زیادہ میں نے، اب جنت ملے گی کیسے، بتادے مجھے

میں حقدار جنت کا، ہوں تو نہیں، پھر بیروی کس سے کراؤں، بتادے مجھے  
سب رشتے اب بوجھل لگے، تیری یاد آئے تو بھلاؤں کیسے، بتادے مجھے  
تجھ سے بڑا نہ کوئی اب رہ گیا جہاں میں، آکر پھر بہلا دے مجھے  
کیفی کو تیرے پاس آنے سے پہلے، کوئی اچھا راستہ، بتادے مجھے

بچپن میں مرا ہوتا تو کیا جنت ملتی، یہ بات صحیح ہے؟ بتادے مجھے  
ابا کی خیریت بھی جانتا نہیں، انکی بھی کوئی خبر خواہوں میں ہی سہی، بتادے مجھے



## اب کے مسلمان اور تب کے مسلمان

اب وہ انگلستان میں پڑھائی کرنا چاہتے ہیں  
تب وہ مصر کے جامعہ الازہر میں پڑھائی کرنا چاہتے تھے  
اب وہ امریکہ اور کناڈا میں نوکری کرنا چاہتے ہیں  
تب وہ معاشرہ کی بھلائی کے لئے کہیں بھی کام کرنے کو تیار تھے  
اب وہ انگریزی بولنے میں فخر محسوس کرتے ہیں  
تب وہ عربی اور اردو سیکھنے اور بولنے میں فخر محسوس کرتے تھے  
اب وہ چائیز کھانا کھانے میں خوشی محسوس کرتے ہیں  
تب وہ کسی بھی حلال کھانے سے خوش ہو جایا کرتے تھے  
اب وہ جاپانی الیکٹرانک کے استعمال کو بہتر مانتے ہیں  
تب وہ حدیث اور قرآن کی جانکاری کو کامیابی کی کنجی مانتے تھے  
اب وہ یورپ میں چھٹی بتانے کا مزالینا چاہتے ہیں  
تب وہ مکہ مدینہ میں چھٹی بتانے میں فخر محسوس کرتے تھے  
اب وہ انگریزی فلموں کا مزالینا چاہتے ہیں  
تب وہ بیغیبروں کی زندگی کو پڑھ کر کامیابی حاصل کرنا چاہتے تھے  
اب وہ نماز اور قرآن کی تلاوت کو ٹال سکتے ہیں  
تب وہ ہر کام کو نماز اور قرآن کی تلاوت کے لئے ٹال دیتے تھے  
اب وہ حرام یا حلال کسی طرح سے بھی پیسہ کمانا چاہتے ہیں  
تب وہ صرف حلال طریقوں سے ہی پیسہ کمانا چاہتے تھے  
اور آخر میں دونوں کی یہی خواہش ہے اور ہوتی تھی کہ وہ مکہ مدینہ میں  
مریں اور وہیں دفن ہوں!

### ہے نہ مزہ کی بات!

پر ایسی حالت میں آپ کی کیا خواہش ہوگی؟ آپ کس کی خواہش کو  
پورا کرنے کی اللہ سے دعا کریں گے؟



## معیارِ زندگی

علم اچھا ہے، عمل اچھا ہے نہ کردار اچھا ہے  
آج کے بھاؤ میں لڑکوں کا بازار اچھا ہے

جاتے ہیں مہ خانے پیتے ہیں اور پلاتے ہیں  
یہ تو محفل کا تقاضا ہے، پر گھر بار اچھا ہے

عزت ہے، شہرت ہے، گاڑی بھی ہے اور بنگلہ بھی  
کیا کرتے ہیں کیا نہیں، پر کاروبار اچھا ہے

بیٹے ہیں شیخ کے اور سالانہ نمازی بھی  
خبر اچھی نہیں تو کیا کمی ہے اخبار تو اچھا ہے

وہ جو بیٹھے ہیں سامنے بن کر میاں مٹھوسے  
راج کرے گی بیٹیا اُن پر یہ، آثار اچھا ہے

فہرست میں ہو تم بھی کینی پر نمبر ملے گا آخری  
دورِ حاضر کے اسباب نہیں صرف برخوردار اچھا ہے



آواز انکی آج بھی گونج رہی ہے کانوں میں  
اس آواز کو دل سے میں بھلاؤں اب کیسے  
ابا کی یاد میں آج بھی رکتے نہیں ہیں آنسو  
اناں چھپائے بچوں سے، بہتے آنسو اب کیسے

جب بھی دھوپ بارش میں نکلتا تھا کبھی میں  
دلاتے تھے یاد چھتری کی، گر بھول جاؤں میں  
اب کس کو فکر میری، جانے کے بعد انکے  
رکھی ہوئی ہے جو سر پر میرے، غموں کی گٹھری

میری یہ نصیحت، اب غور سے سُن لیں سبھی لوگ  
ماں باپ کا سایہ ہی مٹاتا ہے سبھی روگ  
چہرے پر مسکراہٹ دیکھ کیئی کے، اندازہ مت لگائیے  
کوئی ترکیب ابا کو بھلانے کی ہو، تو بتائیے



## ابا کو بھلاؤں کیسے

ہاں، ماں کے ہی قدموں میں بچوں کی جنت ہوتی ہے اور باپ ہی اُس جنت کا دروازہ بن کر رہتا ہے جیسے ماں کے قرض کو اتار نہیں سکتا ہے کوئی باپ کا پسینہ بھی سکھا نہیں سکتا ہے کوئی

ابا، جب سے جدا ہوئے آپ ہم سب سے سبھی نے رخ پھیر لیا ہے اپنا، ہم سبھی سے رہے نہ چاچا، ماما اور نہ ہی رہے پھوپھا اماں کو اپنا یہ حال ہم بتائیں کیسے

قبرستان جا کر میں اسلئے مطمئن ہوتا ہوں کہ ابا کو وہاں پر سکون سے سویا پاتا ہوں گر ابا کسی روز نیند سے جاگ جائیں گے ان کو اپنا حال دل رو کر ہم سنائیں گے

پوچھتے ہیں بچے جب ہم سے دادا کے بارے میں بتا نہیں سکتا وہ سچ، جو ہے انکے بارے میں گہری نیند سوائے ہیں وہ، اٹھا نہیں سکتا ہوں میں بس، یہی کہہ کر، بچوں کو بہلا دیتا ہوں میں



## انسانیت حیثیت سے نہیں چلتی

بہت گھر آج بھی ایسے ہیں جہاں عزت ملتی ہے  
وہاں تمہاری جیب کی چلّڑ معنی نہیں رکھتی  
انسانیت میں پہیے لگے ہیں، جو صرف حیثیت سے نہیں چلتے  
یہ ایسی گاڑی ہے جو سب کو ساتھ لے کر چلتی ہے

دنیا انسانیت کی پٹری ہے، اور معصومیت ایک اسٹیشن ہے  
ڈبّہ چھوٹا ہے، سیٹ سب کو نہ ملے، لیکن پھر بھی غنیمت ہے  
دھڑکتی آگ لئے اپنے سینے میں، یہ بھاگتا انجن  
تم گلے لگا کر تو دیکھو، بھول جاؤ گے سب پر اہل

نہ بلایا اگر پڑوسی نے، تو کیوں دینا ان کو اتنا بھاؤ؟  
جتنا زیادہ لگاؤ رکھو گے، اتنا گہرا ملے گا گھاؤ  
اس کے نصیب میں نہیں تھی کینٹی، اب کے رمضان کی افطاری  
وہ کیا زکوٰۃ دیتا ہوگا، جو خود بتا ہے بھکاری



## نہ کمال کا نہ حسن و جمال کا

نہ عاشق ہوں میں کمال کا  
نہ مثال حسن و جمال کا  
میں تو ہوں دریا ایک بہتا ہوا  
جسے ڈر ہے اب تو زوال کا

میں بھٹک گیا تھا تیری راہ سے  
پھر بلا لے تو اُسی راہ پر  
میری راہیں اب تو آسان کر  
میرے گناہوں کو اب معاف کر

تیرا بندہ ہوں، گناہ گار بھی ہوں  
تجھ سے ہی معافی کا طلبگار بھی ہوں  
تو نے وعدہ کیا ہے معافی کا  
تو راستہ نکال میرے حال کا

مجھے مانگنا بھی تو آتا نہیں  
پر کیا، تو حالِ دل جانتا نہیں  
میں حقیر تھا، اور اب بھی حقیر ہوں  
پر تجھ رفیق کا ہی بدنصیب ہوں

میری زندگی اب اداس ہے پر بے ایمانی سے اب تک پاک ہے  
تیرے کرم کی ایک بوند ہی، میری زندگی سنوار دے  
تجھے اپنے حبیب کا ہے واسطہ، تو دکھا دے کھپتی کو صحیح راستہ



## چل سکو گے میرے ساتھ

چل سکو گے مرے ساتھ اس جہان میں، جہاں ڈر ہی ڈر محسوس ہو  
نبھاپاؤ گے میرے ساتھ جہاں اکثریت میں نفرت ہی نفرت ہو  
کیا دے سکو گے مرا ساتھ گر صرف ہار ہی ہار ملیں  
تو پھر کرو ہمت، چلو ڈر اور نفرت سے جا ملیں

اپنی تاریخ کو اتنی جلدی تم کیوں بھول جاتے ہو  
کچھ دیر کی ٹھنڈی ہوا کو جنت کی ہوا کیوں سمجھ لیتے ہو  
اٹھو غفلت سے اب، پانی سر سے اوپر آنے والا ہے  
خود کے ساتھ ساتھ نسلوں کو بھی ڈبونے والا ہے

وہ اس پار بیٹھے ہیں تم اس پار بیٹھے ہو، تو بات کیسے بنے  
وہ سیاست کرتے ہیں تم بغاوت کرتے ہو، تو بات کیسے بنے  
بے خوف، محبت اور جیت کا دعویٰ تو دونوں کرتے ہیں  
مگر ان کو عملی جامہ پہنانے سے دونوں کیوں ڈرتے ہیں

جو کمزور ہوں ان کو صلح حدیبیہ سے سبق لینا چاہیے  
کیسی پھر آٹھ سو سال پرانی حکومت آنی چاہئے



## وقت سے سوال

آؤ وقت سے پوچھیں کیوں غریبی سے ہی ٹکراتے ہو  
غریب کی زندگی میں ہی کیوں ٹھہراؤ زیادہ لاتے ہو  
وقت مسکرایا اور بولا، یہ کھیل ہمارا نہیں ہوتا  
تم امیری اُوپر والے سے کیوں نہیں لکھوا کر آتے ہو؟

کاغذ کے ٹکڑے ہوں ساتھ تو وقت بھی رنگین ہوتا ہے  
سکے جب بچ جائیں تو سمجھیں وقت سنگین ہوتا ہے  
جب پوچھا جا کر ان رنگینیوں سے، وقت کیسے کٹ رہا ہے  
اسنے کہا، ”کاغذ کے ٹکڑوں سے سکھ بہتر ہوتا ہے“

پھر سوچا آج سکھ اُچھال ہی لیتا ہوں کیفی  
غریبی کو مٹا کر امیری لکھوا ہی لیتا ہوں

امیری/غریبی سکھ پر نہیں، قسمت میں لکھی ہوتی ہے  
ہاتھوں کی لکیروں کی طرح کہیں چھوٹی تو کہیں بڑی ہوتی ہے  
تو سکھ نہ اُچھال میرے یار، یہ دھوپ چھاؤں تو چلتی رہتی ہے  
بس ہمت نہ ہار، قسمت دروازے پر کھڑی ہوتی ہے



## ہر حال میں شکر ادا کرنا

خوشی کے پل اگر ملے ہیں تو اتنا بھی نہ اتراؤ  
غم کے پل بس چار دن کے ہیں، ان سے بھی نہ گھبراؤ

یہ دونوں پل انسان کی تقدیر میں وہی لکھتا ہے  
اسلئے دونوں جب بھی ملے، شکر کے ساتھ گلے لگاؤ

چار دن کی چاندنی پھر اندھیری رات کہاوت تو سنی ہے آپ نے  
کیا دن میں کبھی چاند اور رات میں سورج نکلتے دیکھا ہے آپ نے

پھر کیوں پریشان ہو جاتے ہو موسم کی تبدیلی دیکھ کر  
چرند و پرند سے سبق لینا نہیں سیکھا ہے آپ نے

ستم بھی چار دن کے ہوتے ہیں، کیفی نہ گھبراؤ تم  
جو ہو رہا ہے، اسے قسمت سمجھ کر سہہ جاؤ تم



## میں پیسہ ہوں

- مندر میں دیا جائے تو (چڑھاوا کہلاتا ہوں)
- اسکول میں دیا جائے تو (فیس کہلاتا ہوں)
- شادی میں دولہا کو دیا جائے تو (جہیز کہلاتا ہوں)
- کسی کو کچھ وقت کے لئے دیں تو (قرض کہلاتا ہوں)
- قانون کی نافرمانی پر دیں تو (جرمانہ کہلاتا ہوں)
- سرکار کو پیسہ جمع کروں تو (ٹیکس کہلاتا ہوں)
- ریٹائر ہونے پر پیسہ ملا تو (پینشن کہلاتا ہوں)
- اغوا کرنے والے کو پیسہ دیں تو (پھرتی کہلاتا ہوں)
- ہوٹل میں ویٹر کو دیں تو (بخشش کہلاتا ہوں)
- بینک سے ادھار لیں تو (قرض کہلاتا ہوں)
- روز کام کرنے والے مزدوروں کو دیں تو (اجرت کہلاتا ہوں)
- غیر قانونی طریقہ سے پیسہ کمائیں تو (رشوت کہلاتا ہوں)
- پرسیاست دانوں کو پیسہ دیں تو (تحفہ کہلاتا ہوں)



## میں پیسہ ہوں

میں تمہارا پیسہ ہوں، پھر بھی تم مرنے کے بعد اپنے ساتھ نہیں لے جا سکتے  
مگر جیتے جی میں تم کو بہت اُوپر لے جا سکتا ہوں۔

میں پیسہ ہوں!

مجھے پسند کرو صرف اتنا کہ لوگ تم کو ناپسند نہ کرنے لگیں۔

میں پیسہ ہوں

میں خدا تو نہیں پھر بھی لوگ مجھے ان سے کم نہیں مانتے۔

میں پیسہ ہوں!

نمک کی طرح ہوں، جو ضروری تو ہے، مگر ضرورت سے زیادہ ہو تو زندگی کا  
ذائقہ خراب کر دیتا ہے۔

میں پیسہ ہوں!

تاریخ میں بہت ایسی مثالیں مل جائیں گی جنکے پاس میں بے شمار تھا۔  
مگر پھر بھی وہ مرے اور انکے لئے رونے والا کوئی نہیں تھا۔

میں پیسہ ہوں!

کچھ بھی نہیں ہوں، مگر میں فیصلہ کرتا ہوں کہ لوگ تم کو کتنی عزت دیتے ہیں۔

میں پیسہ ہوں!

آپکے پاس ہوا تو سب آپکے ہیں۔  
آپکے پاس نہیں ہوا تو کوئی آپ کا نہیں ہے۔  
مگر میں آپکے پاس ہو کر بھی آپ کا نہیں۔

میں پیسہ ہوں!

میں نئی۔ نئی رشتہ دار یاں بناتا ہوں۔  
اور حقیقی رشتہ دار یاں ختم بھی کر دیتا ہوں۔

میں پیسہ ہوں!

میں سارے فسادات اور الجھنوں کی جڑ ہوں۔  
پر پھر بھی نہ جانے کیوں انسان میرے لیے پاگل رہتے ہیں؟

واہ میں کیسا پیسہ ہوں!

جو تم نے میرے اتنے نام دیئے ہیں۔



## تیری چال الگ، تیری ڈھال الگ

تیرا غم الگ، تیری خوشی الگ  
تیری ہستی الگ، تیری مستی الگ  
تیری چال الگ، تیری ڈھال الگ  
تیرے ہاتھ ملانے کا انداز الگ

تیرا خدا الگ، تیری عبادت الگ  
نہ سورج الگ، نہ چاند الگ  
نہ رات الگ، نہ دن ہی الگ  
نہ تو کھائے سونا، نہ چاندی پئے

تیرا بنگلہ الگ، تیری گاڑی الگ  
’اولڈ ایج ہوم‘ میں رہتے تیرے والدین الگ  
تیری بیوی الگ، تیرے بچے الگ  
کبھی سوچا ہے تو نے یہ کیوں ہیں الگ

تیری غربی میں تھے تیرے ماں باپ ساتھ  
چند سکوں کی خاطر، تو ہو گیا اتاھ  
تو دوائیوں کا لے گا، کتنے دن ساتھ  
تیرے مرنے پر تو لگیں گے چار کندھے اور ہاتھ

نہ تقدیر سے زیادہ تو کچھ پائے گا کینی  
پھر کیوں اتراتا ہے چند سکوں کے لئے



## تلاش ہے ایک کٹر ہندو اور مسلمان کی

زمیں کو آسمان کہنے سے کچھ نہیں ہوگا  
سورج کو چاند سمجھنے سے کچھ نہیں ہوگا  
ڈر کے بلی سے آنکھ موند چوہا نہیں بچتا  
سچ زیادہ دیر اندھیرے میں رہ نہیں سکتا

”بوند-بوند سے سمندر بھرے“ کہاوت ہے، کہاوت رہ گئی  
انساں کرے انساں کی مدد، مثال تھی، مثال ہی رہ گئی  
اب تو سر پر سجتا ہے انکے ہی تاج  
جو کرے انسانیت کا قتل اور کریں راج

نہ علم ہے قرآن کا، نہ گیان ہے وید اور پران کا  
بس نام لیتے ہیں ”اللہ اکبر“ اور ”شری رام“ کا  
کیسی کو تلاش ہے ایک کٹر ہندو اور مسلمان کی  
جس میں نظر آئے نیک دلی ایک سچے انسان کی



## میں بڑا عجیب آدمی ہوں

زہریلے ماحول میں آج کل جیتتا ہوں، پھر بھی ڈرتا نہیں ہوں  
کھانے کو نہیں روٹی، پینے کو نہیں پانی پھر بھی مرتا نہیں ہوں  
سوتا ہوں برسات کے پانی کے ساتھ، لیکن جسم کو دھوتا نہیں ہوں  
کیونکہ میں بڑا عجیب آدمی ہوں۔

دکھ جائے اگر کہیں اچھا ماحول، تو وہاں جاتا نہیں ہوں  
کوئی اگر کھانے کو کچھ دے، تو لے لیتا ہوں، مانگتا نہیں ہوں  
حلال کی تلاش میں ہی ہمیشہ رہتا ہوں، حرام کبھی کھاتا نہیں ہوں  
کیونکہ میں بڑا عجیب آدمی ہوں۔

علم کا سمندر ہے مجھ میں، پر جاہل سے کبھی ٹکراتا نہیں ہوں  
خدا کو جو نہیں سمجھ پایا آج تک، اس کو کبھی سمجھاتا نہیں ہوں  
کنواں گھر کے باہر ہے، اس لئے سمندر میں نہاتا نہیں ہوں  
کیونکہ میں بڑا عجیب آدمی ہوں۔

اپنے بزرگوں سے کبھی آنکھیں ملاتا نہیں ہوں  
مشکل سے مشکل وقت میں بھی  
خدا کے سوا کسی اور سے کچھ مانگتا نہیں ہوں  
کیونکہ میں بڑا عجیب آدمی ہوں۔



## نانی کا گھر

روٹھوں کو منانے کا بھی ایک وقت ہوا کرتا تھا  
رشتوں کو نبھانے کا بھی ایک وقت ہوا کرتا تھا  
کسی روتے کو ہنسانا، مجھے ابا نے سکھایا تھا  
جب روتا تھا کوئی گھر میں، تو ابا کو بتاتا تھا  
وہ وقت کہاں چلا گیا آج کل

مٹی کا ہی سہی، پر وہ گھر ہوا کرتا تھا  
حالانکہ بارش کا پانی چھپرے سے ٹپکا کرتا تھا  
ادھر سے ادھر کھاٹوں کو رات بھر کرنا پڑتا تھا  
پھر بھی شہری فلیٹوں سے وہ گھر اچھا ہوا کرتا تھا  
جانے وہ بوندیں کہاں کھو گئیں آج کل

گر میوں میں نانی کے گھر ہر سال جایا کرتا تھا  
آم، پیلچی اور امرود خوب مزے سے کھایا کرتا تھا  
ماما-مامی کی آنکھوں میں پیار بھی پایا کرتا تھا  
کبھی-کبھی تو نانا کی ڈانٹ بھی کھایا کرتا تھا  
جانے کہاں وہ گرمیاں چلی گئیں آج کل

سفر تو بیل گاڑی اور بگھی سے ہی ہوا کرتا تھا  
نہ نائر پھٹنے کی فکر، نہ حادثہ کا ڈر ہوا کرتا تھا  
وقت تو لگتا تھا، پر سفر اچھا ہی ہوا کرتا تھا  
نانی کے دینے ایک روپے کو دادی کے گھر تک سنبھال کر رکھتا تھا  
بولو کینی کہاں وہ سفر چلا گیا آج کل



## تھک جائے تو بھی امید مت چھوڑیے

زندگی ایک بھور ہے، سورج کا انتظار کیجیے  
تھک جائیں کبھی زندگی سے، تو بھی امید مت چھوڑیے  
اٹھا کر گرانا، گرا کر اٹھانا، "وہی" کر سکتا ہے  
وہی اگلا سویرا لا کر، آپکی قسمت کو جگا سکتا ہے

رات کے اندھیرے سے کس کو ڈر نہیں لگتا  
صبح ہوتے ہی کس کا حوصلہ نہیں بڑھتا  
ایک بیچارے پروانہ کی قسمت تو دیکھیں  
جسے رات میں آکر رات میں ہی جل جانا پڑتا ہے

ہر خوف کے آگے کوئی بے خوف بھی تو ہے  
ہر ظلم کے پیچھے کوئی ظالم ہی تو ہے  
یہ خوف اور ظلم کی دنیا، زیادہ نہیں ملتی  
ہمارے پرکھوں کی قربانی، مٹانے سے نہیں مٹی

آہ دل کی گہرائیوں سے، بلندی تک پہچانی چاہیے کبھی  
پھر ضرورت ہے ایک نئے گاندھی کی، ان کو جلدی آنا چاہیے



## دو طرح کی طوائف

کوٹھوں پر جسم فروشی کا دھندا، طوائفی کہلاتا ہے  
گھر میں یہی، لیو-ان-ریلیشن شپ کہلاتا ہے  
فرق ان دونوں میں بس اتنا سا ہی دیکھا جاتا ہے  
کوٹھوں کے سینکڑوں کا سودا، ہوٹلوں میں لاکھوں کا ہو جاتا ہے

کوٹھے پر دھندے کی عمر بس ۲۰-۲۵ ہوتی ہے  
ہوٹل میں یہی دھندا اس عمر میں شروع ہوتا ہے  
کوٹھے پر دھندا کرنے والی طوائف کہلاتی ہے  
اسی کا رتبہ ہوٹلوں میں مشہور شخصیت کا ہو جاتا ہے

کوٹھے کی طوائف کا بھی، چلتا ہے خوب دھندا  
پر کبھی عمر ہی میں یہ پڑ جاتا ہے مندا  
گلیوں کی طوائف کے ماں-باپ کو جانے نہ ہر کوئی  
پر پانچ ستارہ طوائف کے، ماں باپ کو جانے ہر کوئی

پانچ ستارہ طوائف بیٹی پر، ماں-باپ فخر کرتے ہیں  
گلیوں کی طوائف کی بیٹی سے، وہ منہ موڑ لیتے ہیں  
اچھا ہوا یہ کیسی، نہ جلیں گی اب بیٹیاں  
کر دیں گی فکر ساری ختم، اب یہی بیٹیاں



## گھر سے اکیلے نہ نکلا کرو

سنو! اب گھر سے اکیلے نہ نکلا کرو  
نہ رہوں جب میں، تو دروازے بھی بند رکھا کرو

سنا ہے دن میں بھی اب گھومتے ہیں، ہوس کے پرندے  
اب نہ رہا کوئی محافظ، بن گئے ہیں سب درندے

وہ سوچتے ہیں، تم کھلی تجوری ہو ان کے لئے  
آدھے کپڑوں میں رہتی، تم نعمت ہو ان کے لئے

چاہو اگر تم، ان سے اپنی حفاظت  
رکھو تم، کم باہر نکلنے کی حاجت

مجبوری میں نکلنا جو باہر ہو ضروری  
تو جسم کو پردہ ہی دے تمہیں حفاظت پوری

سنو! بات میری یہ کہتا ہے کیفی  
علاجوں سے بہتر حفاظت ہے بیٹی



## نیوز چینل کیا دکھا رہے ہیں

اچھائی ہی اچھائی کی خبر آج کل ہر نیوز چینل دکھا رہا ہے  
پر ہمیں تو اچھا کم بُرا زیادہ نظر آ رہا ہے

آ جاؤ میرے گاؤں ایک بار، گر سچائی دیکھنی ہو تو  
تو سیور کے پانی کو بھی، پینے کا پانی بتا رہا ہے

پیدا کیا کسانوں نے اناج، پسینہ بہا۔ بہا کر  
اس اناج کو تو، اڈانی۔ امبانی کا کیوں بتا رہا ہے

روز نیوز چینل پر ایک جاہل ملا اور پنڈت کو بٹھا کر  
انکی بحث سے عوام میں نفرت کا زہر کیوں پھیلا رہا ہے

بلٹ ٹرین سے کہیں بہتر تھی ہماری نیل گاڑی  
چلتی تھی آہستہ آہستہ پر محفوظ تھی ہر سواری

کینی کی ہے یہ درخواست، اور عوام کی بھی یہی ہے مرضی  
اچھے دنوں کو چھوڑ، مان لو ہمارے پُرانے دنوں کی ہی عرضی



## شکم کو کروسیج اتنا...!

شکم کو کروسیج اتنا کہ ہر دعوت سے پہلے  
میزباں، مہماں سے خود پوچھے، بتا تیری غذا کیا ہے

بلایا تم نے ہے اپنے گھر مجھے دعوت پر  
پھر فکر کیوں کرتے ہو کہ میری غذا کیا ہے؟

اگر تم نے بنایا ہے کھانا صرف دو آدمی کا  
فکر مت کرو، اللہ کر دیگا اسے چار آدمی کا

میں کھاتا ہوں خدا کی نعمتوں کا شکر ادا کرنے کو  
میں کرتا ہوں اگر ایسا، تو اس میں بُرا کیا ہے

خدا کا خوف کھاؤ، اور حال میزباں سے پوچھو  
کھانے کے بیچ میں کم سے کم ایک گھونٹ پانی تو پی لو

جنت سے نکالا تمکو، کھانے کی ہی غلطی پر کیفی  
پھر بھی تم پوچھتے ہو، اس میں بُرا کیا ہے



## بنا پیسہ کے عید بھی محرم

جیب میں پیسہ، ساتھ میں بچے، تو، ہر روز عید ہوتی ہے  
جیب خالی ہو تو عید بھی محرم لگتی ہے  
جیب تو جیب ہے بھلا اسکو کیا فرق پڑتا ہے  
جیب کے لیے تو عید اور محرم ایک سی ہوتی ہے

پڑوسی بھی تو آج کل کے کم نہیں ہیں  
سنوار کر اپنے بچوں کو کر بلا بھیج دیتے ہیں  
محرم کے غم کو بھی عید میں تبدیل کر دیتے ہیں  
بچے تو بچے ہیں، وہ محرم کو عید سمجھ لیتے ہیں

بڑوں کے چہروں پر جھلک جاتا ہے فرق عید اور محرم کا  
دعا مانگتے ہیں بڑے، محرم کے جلد گزر جانے کا  
کیٹی سب سے آسان ہے عید میں بچوں کو سمجھانا  
جیب خالی ہو اگر تو، عید کو محرم بتا دینا



## تم کو ہی خوش کیا

اپنی خوشی کو مار کر تم کو ہی خوش کیا  
تیری خوشی کی خاطر غلط کو صحیح کہا  
پیوند لگی قمیض، سواری تھی میری سائیکل  
تم کو دی نئی شرٹ اور موٹر سائیکل

رشتہ میں ہو ڈھاڑیں، پھر بھی میں رہوں گا تیرا بھائی  
کس کس کو تو بتائے گا آپس کی یہ لڑائی  
ساتھ لئے قرض کا تمہیں کبھی طعنہ نہیں دیا  
اللہ ہی جانتا ہے، وہ ہم نے کیسے ادا کیا

مانا کی میری زندگی، اب بے بس سی دکھ رہی  
پھر بھی کرم ہے اس مالک کا، بے فکر دکھ رہی  
جھوٹا غرور کب تک دکھاتے رہو گے تم  
حرام کی زیادہ کمائی پر اترتے رہو گے تم

ہم نے کھلائے تھے کس طرح تمنا کے پھول کو  
تم نے دیا کیا اس کا صلہ، دنیا سے پوچھ لو  
اب بھی ڈرو اس جہان سے، جانا جہاں ہے عنقریب  
سکندر بھی خالی ہاتھ گیا اور اس کے رقیب

اپنے کئے پر پھر بھی کیفی کو نہیں ملال  
تاریخ سے ہی اب کرتا ہے ایک سوال  
کیوں کر دکھائے تم نے حسین حسرتوں کے خواب  
دکھتے تو دور - دور نہیں جن کو کہوں میں احباب



## اُمید کا دامن نہ چھوڑنا

آسان ہے بہت ہی رشتوں کو توڑنا  
مشکل بہت ہوتا ہے، رشتوں کو جوڑنا  
اچھے دنوں میں مانگوں، تم سے تمہارا ساتھ  
مانگوں گا مشکلوں میں نہ تم سے تمہارا ہاتھ

لیلیٰ نے زخم جھیلے ہیں مجنوں کے پیار میں  
بن جائے زخم پھول، جو مل جائے پیار میں  
ہو جائے ہر خواہش میری اُس گھڑی تمام  
مل جائے پیار کا مجھے جس گھڑی پیغام

جینا نہیں آسان یہ سچ ہے، آج کل  
پھر بھی اُمید کا دامن، نہ چھوڑنا  
ہے شکرگزار کیفی، ہر حال میں تمہارا  
دامن وفا کا تم، آگے بھی نہ چھوڑنا



## تم جذبات میں کیوں ڈھل جاتے ہو؟

ہم جو کام گھنٹوں میں کرتے آئے ہیں  
تم وہ کام منٹوں میں کر دیتے ہو  
ہم میں اور تم میں فرق فقط اتنا ہوتا ہے  
ہم سوچ کر کرتے ہیں، اور تم جذبات میں کر جاتے ہو

ہم نے تو غربت اور جہالت میں رہ کر بھی  
دیش بھکتی کا جھنڈا کبھی جھکنے نہیں دیا اب تک  
اور تم فقط کسی بیوقوف کے بہکاوے میں آجاتے ہو  
تم نے یہ ہنر کہاں سے سیکھا ہے، میرے بھائی

کیوں نہ دیکھیں اور سبق لیں اپنے پڑوسی ملکوں سے  
کس طرح برباد ہو گئے اپنے جذبات اور سوچ سے  
آؤ بیٹھیں، باتیں کریں ان جذبات اور سوچ پر  
باہر نکلیں، گرا دیں دیواریں جذبات اور سوچ کی

ان جذبات سے دونوں کا ہی نقصان ہوتا ہے کیفی  
چلو، کچھ دن کے لئے ہی سہی صلح کر کے دیکھتے ہیں



## کشتیاں اب صحرا میں چلنے لگی ہیں

سنا ہے کشتیاں اب صحرا میں چلنے لگی ہیں  
چنگاریاں بھی اب سمندر سے اٹھنے لگی ہیں  
مندر میں نماز اور مسجد میں پوجا ہونے لگی ہے  
نشانیوں قیامت کی اب ظاہر ہونے لگی ہیں

کوئی گنگا نہا کر، کوئی کعبہ چھو کر بھی  
انسانیت کو سرے عام مٹانے میں لگا ہے  
نہ موجود ہیں اب شری رام اور نہ کوئی نبی  
پھر اندھے عقیدت مندوں کو کون سمجھانے میں لگا ہے؟

تک اور ٹوپی میں کیفی کچھ بھی نہیں رکھا  
اس سے دونوں کی روحیں شرم سار ہونے لگی ہیں  
جن کے ناموں کی قسمیں ہم روز کھاتے ہیں  
ان ناموں کی توہین اب روز ہونے لگی ہے



## موت بھی ٹل جاتی ہے

سنا ہے ہم نے، موت بھی ٹل جاتی ہے  
گر موت کو پہلے ماں مل جاتی ہے  
ماں سے بہتر محسن بھلا کون ہو سکتا ہے  
تبھی تو ماں کی لمبی عمر کی دعا کی جاتی ہے

سہتی رہتی ہے طعنہ بیگم اور بہو بن کر  
لٹاتی ہے پیار بھابھی، چاچی اور مامی بن کر  
نانی دادی میں بھی رہتی ہے گھر کی رونق بن کر  
تبھی تو ماں کی لمبی عمر کی دعا کی جاتی ہے

اترا کر ڈلار سے بہو گھر لاتی ہے  
بدلے میں دل کا ٹکڑا دے کر  
زندگی بھر صرف نوازتی ہی رہتی ہے  
تبھی تو ماں کی لمبی عمر کی دعا کی جاتی ہے

جنم کا قرض دیکر کبھی نہیں مانگتی بدلا  
چکانا ناممکن ہے اس قرض کا بدلا  
پھر بھی کبھی نہیں کہا میرے پاؤں تلے جٹ ہے  
تبھی تو ماں کی لمبی عمر کی دعا کی جاتی ہے

جٹ تو ہے اسکے پاؤں کے نیچے کینی  
ہم، آپ اور شریعت بھی یہی کہتی ہے  
پر وہ بچوں کے لیے پاؤں تلے جٹ لے کر  
"اولڈ ایج ہوم" میں رہ کر بھی ممنا کو ترستی ہے



## گناہوں کا حساب دینے میں لگا ہوں

گناہوں کا حساب اپنی زندگی میں ہی دینے لگا ہوں  
موت کیوں ہے زندگی سے بہتر، یہ اب اچھے سے سمجھنے لگا ہوں

کس کو ہے آج فرصت، کہ اپنوں سے ملنے جائے  
وقت کی اہمیت، میں بخوبی سمجھنے لگا ہوں

اب کی عید میں جب گیا تھا رشتہ داروں سے اپنے ملنے  
سویاں کی پلیٹ میں چھپی اپنی اہمیت، سمجھنے لگا ہوں

زمانہ وہی، انسان وہی، انسانیت کہاں چلی گئی  
اسکی وجہ، تاریخ کے پنوں میں ڈھونڈنے لگا ہوں

کیوں تکلیف دیں دوسروں کو اپنی غلطیاں تلاشنے کی  
اپنی غلطیوں کو تلاشنے میں خود ہی لگا ہوں

آج کیوں ہو گئے کمزور جو تھے کبھی طاقتور  
اس معمہ کو سلجھانے میں آج بھی لگا ہوں

صرف ماں کی دعاء کا اثر بچا ہے کیفی  
اسلئے زندگی کو اپنی بچانے میں لگا ہوں



## قرآن اور ہم

آج طاقوں سے ایک سال بعد اتارا گیا ہوں  
ریشمی جُزدان سے پھر باہر نکالا گیا ہوں  
پچھلے ایک سال میں تو کوئی مرا نہیں ہمارے یہاں  
اسلئے رمضان میں ہی پھر نکالا گیا ہوں

اب میں پورے رمضان انشاء اللہ پڑھا جاؤں گا  
آنکھوں اور منہ سے روز بوسہ بھی دیا جاؤں گا  
لوگوں کو میرا فیضان بھی بتایا جائے گا  
تراویح میں دس دن کی ہی سہی، پڑھا جاؤں گا

پھر ۲۹ کی عید کے چاند کا انتظار کیا جائے گا  
عید کے دن مجھے پھر طاق سے اتارا جائے گا  
عطر کی مزید خوشبو میں مجھ کو بسایا جائے گا  
پھر طاقوں میں سنبھال کر مجھے رکھ دیا جائے گا

افسوس! پھر مجھے کسی کی موت پر ہی اتارا جائے گا  
اور صرف سورہ یٰسین کو ہی زور سے پڑھا جائے گا  
اور جب مرنے والے کی روح پرواز کر جائے گی  
مجھے پھر ریشمی جُزدان میں رکھ دیا جائے گا

کوئی شک نہیں، لاکھوں حافظ قرآن موجود ہیں یہاں  
بنا سمجھے، دس منٹ میں ایک پارہ پڑھنے میں رواں  
یہ نہ سوچے کیسی، کہ آپ کیا سن رہے ہیں  
یہ کڑوی سچائی ہے، جسے ہم صدیوں سے ہضم کر رہے ہیں



## سر کو جھکا کر رکھئے

سر کو جھکا کر رکھئے برائی اور گھمنڈ دونوں مٹا دے گی  
آنکھوں کو رات کے اندھیرے میں رلائیے زندگی سنوار دے گی  
زبان پر قابو رکھئے تو نیم بھی کھجور کا مزہ دے گی  
امید کو ہمیشہ کم لگائیے زندگی کبھی دغا نہیں دے گی

وقت کا اہتمام کیجئے تو وقت بھی آپ کا احترام کرے گا  
گر کر خود سے اٹھئے تو چوٹ کا احساس بھی کم ہوگا  
دوسرے کی روٹی مت چھینئے ورنہ اپنی روٹی کے لالے پڑ سکتے ہیں  
دوسروں کی بددعا کے مقابل اپنی زبان پہ چھالے پڑ سکتے ہیں

گزارئیے زندگی مٹی کے مکان میں، جو ہمیشہ ٹھنڈ دیتی رہتی ہے  
پکے مکان میں ٹھنڈ کیلئے A.C. اور پنکھے کی ضرورت پڑتی ہے  
کسی طرح اگر ہو جائے دوستی اس مٹی سے کیفی  
کیونکہ مٹی سے بنا جسم مٹی میں ہی دفن ہوتا ہے



## وقت بدلنے میں اور وقت لگے گا

اندھیرے سے نکلنے میں ابھی وقت لگے گا  
وقت کو کٹنے میں ابھی وقت لگے گا  
ابھی ظلم کا اُبال دیکھا کہاں تم نے  
ٹھنڈے پانی کو تلاشنے میں ابھی وقت لگے گا

ایک جھوٹ کو چھپانے میں جو ۱۰۰ جھوٹ ہوتا ہے  
۱۰۰ جھوٹ بول دینے سے وہ سچ نہیں ہو جاتا  
جب مظلوم کی فریاد کو انصاف نہ ملے  
اس انصاف کو پانے میں بے شک وقت تو لگے گا

جو ہونٹ سل چکے ہیں کسی مجبوری میں  
انکی خاموشی کھلنے میں وقت تو لگے گا  
اے وقت! تو اتنا کیسے مجبور ہو گیا  
زخم کو بھرنے میں اتنا وقت تو لگے گا

صبر کا پیمانہ بھی مشکل سے ہے ملتا  
ظلم و ستم کا دور زیادہ نہیں ہے ٹکتا  
ظلم اور صبر کی جنگ اکثر ہی ہوتی ہے  
جیت صبر کی ہوتی ہے، مگر وقت تو ہے لگتا

جھانسنے میں آکر تم بھول گئے اپنے اچھے دن  
وہ دن واپس آنے میں ۶-۷ سال تو لگے گا  
کیٹی تم نہ رکؤ اور انکو بھی نہ روکو  
ورنہ دور کو بدلنے میں ۱۰۰ سال اور لگے گا



## تین آنے اور ایک جانے کا سلسلہ

میں مانتا ہوں کہ تارے نہیں چمکتے، جب تک اندھیرا نہیں ہوتا  
ایک بندا جب تک نہیں مرتا، تب تک تین بندوں کا جنم نہیں ہوتا  
دل کی آگ اگر دل میں ہی دبی رہے، تو باہر کچھ نہیں ہوتا  
نقصان صرف تمہارا ہی ہوتا ہے، انکا کچھ بھی نہیں ہوتا

مانا کہ ابھی ٹھنڈ ہے، دھند ہے اور بادل بھی لگا ہے  
پر اُجالے کی تلاش میں ہمیشہ لگے رہنا ہوگا  
دھند بادل کا موسم تو چند دنوں کا ہوتا ہے  
یہی سوچ کر اپنا ردِ عمل طے کرتے رہنا ہوگا

تم کتنی بھی مضبوط دیوار بنا لو اپنے گھر کی کیفی  
صرف ایک منٹ کا زلزلہ، گھر کو ملبہ بنا کر رہے گا  
نہ ہوا اب تک کوئی لکارنے والا قدرت کے فیصلوں کو  
جو کوشش کرے گا اس دنیا میں، وہ مٹ کر ہی رہے گا



## تڑپاتی ہے رات بھر۔۔۔

تڑپاتی ہے رات بھر، پر آتی نہیں ہے وہ  
تڑپتے جسم پر بھی ترس کھاتی نہیں ہے وہ  
دن کے اُجالے میں گر آجائے کبھی ترس  
خوابوں کی طرح آکر، پھر چلی جاتی ہے وہ

ہم نے کہا کبھی کبھار تو آجاؤ رات میں  
کہنے لگی نکلنے میں گھبراتی ہوں، اب رات میں  
بچے۔ جوان سب مجھ کو اب بلاتے ہیں رات میں  
پر میں نے تمکو بھی دیکھا ہے، جگتے ہی رات میں

میں نے کہا، بے وفاتم اب اتنی کیوں ہو گئی  
گزاراں جو راتیں ساتھ۔ ساتھ وہ کیسے بھول گئی  
اسنے کہا الزام بے وفائی کا ہم کو نہ دیجئے  
قدرت کے نظام سے اب آپ سمجھوتا کیجئے

بچپن سے جوانی تک ہم نے دیا ساتھ تمہارا  
کیوں بھول گئے وہ وقت جو ہم نے ساتھ گزارا  
فکروں میں گھرے ہو اگر تو، وہ بھی کرے کنارہ  
پھر ایک گولی ہی بنے اس کو بلانے کا سہارا

باقی کی بچی جو راتیں ہیں آپکی کیفی، وہ بولی  
تمہارے پاس آؤنگی، جب کھاؤ گے ایک گولی



## سوئی ہوئی ہے ماں

جب چلا تو پہلا قدم، خوشیوں سے روتی ہے تیری ماں  
گرتا کبھی جو تو زمیں پر، تیری چوٹ پر روتی ہے تیری ماں  
انتظار اسکو رہتا ہے کب تو پکارے گا کہہ کر ماں  
پھولے نہیں ساتی، جب پہلی بار تو بولتا ہے اس کو ماں

گیلے بستر پر سو کر بھی، دیتی تم کو آرام تیری ماں  
خود بھوکھے رہ کر بھی، پلاتی ہے دودھ تم کو تیری ماں  
لوری سنا سنا کر تم کو، سلاتی ہے تیری ماں  
راتوں کا بچا کھانا تو اکثر ہی کھاتی ہے تیری ماں

دولہے کی شکل میں دیکھ تم کو، کیوں روتی ہے تیری ماں  
دولہن کا ناز و نخرہ بھی سہتی ہے تیری ماں  
تیرے بچوں میں بھی انکو تیری جھلک دیتی ہے دکھائی  
اس لئے تیری ہر عمر کو بچپن سمجھتی ہے تیری ماں  
ممتا سے بھرا آنچل تو نے کیا اور کہیں ہے پایا  
خطرہ میں ڈال خود کو، تیرے جنم کو ہے اپنایا

پیروں تلے ہے جنت جس کے، پھر بھی نہیں گمان  
مشکل گھڑی میں بار - بار، آتی ہے ماں ہی کام  
لیتا رہا جو ماں کی دعائیں وہ خوش نصیب ہے  
بد نصیب ہے وہ جس سے خفا رہتی ہے اسکی ماں

خط پڑھ کر لگا کہ شاید بیمار ہے میری ماں  
میں سوچ کر جی رہا تھا کہ سوئی ہوئی ہے ماں  
ماں کی کمی کا احساس تب ہوا کیسے  
جب سننے کو یہ ملا کہ اب نہ رہی ماں



## مرہی گیا ہوگا ڈاکیہ

ایک دن یوں ہی آیا خیال مجھ کو  
تلاشوں دنیا میں، ایک ایماندار کو

لکھا پھر ایک خط میں نے محترم جناب کو  
پتہ تھا انکا محترم جناب ایماندار صاحب

اب تک نہ لوٹا ڈاکیہ، تلاش کر ان جناب کو  
شاید مرہی گیا ہوگا وہ تلاش کر اس ایماندار کو

جاری ہے ڈھونڈنا، ٹھکانا ایک ایماندار صاحب کا  
پر راز ہے ٹھکانا ڈھونڈنا، کہتا تھا بے چارہ ڈاکیہ

اب تو مذہب اور ذات پر ہوتی ہے گفتگو  
اس لئے محترم ایماندار، اب تک ہے لاپتہ

کیفی، جاری رہے گی یہ تلاش تا عمر  
جب تک مل نہ جائے منزل کا پتہ



## کردار کا سودا

ذکر فضول ہے کرنا وہاں انسان کا  
ہو رہا ہو جہاں سودا کردار کا  
غلام ہو گیا اب ہر شخص اس دربار کا  
آگیا ہے وقت پھر بیعت سے انکار کا  
کیسے تمہیں بتائیں قصہ اس دیدار کا  
جو ہم نے دیکھا ہے سرحد پار کا  
کھینچ چکی ہو جب لکیریں، اپنے ہی گھر میں  
تو کیوں دیتے ہیں ہر بات پر الزام اُس پار کا  
انسانیت شرمسار ہو رہی ہے دونوں طرف  
کہیں ہے نام "رام" کا تو کہیں "رحمان" کا  
میں چاہے ہندو، مسلم یا پھر عیسائی  
نام کیوں بدنام ہو کسی بھی سماج کا  
آنچ آئے نہ ہرگز کرسی پر اپنی کیفی  
بس سہارا لیتے رہو اب میڈیا دلال کا



## عجیب ہو گیا

غربی میں مالک کی قربت ملی  
جب امیری ملی تو بخیل ہو گیا  
جب اپنے پرانے میں بھی ذلیل ہو گیا  
پھر مالک کے کرم سے عجیب ہو گیا

پیاسہ رہا وہ سمندر کے بیچ میں  
پینے کے پانی کو بھی وہ ترس گیا  
مانگی دعا جب رو رو کر، اس سے کرم کی  
ہوئی ایسی بارش، کہ تر حلق ہو گیا

غلطی پر نادم جب وہ ہو گئے  
گناہ پچھلے تھے وہ سب معاف ہو گئے  
جستجو ہے کیفی کو ویسے ہی کرم کی  
اٹھائے کبھی نہ وہ ذلت دنیا میں شرم کی

آیا ہے اب دور ایسے چلن کا  
بڑھتا ہے آگے، جو دادا ہو دم کا  
پہلے تو ہوتی تھی طاقت اسی میں  
امیر جو ہوتا تھا، اپنے قلم کا



## پہلے دماغ کو سمجھاتا ہوں

مشکل سے مشکل وقت میں پہلے دماغ کو سمجھاتا ہوں  
پھر آکر دل پس مردہ کو تفصیل بتاتا ہوں

کہ میں کیوں زندہ رہنا چاہتا ہوں اس بے وفا دنیا کے لیے  
کچھ دن تو اور نبھا ساتھ میرا اس زمانے کے لیے

کیونکہ ان کا کچھ قرض باقی ہے اب بھی چکانے کے لیے  
اسلئے احسان مند ہوں مالک کا، مجھے اور زندہ رکھنے کے لیے

جب سنبھلتا ہے زلزلہ دل اور دماغ کا کچھ دیر کے لیے  
پھر کوئی نہ کوئی تیر نیا زخم جگر دے ہی جاتا ہے

جو بھی ملتے ہیں وہ کہتے ہیں یہ آزمائش ہے اللہ کی آپ پر  
یہ سمجھتے ہوئے بھی ہر کوئی اپنا ہاتھ بڑھانے سے کیوں کتراتا ہے

قرآن کہتا ہے آزمائش تو اللہ صرف نیک بندوں کی لیتا ہے  
تو کیا نیک بندوں کی فہرست میں واقعی تم بھی آگئے ہو کیفی



## وقت کا احترام کیا

ہم نے ہر وقت کا احترام کیا ہے  
اچھے برے ہر وقت کو سلام کیا ہے

روکھی روٹی کو بھی اب کھا لیتا ہوں  
ناز نخروں کو بھی سمجھا لیتا ہوں

A.C، نہ بھی ملے تو، نیند آ ہی جاتی ہے  
صرف پنکھوں کی ہوا سے کام چلا لیتا ہوں

مہنگائی کی مار سے کارگیرج میں لگا رکھی ہے  
پبلک بس میں بھی کار کا مزہ لے لیتا ہوں

ایک وقت تھا محفل کا نور سمجھا جاتا تھا  
آج اسی محفل میں بے نور سا خود کو بیٹھا پاتا ہوں

آسائشوں کی آرزو نہیں رہی کینی تم کو  
پھر کیوں تم سے وقت کو روٹھا ہوا پاتا ہوں



## برا وقت بھی کٹ جاتا ہے

بُرے سے بُرا وقت بھی خود کٹ ہی جاتا ہے  
بڑے سے بڑا زخم مرہم سے بھر ہی جاتا ہے

بھروسہ مت کرو کسی پر خدا کے سوا  
برے وقت میں تو سایہ بھی ساتھ چھوڑ جاتا ہے

وقت سے پریشان تم کیوں ہوتے ہو کیفی  
وقت کا پہیہ سب سے کہاں سنبھل پاتا ہے

نہیں تو...

چلو چل چلیں ! اس جہان سے ایک ساتھ  
اُس جہان میں چل کر اب آرام کریں  
دیکھ لیا اس جہان کے مگڑوں کو  
اُس جہان میں رہ کر زندگی اب آسان کریں



## محفل میں دل اپنا کھولتے نہیں

ہنستے ہوئے دیکھا ہے جنہیں، لوگوں نے دن میں  
غموں کی سیاہی وہ دھوتے ہیں، تنہائی کی شب میں

جیسے ہی لگی صبح نو کی آہٹ ان کو  
چلے جاتے ہیں بازار اپنے غموں کو بھلانے

غم میں بھی مسکراتے ہیں خوشی کی امید میں  
آنسو تو چھپاتے اس طرح جیسے موتی سیپ میں

چہرہ تو آئینہ ہے، صرف بولتا نہیں  
سچ کو ہمیشہ ترازو میں تولتا نہیں

چہرہ پر ان کے دکھ کتنی بھی اداسی  
محفل میں کیفی دل اپنا کبھی کھولتے نہیں



## عزت آج نیلام ہوگئی

برسوں میں بنی عزت آج نیلام ہو گئی  
کاغذ کے چند ٹکڑوں کی خاطر سرعام ہو گئی

امید تھی کہ وہ رشتے آج کسی کام آئیں گے  
جو برسوں سے ہم نے بنائی تھی، وہ بھی ناکام ہو گئی

آج پھر ہار گئی حقیقت، رسوا ہو گئے ہم  
دنیا کی یہ روایت اب بھی عام رہ گئی

اتنے بھی غافل نہ ہو دولتِ دنیا کے نشے میں  
یہ نہ کسی کی رہی ہے نہ کسی کی ہوگی کبھی

عزت اور ذلت کا اوپر سے ہے ناطہ  
بندے تو ہمیشہ خوش رہ، تجھے ہے خدا کا واسطہ

کیفی تھے اس امید میں کہ، ہوگا کوئی نازل فرشتہ  
کاغذ کے اس ٹکڑے کو سمجھائے گا رشتہ



## 20-40 اور ہسپتال

گزرے جو 20 سال متا کی چھاؤں میں  
نہ کھانے کی فکر تھی، نہ زندگی تھی قید  
نہ پیسوں کی چاہ تھی نہ نیند میں خلل  
وجہ تھی ہر معاملہ میں تھا ماں کا دخل

۴۰ سال سے ہیں اب بیوی کے سائے میں  
ہر وقت الجھے رہتے ہیں پیسوں کی ہائے میں  
بیوی سے نوک۔ جھونک، کھانے کی میز پر  
ہوتی صبح ہماری ہے پیسوں کی سوچ پر  
قبضہ ہوا جب دل پر زیادہ کمائی کا  
ہم بھول گئے فرق حرام اور حلال کا

کہتی بھٹک گئے پر سیدھا تھا راستہ  
جنت کے دیکھے خواب چٹنا دوزخ کا راستہ  
باقی کی زندگی پر نہ کرنا کوئی سوال  
کٹتی ہے ڈاکٹروں میں جاتے ہیں ہسپتال

ہر بات پر مشورہ اب دیتا ہے ڈاکٹر  
ہر نبض ہر دھڑکن کا حساب لیتا ہے ڈاکٹر  
کھانے پر بھی ہے بندھن اور فکر ہے نیند کی  
زندگی کی فکر ہے اور پیسوں کی بھی ہے فکر  
کہتی اداس ہے کہ کس سے کریں یہ ذکر



<https://youtu.be/TaLpUKHt604>



ایک نوجوان نے ہم سے پوچھا

کیا حال ہے چچا آپ کا !  
ہم نے کہا، کیا پوچھتے ہو بیٹا!

ہماری رفتار

گفتار

سماعت

بصارت

اور

بصیرت

سب جواب دے چکے ہیں!

بس...

بچا ہے صرف ایک ایمان

جو صرف سوال پوچھتا ہے، جواب نہیں دیتا

آندھی اور طوفان سے بھی نہیں ڈرتا

وہ جوان ہی رہتا ہے، بوڑھا نہیں ہوتا

اُس نے خودداری بھر دی ہے کوٹ کر ہم میں

اس لئے اب کسی کا خوف نہیں ہم میں

کیسی زمین چومتا ہے پانچ وقت، تو آسماں سے خود

جواب آتا ہے

دنیا والوں کو ایماندار کہاں بھاتا ہے

۱- رفتار (چلنا۔ پھرنا) ۲- گفتار (بول۔ چال)

۳- سماعت (سننا) ۴- بصارت (دیکھائی دینا)

۵- بصیرت (سمجھ)



## موت سے ڈر جاتا ہے دل

کون کہتا کہ میں موت سے ڈر جاتا ہوں  
یہ تو کبخت دل ہے جو ڈر جاتا ہے

کیا خوب بنائی مالک نے ایک عضو جسم میں  
جو بنا رکے دھڑکتا رہتا ہے، وہ ہے دل

نہ کبھی دیکھتا ہے امیری نہ دیکھتا ہے غریبی  
سب کے لیے برابر دھڑکتا ہے، وہ ہے دل

کرتا کبھی نہ یہ فرق بچے، جوان اور بوڑھے میں  
بس ایک فرمان سے فوراً بند ہو جاتا ہے، وہ ہے دل

جب کبھی بھی چند سیکنڈ کے لیے آرام چاہتا ہے، یہ دل  
تو ہم فوراً اسپتال جاتے ہیں ڈاکٹر سے مل

دوایا آپریشن سے اسے سمجھانے کی کوشش کرتے ہیں  
حکم وہ صرف مالک کا مانتا ہے، وہ ہے دل

جب کبھی واقعی دھڑکتا بند ہو جائے وہ جسم سے  
تو اسکا نام زندہ سے مردہ بنا دیتا ہے، وہ ہے دل

ڈر سے بچنا کہاں ممکن ہے، اس جہان میں کیسی  
ایک دن آخر، ڈر سے مر ہی جاتا ہے، یہ دل



## اکیلے ہی لڑنا ہے

خوش رہتا ہوں میں ہمیشہ زمانے کے لئے  
ورنہ درد بہت ہے دکھانے کے لئے

زمانے کی رنگینیوں سے روشن ہے میرا ظاہر  
تم کیا جانو، کتنے اندھیروں سے گھرا ہے باطن

کبھی تو میرے دل میں کسی نے جھانکا ہوتا  
کبھی تو کسی نے میرا ڈھارس بندھایا ہوتا

دنیا میں چاہے تم آئے ہو نہ اکیلے  
پر جانا پڑے گا یہاں سے تم کو بھی اکیلے

دنیا میں جو بھی بڑا کام ہوا ہے  
اکیلے ہی کسی نے سرانجام دیا ہے

اب تو طے کرنا ہے اکیلے ہی زندگی کا سفر تم کو  
چشم نم نہ کر کینفی بہت دور جانا ہے اکیلے تم کو



## بے ایمان سے باایمان ہو گیا

رغبتِ دنیا سے وہ اب بے زار ہو گیا  
بے ایمان تھا جو کبھی، وہ صاحبِ ایمان ہو گیا

چولا بدل - بدل کر وہ پریشان ہو گیا  
اپنوں کے لیے بھی وہ انجان ہو گیا

ایچھے جو پہلے دن تھے، اب وہ ہو گئے خراب  
لگتا ہے پھر دنیا میں کوئی، فرعون آ گیا

جینا ہوا حرام جو ہم سب کا آج کل  
آئی صدا کہیں سے شہاد آ گیا

کھا کھا کر سب کا مال، کی زندگی حرام  
ہو جائیں گے اب سب حلال وہ وقت آ گیا

مانگی دعائیں کرم کی مشکلوں میں جب  
ہوئی دعائیں قبول تو سب آسان ہو گیا

پتھر کا ہم نے جب دیا پھول سے جواب  
حیوانیت وہ چھوڑ کر انسان ہو گیا

اب الجھنیں **کیتی** کی سب ہو گئیں تمام  
جانے کا اس کا جب یہاں سے فرمان آ گیا



## مٹی کا مکان ہی بہتر ہے

کسی کا گھر سمندر ہے، کسی کا مکان شیشے کا  
خطرے میں دونوں پھر بھی مسکراتے ہیں

اسکی وجہ کیا ہے؟

ایک تم ہو، جو آئے اور پھر جلدی چلے گئے  
مٹی کے مکان میں رہ کر بھی رلاتے ہو

اسکی وجہ کیا ہے؟

دنیا بھی خوش ہوتی ہے، مسکراتے ہوئے کو دیکھ کر  
نم ہوتی نہیں انکی آنکھیں، تمہارے غموں کو دیکھ کر  
اگر سامنے ہو تو سب یاد کر لیں گے، ورنہ بھلا دیگے  
تم نہ ہو، تو تمہارے خواب کو بھی مٹی میں ملا دیگے

ہم نے پوچھا ہنسی سے، تم خوشی میں ہی کیوں آتی ہو  
جب غم ملے تو آ کر تسلی کیوں نہیں دے جاتی ہو  
جواب دونوں کا یکساں آیا، ”یہ ہم سے کیوں پوچھتے ہو“  
جس نے ہم دونوں کو بنایا، اس سے کیوں نہیں پوچھتے ہو

منجھدہار کو سمندر سے، شیشے کو پتھر سے ڈر لگتا ہے  
انکے دل میں ہمیشہ گھبراہٹ محسوس ہوتی ہے  
پھر بھی روز کا رہنا اسی گھر میں ہے، کیا کریں؟  
سوچتا ہے کینٹی، مٹی کا مکان ہی اب بہتر ہے



## میرے جذبات اور تمہارے خیالات

میرے جذبات تمہارے خیالات سے بہت الگ ہیں  
جیسے آنکھوں کا پانی، پانی سے بالکل الگ ہے  
میں جو دیکھ رہا ہوں تمہاری آنکھوں سے بہتا دریا  
یہ ہونٹوں کے بیاں، جذبات سے بالکل الگ ہے

یہ آنسو، جذبات کوئی نئی بات نہیں اس جہاں میں  
مگر تمہارا نظریہ دوسروں سے بالکل الگ ہے  
تم تو ہو ایک پروانہ، جس کی تقدیر میں جلنا ہی لکھا ہے  
میری دیوانگی تمہاری دیوانے پن سے بالکل الگ ہے

کاش! سمندر بھی نمکین چھوڑ بیٹھا ہو جاتا  
تمہارے خیالات بھی میرے جذبات سے مل جاتے  
شاید اللہ کو بھی ترس آجائے ہم پر کیفی  
تم جلنے سے بچ جاتے، میرے خیالات بدل جاتے



## ذرا سوچ کر بتائیں

جرم بھی تم ہی کرو اور فیصلہ بھی تم ہی سناؤ  
پھر عدلیہ کی کیا ضرورت، ذرا سوچ کر بتاؤ

نہ تم بولو نہ ہم بولیں، بس اسی پر ہی چھوڑ دیں  
تو مندر-مسجد کیا کریں، ذرا سوچ کر بتاؤ

تم سبزی کھانا چھوڑ دو، ہم گوشت کھانا چھوڑ دیں  
پھر کسان بے چارہ کہاں جائے، ذرا سوچ کر بتاؤ

نگاپن عورتوں میں نہ تمہارے یہاں ہے، نہ ہمارے یہاں  
تو گیتا اور قرآن کا کیا مطلب، ذرا سوچ کر بتائیں

ستون چاروں مٹتے دکھیں اور حکومت خاموش رہے  
تو عام آدمی کیا کرے، ذرا سوچ کر بتاؤ

بہت دن ہو چکے ان کو ظلم و ستم کرتے-کرتے کیفی  
کیا چھوڑ دیں انصاف، اللہ پر، ذرا سوچ کر بتائیں



## جینے کی خواہش اور پینے کا شوق

لطفِ دنیا سے ہوں میں معمور  
جس نے ڈال دیا میرے گلے میں طوق

جینے کی ہے خواہش ، پینے کا بھی ہے شوق  
دنیا کے ذوق میں جانے کا بھی نہیں رہتا خوف

تو ہی بتا اے ساقی کس کو چنوں میں آج  
پینے کے شوق کو یا جانے کے خوف کو

آساں نہیں ہے چننا، مے خانہ کی میز پر  
ہوش و حواس کھوکر، بوتل کی سیج پر

جینے کی ہے خواہش، پر جی کر کیا کریں گے ہم  
مر کر ملے گی راحت، کٹ جائیں گے سارے غم

اب کام سارا ہوتا ہے آن لائن پر  
پی کر پڑے ملیں گے ہم بھی کبھی ریل لائن پر

کیفی کی فکر تو ہے، اُس جہان کی شراب پر  
جس شراب سے رہیگا اسکا دامن تر بتر



## ہم شراب کی توہین سمجھتے

جسکی وجہ سے چھوڑا مے خانہ، تم اُسے شراب کہتے ہو  
چڑھا کر اُس کا ایک پیانہ، تم لڑھکتے گھر آتے ہو  
پھر بیوی کو ماں اور بائی کو بیوی سمجھ لیتے ہو  
ہم اسے مے کشی نہیں، شراب کی توہین سمجھتے ہیں

مے کشی گھر میں ہی کرتے تھے اُن دنوں، اے میرے دوست  
اب تو فیشن ہے باہر پیانا، اور نالے میں گر جانا  
صبح دوستوں کو بتانا، کہ رات زیادہ چڑھ گئی تھی  
ہم اسے مے کشی نہیں، شراب کی توہین سمجھتے ہیں

پوچھا جب شراب سے فرق، آج اور کل کے شرابی میں  
وہ بولی، شرم آتی ہے حضور سب کے سامنے بتانے میں  
میں نے بھی سوچا کیا فائدہ، بات کو آگے بڑھانے میں  
ہم اسے مے کشی نہیں، شراب کی توہین سمجھتے ہیں

پھر بولی، حالت دیکھیں زمانے کی، آکر مے خانہ میں  
داستان سنائیں گے شرابی، اپنے - اپنے فسانہ کی  
جھوٹ اور دکھاوے کے غموں کو شراب میں ڈبانے کی  
کئی ہم اسے مے کشی نہیں، شراب کی توہین سمجھتے ہیں



## سوچ سے پریشان ہے انسان

اپنی - اپنی سوچ سے پریشان ہے ہر انسان  
ظالم ہے دنیا، زندگی جینا نہیں ہے آسان  
زندگی اور موت ایک بار ہی ملتی ہے  
آج مجھے اور کل تمہیں بھی آ ہی جانی ہے

جھوٹ کو سچ بنانے کا ہنر تمہیں سکھایا کس نے  
خبردار، یہ ایک بڑے طوفان کی نشانی ہے  
سنجھل جاؤ کھوکھلے ارادوں کے فریب سے تم  
ورنہ سب کی جان مشکل میں پڑ جانی ہے

اتنا مغرور ہو کر رہنا اچھا نہیں کبھی  
خاکسار ہو کر رہنے میں کیا پریشانی ہے  
وہ کل تھے تم آج ہو، کل نہیں رہو گے  
یہ ہم نہیں کہتے، دنیا کی یہ ریت پُرانی ہے



## عزت کو دولت سے نہ تولا کرو

عزت کو ہرگز دولت سے نہ تولا کرو  
ذلت کا تماشہ بھی سرراہ مت کیا کرو  
عزت کا لباس کبھی دکھ جائے میلا  
کثرت سے **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** پڑھا کرو

عزت کی کوٹھری میں اجالا بھلے ہی کم دکھے  
ذلت کی چکاچوندھ سے بچ کر ہمیشہ رہا کرو  
دونوں میں مرضی صرف خدا کی ہی چلتی ہے  
تم بیکار کی غلط فہمیاں نہ پالا کرو

ماشاء اللہ صرف اپنوں کے لئے نہیں ہے  
**الْحَمْدُ لِلّٰهِ** سب کے لیے کہا کرو  
انشاء اللہ بھی ہم دونوں کے لئے ہے  
اور استغفر اللہ اپنے لئے پڑھا کرو

خالق کائنات نے جو بتایا ہے راستہ کھلی  
مومن ہو تم، اس پر ہی ہمیشہ عمل کیا کرو



## مجبوری سے بڑا دشمن نہیں دنیا میں

کمزور جسم میں ہر مرض اپنا گھر بنانا چاہتا ہے  
تنگدستی میں خاص کر اپنا بھی، ساتھ چھڑانا چاہتا ہے  
مجبوری میں بڑا ہی نہیں چھوٹا بھی آنکھ دکھانا چاہتا ہے  
اور چھوٹا تو تا عمر بڑوں پر اپنا حق جمانا چاہتا ہے

غریبوں کی ہر چیز کو، یہ امیر لوگ  
کم سے کم قیمت لگانا چاہتے ہیں  
غریب کی ہر شے ہو جاتی ہے حقیر  
امیروں کا کوڑا بھی بن جاتا ہے antique

آج مکاری ہی مکاری نظر آتی ہے ہر طرف  
اس ماحول میں آنے والی نسل کو کیسا بنانا چاہتے ہیں  
جہاں پناہ ملے بے ایمان عصمت دری کرنے والے سیاستدانوں کو  
کیسا معاشرہ اس ماحول میں ہم بنانا چاہتے ہیں

کہنے میں لگے برسوں، سارے جہاں سے اچھا ہندوستان ہمارا  
اسے ہم کیوں سارے جہاں میں بُرا بنانا چاہتے ہیں  
مجبوری سے بڑا دشمن، کینٹی نہیں آج کل دنیا میں کوئی  
مجبوری میں ہی سب مجبور سے فائدہ اٹھانا چاہتے ہیں



## قرض کیا چیز ہے؟

حرام کی کمائی کو کیا پتہ قرض کیا چیز ہے  
قرض لیجئے پھر یہ دیکھئے زندگی کیا چیز ہے  
قرض ہم نے کیا لیا ہو گئے ان کے غلام  
قرض دینے والے کو ہر وقت کرتے ہیں سلام  
قرض چاہے بینک کا ہو، یا لیجئے اپنوں سے آپ  
بے ضمانت آج تو کچھ بھی نہیں ملتا جناب  
کفن۔ دفن دینے کے لئے بھی قرض پر لیتے ہیں لوگ سود  
پہلے لیجئے قرض، پھر سمجھئے سود کیا چیز ہے  
قرض نے مجھ کو بتایا، کیسے ہوتا ہے انسان حقیر  
قرض گر سود خوروں سے لیا، تو کیسے ہوتا ہے ذلیل  
اے خدا! تو رحم کر، اب ہے میری یہی دعا  
قرض تو بس ایک بلا ہے، ہم سب کو اس سے بچا  
کیا بتائیں تم کو کیفی کیفیت مقروض کی  
ہے بہت مشکل سمجھنا، حالت کسی مجبور کی  
قرض لیجئے پھر یہ دیکھئے زندگی کیا چیز ہے



## پریشانی سے کیوں ڈر جاتے ہو

پل بھر کی پریشانی سے کیوں ڈر جاتے ہو  
اس شہر میں آکر کیوں ٹھہر جاتے ہو

کرنوں کو کبھی دیکھا ہے ٹھہرتے ہوئے  
پھر رات کے اندھیرے سے کیوں ڈر جاتے ہو

صبح ہوئی ہے تو شام بھی ہو ہی جائے گی  
پریشانی ہے تو، آسانی بھی ہو ہی جائے گی

رات کے سیاہ سایوں سے نا گھبراؤ تم  
صبح کی روشنی انکو نگل ہی جائے گی

عروج و زوال سے ہی چلتی ہے زندگانی  
ہو عروج و زوال ساکت، تو زندگی بھی ساکت

یہ سوچ تم کیوں نہیں رکھتے کیفی  
رات کے اندھیرے کو صبح روشن بنائے گی



## تم بس صبر کر لینا

غبارے میں ہوا بھر کر سیر کرنا مجھے بھی آتا ہے  
مچھلی نہیں ہوں، پھر بھی تیرنا مجھے اچھی طرح آتا ہے

ہیں دو پیر، پھر بھی ایک پیر پر چلنا ہی پڑتا ہے  
یہ دستورِ دنیا ہے، جو انسان سمجھ نہیں پاتا ہے  
سمندر میں نہانا سب کے بس کا کہاں ہو پاتا ہے  
پر گاؤں کے کنواں پر نہانا ہم سبھی کو آتا ہے

ہو جائے تنگدستی، اگر زندگی کے آخری پل میں  
تو ماضی کا خیال کر کے دل کو تسلی دے دینا  
تم تو میرے لیے وفا کی مثال جانی جاتی ہو  
مگر کیفی کی زندگی پر کبھی ترس مت کھانا لینا

میں مر جاؤں اگر تو، تم بس صبر ہی کر لینا  
لوگ پوچھیں گے میرے کارناموں کو، کسی کو کچھ مت بتا دینا  
ورنہ بے وفائی کا مجرم، لوگ تمہیں ہی ٹھہرا دیں گے  
کیونکہ کمزور کو آسان ہے، مجرم ٹھہرا دینا



## حسن اور محبت

حسن اور محبت دونوں میں، ہمیشہ تکرار رہتی ہے  
حسن ڈھل جائے پھر بھی، محبت برقرار رہتی ہے  
جوانی بھی کیا چیز ہے، آتی ہے چلی جاتی ہے  
پر انسان کی خواہش ہمیشہ جوان ہی رہتی ہے

پی کر نشہ تو اتر گیا، مگر سرور ابھی باقی ہے  
ذہن میں ابھی بھی گزرے دنوں کے فطور باقی ہیں  
وقت کیا ضرورت ہے تمہیں، میرے سرور سے الجھنے کی  
میرے زخموں پر کالا نمک اور مرچ چھڑکنے کی

چھوڑ دی ہے عادت میں نے، اب شراب پینے کی  
غموں سے آزاد ہوں، رات کو فکر نہیں سونے کی  
اب تو فکر رہتی ہے صرف انہی کو سلانے کی  
ورنہ پھر لت لگ جائے گی شراب پینے کی

اب آسان ہو گیا دونوں کا دن گزارنا کیفی  
کیونکہ اب حسن اور محبت کی صورت ہو گئی ایک جیسی



## سج دھج کر تیار بیٹھی ہوں

سج دھج کر دلہن کی طرح، تیار بیٹھی ہوں  
آکر مجھے سنبھالو، بانہار بیٹھی ہوں

بے حیائی سے بچنے کی، اب تم ہی آس ہو  
اسلئے تو تمہارے انتظار میں بیٹھی ہوں

عشق-محبت تو نہیں تقدیر میں میری  
بن جاؤ میری تقدیر، فریاد ہے میری

تمہاری تقدیر بدل دے، شاید تقدیر کو میری  
اسلئے تو تم سے اصرار کر رہی ہوں

یہ بھی سچ ہے، تم سے نہیں ملا ہے دھوکا کبھی مجھے  
پھر بھی دل کی بات کہنے سے کتراتے رہی ہوں میں

یہی بڑی بھول تھی جو ہو گئی مجھ سے  
اب کوششوں سے بھول وہ، بھلا رہی ہوں میں

کہتے ہیں دو دلوں کا میل ہی ہوتی ہے محبت  
پر دو دلوں کے پیار سے گھبرا رہی ہوں میں

برسوں پہلے دل تم کو دیا تھا کیٹی  
پر آج بن تمہارے ہی دن کاٹ رہی ہوں میں



## رہنے بھی دیجئے

کہنے کو کچھ بچا نہیں، رہنے بھی دیجئے  
دل بھول چُکا ہے جسے، اب مت گُریڈئے

چہرہ پر آپ کے لگی دکھنے، اب جھڑیاں  
میرے بڑھاپہ کا اب ذرا انتظار کیجئے  
ہم نے گزاری زندگی شیشے کو دیکھ کر  
کیسے کٹی ہے آپکی، یہ خود سے پوچھجئے

شکوہ شکایت کرنے کا بھی موقع نہیں ملا  
کس کی تھی کتنی غلطی کوئی سوچ نہ سکا  
فقط امی کو ہی اسکا الزام مت دیجئے  
غلطی تھی ہم دونوں ہی کی، بس مان لیجئے

سوچا تھا ساتھ ملکر گزاریں گے زندگی  
ماں-باپ کی لیں گے دعائیں، سواریں گے زندگی  
کس کی لگی نظر، یا کس کی تھی بددعاء  
نزدیک آتے - آتے کیٹی، کیوں ہو گئے جدا؟



## نیا ہندوستان

سورج کو مغرب سے نکالا جا رہا ہے  
چاند پر تیل کا چراغ جلایا جا رہا ہے  
چراغ میں تیل امبانی کا ڈالا جا رہا ہے  
سورج کو چکانے اڈانی کو بھیجا جا رہا ہے

قانون کو اب دولت و طاقت سے چلایا جا رہا ہے  
یہ ہم نہیں، منصفوں کی طرف سے کہا جا رہا ہے  
ملک میں ہندو اور مسلمان کو آپس میں لڑا کر  
نفرت کی سیاست سے ستا پر قبضہ کیا جا رہا ہے

وطن پرستی کے معنی کو بھی اب بدلا جا رہا ہے  
تبھی تو گاندھی کو زندہ کر کے گولیوں سے داغا جا رہا ہے  
کورونا کو مہنگائی اور بے روزگاری کی طرح ہلکے میں لیا جا رہا ہے  
اس لئے کورونا کا علاج بھی گوبر اور پیشاب میں تلاش جا رہا ہے

سرحد پر لگی آگ کو، میڈیا تو صرف جھڑپ بتا رہا ہے  
سرحد پر ہوئے شہیدوں کو ہی دلال میڈیا، مجرم بتا رہا ہے  
ہم ہی ہیں ملک کے بنیاد کی اینٹ اے کیفی  
لیکن، ہمیں ہی سب سے زیادہ ستایا جا رہا ہے



## الجھاد یا ملک کے قومی ترانوں میں

ہمیں تو الجھا دیا ملک کے قومی ترانوں میں  
اور خود لگ گئے ملک کا خزانہ اڑانے میں

بس اب یہی ہو رہا ہے آج کل کے زمانے میں  
ویسے اب بچا ہی کیا ہے ملک کے کارخانے میں

۷۵ برس کے بھائی چارے کی پکی بنیاد کو  
فقط چند سال لگے تمہیں اسے ہلانے میں

کون لگائے گا طاقت اب اس ملک کو بچانے میں  
تم کیا جانو، ہمیں ۷۵ برس لگے تھے اسے سجانے میں

ایک شور ایک ماتم ہے، ہم سب کے تازیانے میں  
ویسے تو تھا ہی کچھ نہیں، مفلس کے کاشانے میں

صرف چین کی نیند اور دو وقت کی روٹی ملتی تھی کھانے میں  
کیفی کچھ کر، ورنہ کچھ نہ بچ سکے گا اس آشیانے میں



## ایکشن کے کھیل

نظراتارنے والے کو بھی کسی کی نظر لگ جاتی ہے  
سمندری غوطہ خوروں کو کبھی ندی بھی نکل جاتی ہے  
پرانی کہاوت ہے، ”لوہا - لوہے کو کاٹ دیتا ہے“  
جیسے سرکار کا وزیر ہی سرکار کی پول کھول دیتا ہے

ذات-پات کا سب سے زیادہ، بول بالا ہے ایکشن میں  
ٹکٹ پانے کے لیے جناب سبھی حدوں کو پار کرنا ہے ایکشن میں

ترقی اور مہنگائی کی باتوں سے مطلب نہیں ایکشن میں  
ہندو-مسلم، ۲۰-۸۰ میچ کی پیچ، بنایا جاتا ہے ہر ایکشن میں

ایکشن میں شاید سرکار کو اپنے جانے کی بھنک لگ گئی ہے  
اس لئے مسلم - دلتوں کو بھی ایکشن میں ٹکٹ مل رہی ہے

لگتا ہے کورونا اپنا کھیل اس بار بھی دکھائیگا  
گھر پر رہیں گے ہم، ووٹ ہمارا وہ نکل جائیگا

پھر ایکشن کمیشن کے آگے کچھ لوگ ہار کی بین بجائینگے  
کچھ نتیجوں پر عدالت سے روک بھی ضرور لگوائینگے

پھر ہوگا وہی کھیل کینی، جو ہمیشہ سے ہوتا آیا ہے  
کھلاڑی نیتا پھر پانچ سال تک عوام کو اُلُو بنائینگے



## تربوزہ اور نارنگی میں جنگ

لگا کر آگ گھروں کو، وہ مدہوش ہو گیا  
کچھ دیر میں ہی پورا محلہ خانہ بدوش ہو گیا  
جب آیا ہوش اسکو تو پھر بیہوش ہو گیا  
کیونکہ اس میں اس کا گھر بھی زد میں آ گیا

محلہ والوں نے جب پوچھا اس وحشی سے، یہ کیسے ہو گیا  
اس نے بتایا، نارنگی نے کہا تھا تربوزہ کا گھر جلانے کو  
میں نے بھی حامی بھر لی تھی، تربوزہ کو آج سبق سکھانے کی  
پر پتہ نہیں رات میں، یہ گھر کیسے تربوزہ سے نارنگی ہو گیا

آج تو سیاست کا رنگ بھی کئی رنگوں میں بٹ گیا  
کسی نے اپنایا نارنگی، تو کسی نے ہرا چن لیا  
ذرا پتہ کریں، کیفی کے ملک کو کس کی لگی نظر  
ڈھونڈے کوئی پنڈت اور مولوی کو، جو اتارے بری نظر



## بول نہیں پاتا ہوں

زبان تو ہے، مگر بول نہیں پاتا ہوں  
آنکھیں بھی ہیں مگر کھول نہیں پاتا ہوں  
سامنے اگر دکھیں دو ٹکڑے مفاد کے  
تو معاشرے میں زہر بھی گھول دیتا ہوں  
کون کہتا ہے کہ یہ ہنر صرف انہی میں ہے  
میں بھی سورج کو کبھی بکھارنمن کر دیتا ہوں  
خون تو ہم دونوں کا ہی ہے لال  
جسم پر دونوں کے ہے ایک سی کھال  
مر کر جاؤ گے شمشان میں  
اور ہم جائیں گے قبرستان میں  
چاند۔ سورج، زمین اور آسمان بھی تو ہم سب کا ہے  
کیفی پھر آپس میں لڑ کر ملک کی مٹی کو کیوں لال کر دیتا ہوں  
امید ہے کیفی کو اپنے مالک کی رحمتوں سے ہو جائے گی  
ایک دن ملک کی مٹی پاک نفرتوں سے



## قلم میں بھی طاقت ہوا کرتی تھی

سنا تھا قلم میں بھی طاقت ہوا کرتی تھی  
اور انصاف پر سیاست نہیں ہوا کرتی تھی  
اسلئے تو فیصلے کے بعد نب توڑ دی جاتی تھی  
کیونکہ فیصلے پر زمانے کی رضامندی ہوا کرتی تھی

اب تو انسان مر بھی رہا ہو، تو عدلیہ کا کیا  
حیوان کھلے عام گھوم بھی رہا ہو، تو عدلیہ کا کیا  
انصاف کے ترازو میں تولنے کو ثبوت چاہیے  
ساتھ میں کالے کوٹ کا بڑے سے بڑا جھوٹ چاہیے

پھر برسوں تاریخ پر تاریخ آپکو مٹاتی جائے گی  
سنہری عمر جیل کی کوٹھری میں سڑائی جائے گی  
پھر ایک دن آپکو یہ بات بتائی جائے گی  
اور ثبوت کی تنگی کی بنا پر بری کی خبر سنائی جائے گی

گھر واپسی پر آپ یقیناً بکھر چکے ہوں گے  
بیوی بچوں سے لپٹ کر جب رو چکے ہوں گے  
یہ بھی پتہ چلے گا کہ ماں-باپ نہیں رہے  
دیتے دلا سے کیفی کو جو، وہ بھی چلے گئے



## آج کا مجنوں

میں ان کے پیار کو صدیوں سے جانتا ہوں  
اس پیار کی قیمت، اچھے سے پہچانتا ہوں  
ہم دونوں کو معلوم ہے، اپنے پیار کی حقیقت  
اس دور کا ہوں مجنوں، اپنی لیلیٰ کو جانتا ہوں

چھپائے اپنے آنسوؤں جذبات چھپانے کو  
ان سے ملے زہر کو آبِ حیات مانتا ہوں  
پڑھا۔ لکھا نہ میں ہوں، وہ بھی ہیں میرے جیسی  
پھر بھی وہ میرے، میں ان کے احساس جانتا ہوں

ایک دن بھٹک گئے ہم دونوں کہیں ویرانیوں میں  
خوشبو کی مہک سے پھر ان کے ساتھ ہو گیا ہوں  
دیکھا جو مجسمہ لندن کے میوزیم میں  
اُس دن سے اور زیادہ، پریشان ہو گیا ہوں

اللہ نے شاید کہتی، میرے پیار کو بلا لیا ہے  
اسلئے تو اب اور زیادہ بے قرار ہو گیا ہوں



## مسجد بنتی ہے مندر بنتا ہے

کہیں مسجد بنتی ہے، کہیں مندر بنتا ہے  
مندر۔ مسجد کے باہر ٹھنڈ سے انسان ٹھٹھرتا ہے  
مندر میں پرساد اور مزار پر تبرک چڑھتا ہے  
وہیں باہر انسان بھوک سے دم توڑتے دکھتا ہے

اونچے اونچے بُت بنتے ہیں، پر پل کم ہی بنتے دکھتا ہے  
ڈوبتی ہیں کشتیاں کیونکہ غریب ہی ان پر سفر کرتا ہے  
بہن۔ بیٹی کی کلائی بھلے ہی رہ جائے خالی  
پر بھگوان پر قیمتی زیور ضرور چڑھتا ہے

کوئی مذہبی کتاب ہمیں نفرت نہیں سکھاتی ہے  
پھر آپس میں آخر ہمیں کیوں اور کون لڑاتا ہے  
تم مسلم ہو یا پھر ہو ہندو، اس لڑائی میں  
کیفی اب دیکھ، سر دونوں کے ہی کٹتے دکھتا ہے



## وقت بدلتے دیکھا ہے

صحرا کو سمندر میں بھی ملتے دیکھا ہے  
سکندر کو قلندر بنتے بھی دیکھا ہے  
جس مندر اور مسجد میں ایشور اللہ ہوتے ہیں  
ہم نے وہاں بلڈوزر چلتے بھی دیکھا ہے

ہم سب جھوٹی آستھا پالتے ہیں اپنے دلوں میں  
ورنہ باڑھ میں مندر مسجد کیوں ڈوبتے دیکھا ہے  
شاید اب ایمان اٹھ چکا ہے ہمارا ایشور اللہ کے گھر سے  
اسی لئے مندر اور مسجد میں بھی اب تالا پڑتے دیکھا ہے

نہ مندر کو اذان سے ہے نفرت، نہ مسجد کو آرتی سے  
نہ ہندو چھوڑے رام کو اور نہ مسلم رحمان کو  
کتنی بھی نفرت تم پھیلاؤ معاشرہ میں کیفی  
پر یہ آپسی بھائی چارہ ختم نہیں ہو سکتا ہے



## یہ کیا ستم کر ڈالا

بنا کر انکو شہنشاہ، ہم نے یہ کیا ستم کر ڈالا  
دکھا کر اپنا گھر انکو، ہم نے یہ کیا کر ڈالا  
ہماری خاموشی کو وہ ہماری کمزوری سمجھ بیٹھے  
جو ناممکن تھا ہمارے لئے، اسے ممکن کر ڈالا

ہر ایک دیوار پر عرضی لگانا اب انکی عادت بن گئی ہے  
انکی عرضی کے مقابل ہماری دلیلیں بے معنی ہو گئی ہیں  
اب مظلوم آخر جائے تو کہاں جائے  
جب انصاف کرنا صرف ایک روایت ہو گئی ہے

ہم اپنا اتحاد فرقوں میں تقسیم کر رہے ہیں  
اور کچھ لوگ اس اختلاف کا فائدہ اٹھا رہے ہیں  
ہماری وراثت کو جڑ سے مٹانے میں لگے ہیں  
اور ہم تو کیٹی بس اپنی آسائشوں میں سمارہے ہیں



## ایک گولی کافی ہے

ایک گولی کافی ہے زندگی ختم کرنے کے لیے  
پر کھا کر اپنی زندگی کیوں برباد کریں

اتنا بزدل تو نہیں بنا یا ہمیں اس خدا نے  
جو آخرت میں بھی جہنم اختیار کریں

وہ کم عقل ہوتے ہیں، جو اٹھاتے ہیں ایسا قدم  
پہلے دل کو سمجھانے کا ارادہ تو کریں

ہر گھڑی ہر روز ایک نیا سویرا ہوتا ہے  
پھر کیوں جلدی میں یہ قدم اٹھایا کریں

تنگ نظر تنگ دل ہیں یہ دنیا والے  
لیں کسی کا ہم کیوں احسان اپنا تماشہ کریں

غم کا پیالا تو بس چھوٹا ہوتا ہے کیفی  
خوشی کی صراحی کا تو انتظار کریں



## تلخیاں

تازہ ہے سراب دل میں ویسے ہی آج بھی  
ماضی کا وہ خواب گراں تازہ ہے آج بھی

دل شکستہ میں وہ چند باب تازہ ہیں آج بھی  
موسم بہار ہو یا ہو موسم خزاں

دل طالب بہار گل آرزو تازہ ہے آج بھی  
عجب نہیں ہے کہ زبان کینٹی میں ہوئی ہے یہ تحریک

وجہ یہ ہے کہ نفرتوں کے اسباب تازہ ہیں آج بھی  
اور آگہی کے سبھی عذاب اب تازہ ہیں آج بھی

لہولہان دل ہے تازہ ہیں زخم احباب کے کینٹی  
ارض سن رسیدہ پر آرزو کے نشس و قمر تازہ ہیں آج بھی



## عظیم تر بد نصیبی ہے یا نہیں

حسرتیں پوری ہوں یا نہ ہوں، پران کی خواہش رکھنا کوئی گناہ تو نہیں  
نفرتوں کی آگ بجھے یا نہ بجھے، پر اتحاد کی کوشش کرنا کوئی گناہ تو نہیں  
چاہے موت ہی سامنے کھڑی ہو، پر زندگی کی حسرت رکھنا کوئی گناہ تو نہیں  
چاہے دو قدم بھی چلنا ہونا ممکن، پر دوڑنے کی چاہ رکھنا کوئی گناہ تو نہیں

اپنا پیٹ پوری طرح بھرا ہو اور پڑوسی بھوکا پڑا ہو، کیا یہ گناہ ہے یا نہیں  
حرام و حلال میں فرق نہیں سمجھتے، اور دیتے ہیں زکوٰۃ، کیا یہ گناہ ہے یا نہیں  
گناہوں سے بھرا دل ہو اور بیچ وقتہ پڑھتے نماز، کیا یہ گناہ ہے یا نہیں  
رمضان کے روزے ہوں صرف فاتحوں کی طرح، کیا یہ گناہ ہے یا نہیں

حج کریں صرف حاجی کہلانے کے لئے، یہ بھی کوئی گناہ ہے یا نہیں  
قربانی کے بکروں کی قیمتوں کا چرچہ، یہ بھی کوئی گناہ ہے یا نہیں  
اب کہاں محمد ﷺ کو پائیں گے ہدایت کے لئے کئی  
یہ عظیم تر بد نصیبی ہے یا نہیں؟



## خراج عقیدت

انکے لیے جنکے بنا، آج بھی۔۔۔

سونی۔ سونی ہیں آنکھیں، لمحہ۔ لمحہ ہیں صدیاں

رہتے تھے دو مزاج برسوں سے ساتھ میں  
ایک بچھڑ گیا، دوسرا جی رہا ہے یاس میں  
مزاج مختلف تھا، پر منزل تو ایک تھی  
نہ جانے کس کی نظر منزل پر لگ گئی

کیسے کروں یقین کہ بچھڑ گئے ہیں آپ  
ہے رہنمائی آپکی ہر پل ہی میرے ساتھ  
ڈالی تھی آپنے ہی، بنیاد اس مکان کی  
میری بد نصیبی ہے، رخصت ہوئے اچانک جو آپ

نظروں سے اوجھل ہو کر دل میں سما گئے ہیں  
خواہش ہے، ہم سبکی جو پوری کر دیں آپ  
خوابوں میں ملنے آئیں فرصت ہو، جب کبھی بھی  
کچھ لوگ دور رہ کر بھی رہتے ہمیشہ ساتھ

رہتا ہے انکا آخری مسکن ہمیشہ یاد  
سب کی دعائیں مغفرت ہیں ساتھ آپکے  
کینفی کو ہے امید قوی ہونگے آپ شاد  
ہوگا مقام آپکا بہشت بریں میں خاص



## پیش لفظ

راقم الحروف محمد تشکیل کیفی، محترم جناب شکیل اللہ خان صاحب (سابق پرنسپل، جامعہ ملیہ اسلامیہ، دہلی) کا بہت مشکور اور ممنون ہوں، جنہوں نے میرے خیالات کو نظمی جامہ پہنانے میں میری بہت مدد کی۔ انہوں نے میرے ذریعہ تیار کردہ (شاعری جامہ) ”غبارِ کیفی“ کو کاٹ چھانٹ کر اس لائق تو کر دیا کہ وہ پہننے کے قابل ہو جائے۔ پر اپنی مصروفیات کی وجہ سے انہوں نے جامہ میں بٹن اور کاج کی ناہم آہنگی کو نظر انداز کر دیا، یہی وجہ ہے کہ میرے ذریعہ تیار کردہ جامہ میں آپ کو گرتے کی آستینوں اور پانچامہ کے پانچوں میں کافی ناہم آہنگی ملے گی، میرے ذریعہ تیار کردہ جامہ پر غور نہ فرما کر اسکے اندر کے پیغام پر ضرور غور فرمائیں۔

آپ میرے اس تجربے سے یقیناً متفق ہوں گے کہ دور جدید میں ہر چیز اور ہر بات میں جدیدیت کو ہی صحیح تسلیم کیا جاتا ہے۔ مثلاً جدید آرٹ جو کم از کم میری سمجھ سے بالاتر ہے۔ اسی طرح جدید شاعری کو سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ اسے آپ قافیہ و بحر کی پابندیوں کی قید سے آزاد رکھیں۔ کلام اچھا یا برا، اس پر کچھ کہنا شاعر کا کام نہیں۔ وہ تو بک جاتا ہے کیا۔ کیا کچھ، بقول ایک شاعر ”میں کہتا ہوں بچے تم کرو“۔ میں تو جدیدیت کے معاملے میں اتنا جاہل ہوں کہ آجکل پھٹی ہوئی جینس تن زیب کر کے حسن میں جو اضافہ ہوتا ہے اسے بھی نہیں سمجھ پاتا۔

محمد تشکیل کیفی



## تمہید

شاعری ایک عظیم فن ہے جس سے فنکار اپنے فن کا اظہار کرتا ہے، اور سامعین کو مسحور کرتا ہے، یہ فن وہی بھی ہوتا ہے اور کسی بھی، فی الحقیقت یہ دونوں نعمت خداوندی ہیں۔ نظم میں انسان جو بات کہتا ہے وہی شاعری ہے، شاعری کی کئی قسمیں ہیں جیسے غزل، قصیدہ، مثنوی، رباعی اور مرثیہ وغیرہ، انہیں اقسام میں ایک قسم آزاد شاعری کی بھی ہے اور یہ بھی شاعری کی لازوال قسم ہے، جناب محمد تشکیل کہتی نے اسی آزاد نظم کو اپنایا اور حالت حاضرہ کو اپنی شاعری میں جگہ دی، الفاظ آسان، اور زبان عام بول چال کی ہے، جس سے قارئین کو کسی طرح کی پریشانی پڑھنے اور سمجھنے میں نہ ہو، اور شاعر کے مفہوم کو آسانی کے ساتھ سمجھ سکیں۔

جناب محمد تشکیل کہتی نے شاعری میں بات سے بات نکالی جیسے، میں پیسہ ہوں، ماں تو نے بڑا کیوں کیا، ابا کو بھلاؤں کیسے، الجھاد یا ملک کے قومی ترانوں میں، سیاست کارنگ اور لرزتی لڑکی وغیرہ۔ وغیرہ کو اپنا عنوان بنایا ہے۔ امید ہے کہ آئندہ بھی آپ اس سلسلہ کو جاری رکھیں گے اور ہم لوگ مستفید ہوتے رہیں گے، میں اس مجموعہ کلام کی اشاعت پر دل کی گہرائیوں سے مبارک باد دیتا ہوں اور مستقبل کے لیے دعا کرتا ہوں۔

ڈاکٹر سید اعجاز الدین پاپو لمرٹھی

صفحہ نمبر	فہرست عنوانات	نمبر شمار
۸۶	بیچا ایمان تب شان و شوکت آئی	۷۶
۸۷	سانس تھمنے کو ہے۔۔۔	۷۷
۸۸	ڈر ہے کہیں پک نہ جائے	۷۸
۸۹	بیٹی تو۔۔۔	۷۹
۹۰	چندر مکھی بنام سورج مکھی	۸۰
۹۱	آج اور کل	۸۱
۹۲	ساگرہ کی حقیقت	۸۲
۹۳	کہہ دو چلمن سے۔۔۔۔	۸۳
۹۴	نیولا اور سانپ کی سیاست	۸۴
۹۵	سنو! عورت کی فضیلت	۸۵
۹۶	عائشہ تم نے اچھا نہیں کیا	۸۶
۹۷	کوئی رو کے ذرا	۸۷
۹۸	غم کا ساتھی نہ تلاشیں	۸۸
۹۹	شاباش گوگل	۸۹
۱۰۰	بچپن سے بڑھاپے کا سفر	۹۰
۱۰۱	محبت بدنام ہوتی ہے	۹۱
۱۰۲	تاج پوشی گر بدلے بھی تو۔۔۔۔	۹۲
۱۰۳	کاغذ کو خدا کیوں سمجھتے ہیں	۹۳
۱۰۴	جزا اور سزا	۹۴
۱۰۵	کس نے زباں کو سی ڈالا	۹۵
۱۰۶	نام کے مسلمان	۹۶
۱۰۷	میرا جرم بس اتنا	۹۷
۱۰۸	دھیرے چل اے خوشی!	۹۸
۱۰۹	کیوں نہ قہر آجائے	۹۹
۱۱۰	آخری وقت	۱۰۰

صفحہ نمبر	فہرست عنوانات	نمبر شمار
۶۰	تم جذبات میں کیوں ڈھل جاتے ہو؟	۵۱
۶۱	امید کا دامن نہ چھوڑنا	۵۲
۶۲	تمکو ہی خوش کیا	۵۳
۶۳	بنا پیسہ کے عید بھی محرم	۵۴
۶۴	شکم کو کرو وسیع اتنا...۔۔۔	۵۵
۶۵	نیوز چینل کیا دکھا رہے ہیں	۵۶
۶۶	گھر سے اکیلے نہ نکلا کرو	۵۷
۶۷	دو طرح کی طوائف	۵۸
۶۸	تھک جائیے تو بھی امید مت چھوڑیے	۵۹
۶۹	نانی کا گھر	۶۰
۷۰	میں بڑا عجیب آدمی ہوں	۶۱
۷۱	تلاش ہے ایک کٹر ہندو اور مسلمان کی	۶۲
۷۲	تیری چال الگ، تیری ڈھال الگ	۶۳
۷۳	میں پیسہ ہوں	۶۴
۷۴	میں پیسہ ہوں	۶۵
۷۵	ہر حال میں شکر ادا کرنا	۶۶
۷۶	وقت سے سوال	۶۷
۷۷	چل سکو گے میرے ساتھ	۶۸
۷۸	نہ کمال کا نہ حسن و جمال کا	۶۹
۷۹	انسانیت حیثیت سے نہیں چلتی	۷۰
۸۰-۸۱	اپنا کو بھلاؤں کیسے؟	۷۱
۸۲	معیار زندگی	۷۲
۸۳	اب کے مسلمان اور تب کے مسلمان	۷۳
۸۴	بتادے مجھے	۷۴
۸۵	پڑوسی کا ایک لاکھ کا بکرا	۷۵

صفحہ نمبر	فہرست عنوانات	نمبر شمار
۳۵	ذرا سوچ کر بتائیں	۲۶
۳۶	میرے جذبات تمہارے خیالات	۲۷
۳۷	مٹی کا مکاں ہی بہتر ہے	۲۸
۳۸	بے ایمان تھا جو با ایمان ہو گیا	۲۹
۳۹	اکیلے ہی لڑنا ہے	۳۰
۴۰	موت سے ڈر جاتا ہے دل	۳۱
۴۱	بقائے زندگی	۳۲
۴۲	۲۰-۴۰ اور ہسپتال	۳۳
۴۳	عزت آج نیلام ہو گئی	۳۴
۴۴	محفل میں دل اپنا کھولتے نہیں	۳۵
۴۵	برا وقت بھی کٹ جاتا ہے	۳۶
۴۶	وقت کا احترام کیا	۳۷
۴۷	پہلے دماغ کو سمجھاتا ہوں	۳۸
۴۸	عجیب ہو گیا	۳۹
۴۹	کردار کا سودا	۴۰
۵۰	مر ہی گیا ہو گا ڈاکیہ	۴۱
۵۱	سوئی ہوئی ماں	۴۲
۵۲	تڑپاتی ہے رات بھر....	۴۳
۵۳	تین آنے اور ایک جانے کا سلسلہ	۴۴
۵۴	وقت کو بدلنے میں وقت لگے گا	۴۵
۵۵	سر کو جھکا کر رکھنیے	۴۶
۵۶	قرآن اور ہم	۴۷
۵۷	گناہوں کا حساب دینے میں لگا ہوں	۴۸
۵۸	موت بھی ٹل جاتی ہے	۴۹
۵۹	کشتیاں اب صحرا میں بننے لگی ہیں	۵۰

صفحہ نمبر	فہرست عنوانات	نمبر شمار
۱۰	خراب عقیدت	۱
۱۱	عظیم تر بد نصیبی ہے یا نہیں	۲
۱۲	تلخیاں	۳
۱۳	ایک گولی کافی ہے	۴
۱۴	یہ کیا تم کر ڈالا	۵
۱۵	وقت بدلتے دیکھا ہے	۶
۱۶	مسجد بنتی ہے مندر بنتا ہے	۷
۱۷	آج کا مجنوں	۸
۱۸	قلم میں بھی طاقت ہوا کرتی تھی	۹
۱۹	بول نہیں پاتا ہوں	۱۰
۲۰	تربوزہ اور نارنگی میں جنگ	۱۱
۲۱	ایکشن کے کھیل	۱۲
۲۲	الجھاد یا ملک کے قومی ترانوں میں	۱۳
۲۳	نیا ہندوستان	۱۴
۲۴	رہنے بھی دیجئے	۱۵
۲۵	سج دھج کرتا ریٹھی ہوں	۱۶
۲۶	حسن اور محبت	۱۷
۲۷	تم بس صبر کر لینا	۱۸
۲۸	پریشانی سے کیوں ڈر جاتے ہو	۱۹
۲۹	قرض کیا چیز ہے	۲۰
۳۰	مجبوری سے بڑا کھن نہیں دنیا میں	۲۱
۳۱	عزت کو دولت سے نہ تو لا کرو	۲۲
۳۲	سوچ سے پریشان ہے انسان	۲۳
۳۳	شراب کی تو پین	۲۴
۳۴	چینے کی خواہش اور پینے کا شوق	۲۵



کتاب کا نام: غبارِ کیفی

جملہ حقوق محفوظ ہیں، اس کتاب کا کوئی حصہ کسی بھی شکل میں یا کسی بھی ذریعہ، الیکٹرانک یا مکینیکل، بشمول فوٹو کاپی یا اس کے مرتب کرنے والے کی تحریری اجازت کے بغیر کسی معلوماتی ذخیرہ کو دوبارہ پیش نہیں کیا جاسکتا۔ کوئی بھی تنازعہ صرف دہلی کے دائرہ اختیار کے تحت ہوگا۔

برائے مہربانی اس نیک کام کا حصہ بنیں اور اپنے تبصرے بذریعہ ای میل یا ڈاک اس کے پبلشر تک پہنچائیں۔  
ملنے کے پتے - اقلیتی فاؤنڈیشن برائے ترقیات اور تحفظات

1- ای-33، پہلی منزل، گلی نمبر 06، ابو الفضل انکلیو 2، شاہین باغ، جامعہ نگر، نئی دہلی-110025 (بھارت)

2- ظہیر مینشن، مہوا، ویشالی، بہار

موبائل نمبر: 9711117162

ای میل: mdpf2007@gmail.com ویب سائٹ www.minoritydpf.org

صفحات: 220

سال: 2023

زبانیں: اردو اور ہندی

نوٹ:- اس جلد کی اشاعت، جس کی لاگت/1000 روپے ہے، لیکن کسی بھی رقم کا ہدیہ (عطیہ) خوش آئند ہوگا کیونکہ یہ مالی وسائل میں حصہ ڈالے گا۔ اقلیت کے کمزور طبقوں کی مختلف طریقوں سے مدد کرنا، خاص طور پر ان کے بچوں کے لیے اقلیتی فاؤنڈیشن برائے ترقیات اور تحفظات کے زیر اہتمام چلنے والے تعلیمی اداروں کے بنیادی ڈھانچے کو مزید موثر بنانے میں مدد کرے گا۔

پبلشر: ونڈرس انڈیا انٹرنیٹ پرائمرز

2074، دوسری منزل، نہر خان اسٹریٹ، دریا گنج، نئی دہلی (بھارت)

ای میل: wondersindiaenterprises@gmail.com

موبائل نمبر: 9811200621

شاعر کے بارے میں



محمد تشکیل کیفی

ولد

سید محمد ظہیر عالم مرحوم

تعلیمی لیاقت

ابھی بھی سیکھنے کے عمل میں ہیں۔

تاریخ پیدائش

اللہ کے فضل سے نصف صدی سے زیادہ زندہ رہنے والے

کے لیے غیر اہم سال

معروف زبانیں

ہندی، اردو، انگریزی اور عربی

رہائش

نئی دہلی (بھارت)

E-mail:

Kaifi4u2002@yahoo.co.in

www.kaifi.org

انسان دوست \* کاروباری \* سماجی کارکن \* شاعر \* کالم نگار

اپنے بھی خفا مجھ سے ہیں، بیگانے بھی ناخوش  
میں زہر ہلاہل کو کبھی کہہ نہ سکا قد  
علامہ اقبال



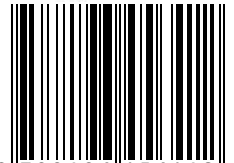
بیگانے نہ ہوں چاہیں، پر اپنے تو بہت ہیں خوش  
میں زہر ہلاہل کو جب کہنے لگا قد  
ان پیار کے دروں کو جو ہم نے مل کر کھولا  
نفرت کی آندھی نے ان سب کو کیا بند  
ایم ٹی کیفی

# غبارِ کیفی

یہ کتاب جزبات کا آئینہ ہے جس سے شاعر کو ذہنی سکون ملتا ہے۔  
ہوسکتا ہے ان اشعار کو پڑھنے کے بعد آپ کو بھی ایسا ہی محسوس ہو۔



محمد تشکیل کیفی



91788196456412